RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 अप्रैल 2024
डाक प्रेषण तिथि : 29 अप्रैल-01 मई 2024
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62 अंक : 02
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 76
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

संघ शिखर सदस्य

श्री शान्तिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

श्री रिद्धुकरण जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचन्दलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 105289

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128972

स्व. श्री मूलचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचन्द जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128966

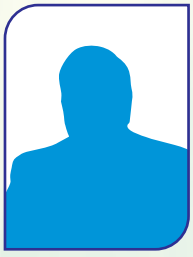

गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्री ललितकुमारजी लोढ़ा
मदुरान्तकम्
MID No. 172830

श्री निर्मलकुमारजी भूरा
करीमगंज
MID No. 147618

श्री राजकुमारजी बच्छावत
नेपाल
MID No. 195443

स्व. श्री केशरीमलजी देशलहरा
दुर्ग
MID No. 142535

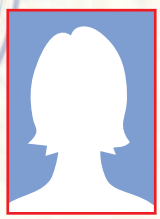
स्व. श्रीमती सुभद्रादेवी पगारिया
सूरत

श्री राजीवजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160544

श्री पुखराजजी मुकिम
जयपुर
MID No. 182624

श्री खूबचन्दजी पारख
राजनांदगाँव
MID No. 141590

श्री विनयजी अब्भाणी
चित्तौड़गढ़
MID No. 107376

श्री शांतिलालजी डागा
कोलकाता
MID No. 188697

श्री प्रकाशचंदजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160559

श्री उत्तमचंदजी रांका
जयपुर
MID No. 111353

श्री रावतमलजी संचेती
गंगाशहर
MID No. 123813

श्री सोहनलालजी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. 135732

श्री अनिलजी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. 127002

श्री जयचंदलालजी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. 114715

श्री शांतिलालजी बच्छावत
सूरत
MID No. 194606

श्री राजमलजी पंवार
कानवन
MID No. 113094

श्रीमती संतोषदेवी मोदी
भिलाई
MID No. 135692

श्री कमलजी बैद
मुंबई
MID No. 141022

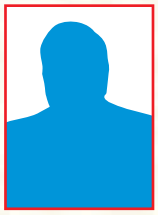
श्री विजयजी (कमलादेवी)
गोलछा–बीकानेर
MID No. 127729

श्रीमती कमला उत्तमजी कोठारी
बेंगलुरु
MID No. 112429

चतुर्थ चरण

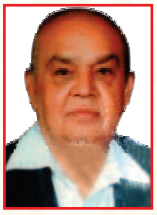
श्री प्रकाशजी कांकरिया
इन्दौर
MID No. 194512

स्व. श्रीमती सरोजदेवी
सुराणा–बेरला
MID No. 195647

श्री बसंतलालजी कटारिया
रायपुर
MID No. 137280

श्री विजयकुमारजी टंच
बदनावर
MID No. 113207

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री अनिलकुमार जी गोलछा-सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमला देवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुंबई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी-उदयपुर * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंद जी व्होरा-बदनावर * श्री सोहनलाल जी रांका-ब्यावर * श्रीमती मधुलता जी लोढ़ा-डोंगरगाँव * श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्रीमती ज्ञानकँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर

द्वितीय चरण * श्री तेज कुमार जी तातेड़-इंदौर * श्री पूनमचंद जी भूरा-भीलवाड़ा * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्रीमती इंद्रा बाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव * श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा * श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भंडारी-जावरा * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलाल जी देशलहरा-गुंडरदेही * श्रीमती मनोरमा देवी बैद-रायपुर * श्रीमती सुंदर बाई कोटड़िया-कोंडागाँव * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री प्रकाशचंद्र जी चपलोत-निम्बाहेड़ा

प्रथम चरण * स्व. श्रीमती सूरजा देवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री उदयराज जी पारख-रायपुर * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री भागचंद जी सिंघी-जोधपुर * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम * श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता * श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी * श्री विनोद जी मिन्नी-कोलकाता * श्री अरुण जी मालू-कोलकाता * श्रीमती गुलाब देवी भंसाली-गंगाशहर * श्रीमती सुधा जी भंसाली-कोलकाता * गुप्त-बंगईगाँव

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव 2024 चित्तौड़गढ़ में

महत्तम महोत्सव

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, संयम के सजग प्रहरी, परमागम रहस्यज्ञाता, व्यसनमुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की असीम अनुकंपा से **10 मई 2024** को अक्षय तृतीया पारणा का प्रसंग **चित्तौड़गढ़ संघ** को प्राप्त हुआ है।

सभी स्थानीय संघों एवं वर्षीतप आराधक श्रावक-श्राविकाओं से करबद्ध निवेदन है कि इस पावन अवसर पर पधारकर वर्षीतप पारणा का लाभ लेवें। इस शुभ अवसर पर पधारने से आपको आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर सहित चारित्रात्माओं के दर्शन, वंदन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ प्राप्त होना संभावित है। आपके आगमन व प्रस्थान की पूर्व सूचना नीचे दिए गए संपर्क सूत्र पर प्रदान कर व्यवस्था में सहयोग प्रदान करें।

:: संपर्क सूत्र ::
9414109331
9414110955
9413046409
9829244305

निवेदक
श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ
श्री साधुमार्गी जैन समता युवा संघ संघ
श्री साधुमार्गी जैन समता महिला मंडल
श्री साधुमार्गी जैन समता बहू मंडल
चित्तौड़गढ़ (राज.)

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

आचार्य श्री रामेश पावन वर्षावास प्रसंग

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, संयम के सजग प्रहरी, परमागम रहस्यज्ञाता,
व्यसनमुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री रामलाल जी म.सा.

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर
श्री राजेश मुनि जी म.सा

आदि ठाणा का पावन वर्षावास – 2024 का प्रसंग रखे जाने वाले समस्त आगारों सहित भीलवाड़ा संघ को प्राप्त हुआ है ।

सभी सम्मानित श्रावक–श्राविकाओं व संघों से विनती है कि इस पावन अवसर पर संघ एवं परिवार सहित पधारकर धार्मिकता तथा आध्यात्मिकता की भव्यता से अपने जीवन को आत्मकल्याण की ओर अग्रसर करें।

स्थानक - श्री महावीर सेवा समिति, अरिहंत भवन, आर.के. कॉलोनी, भीलवाड़ा
प्रवचन स्थल - रा.प्रा.वि. धांधोलाई, आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा

संयोजक	कार्यालय प्रमुख	चौका व्यवस्था	आवास-निवास व्यवस्था
सुरेंद्र कुमार संखलेचा	पूनमचंद भूरा	बसंत सेठिया	अमित बुच्चा • धीरज भूरा
94141-15394	शंभुलाल सुराणा	94141-15624	95713-90108
	95719-90108	मुकेश पगारिया	
		94605-76530	

निवेदक

श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, भीलवाड़ा

*** समता युवा संघ * समता महिला मंडल * समता बहू मंडल ***

आगम व तत्त्व संबंधी पुस्तकें

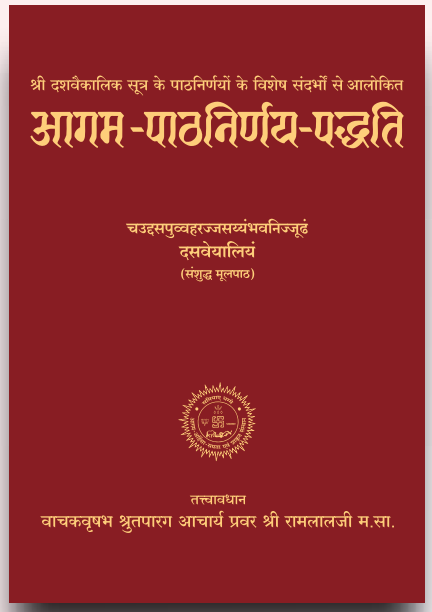

पुस्तक का नाम : **आगम-पाठनिर्णय-पद्धति**
तत्त्वावधान : **वाचकवृषभ श्रुतपारग आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा.**
प्रकाशक : **आगम-अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान**
मूल्य : **₹2,100/-**
विषय : आगमों के पाठ निर्णय हेतु अपने आप में अनूठी यह पुस्तक आगम के पाठ निर्णय/संशोधन/शोध के क्षेत्र में काम करने वालों के लिए अति उपयोगी सिद्ध होगी।

श्रीमद् दशवैकालिक के संशुद्ध मूल पाठ सहित प्रस्तुत पुस्तक में आगमादि के शुद्ध पाठ का निर्णय किस तरह किया जाए, इसका उदाहरण सहित विस्तृत वर्णन है।

इस कार्य में सहायक हस्तगत ताड़पत्रीय प्रतियाँ (रंगीन चित्र सहित) व अन्य ग्रंथों का भी क्रमवार सुव्यवस्थित उल्लेख किया गया है।

पुस्तक का नाम : **श्रीदशवैकालिकसूत्रम्**
(मूल भावार्थ और विशेष टिप्पण सहित)
तत्त्वावधान : **वाचकवृषभ श्रुतपारग आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा.**
प्रकाशक : **आगम-अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान**
मूल्य : **₹45/-**
विषय : आगम के शब्दादि का अर्थ करना मात्र अनुवाद नहीं है, बल्कि आगम के आशय को हृदयंगम करके कहाँ, किस शब्द का क्या अर्थ अपेक्षित है आदि अनेक बिंदुओं पर चिंतन, अन्वेषण के बाद भावार्थ को प्रमुखता देती हुई यह पुस्तक हमारे सामने हैं जिसमें साधु की निर्दोष भिक्षावृत्ति की जो भ्रमर से तुलना है वह निःसंकोच श्रावकगण व सुपात्र दान की भावना रखने वालों के लिए एक अमूल्य उपहार साबित होगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

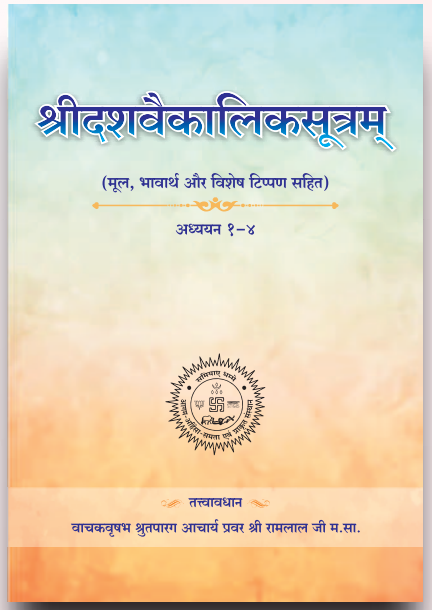

आगम व तत्त्व संबंधी पुस्तकें

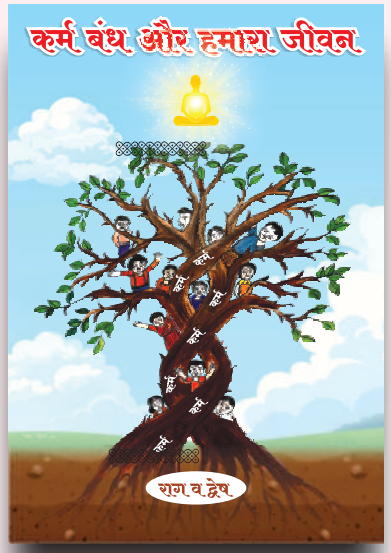

पुस्तक का नाम : **कर्म बंध और हमारा जीवन**
तत्त्वावधान : **जिनशासन के अद्वितीय सारथी आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा.**
प्रकाशक : **आगम-अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान**
मूल्य : ₹100/-
विषय : कर्म बंध के कारणों को जानने के साथ-साथ उनसे बचने के सरल उपाय, जो दैनिक जीवन में अति उपयोगी सिद्ध होंगे। रंगीन, सचित्र प्रस्तुति के साथ यह पुस्तक हर आयु वर्ग के लिए अवश्य पठनीय है।

पुस्तक का नाम : **कर्म प्रज्ञप्ति-1, प्रवेश ग्रंथ खंड 1 : अध्याय 1-4**
तत्त्वावधान : **सुपरिज्ञातकर्मा, श्रुतपारग आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा.**
प्रकाशक : **आगम-अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान**
मूल्य : ₹100/-
विषय : कर्म क्या है? इस सामान्य से, किंतु अति जिज्ञासु प्रश्न के समाधान सहित **8 कर्मों का परिचय**, **कर्म बंध के 85 कारणों** तथा **8 कर्मों की 148 प्रकृतियों** का सुविस्तृत व प्रामाणिक विवेचन।

अन्य पुस्तकें

आगम परिचय, जैन सिद्धांत बत्तीसी – हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, आगम स्तोक मंजूषा भाग 1 से 8 (श्रीमत् प्रज्ञापना सूत्र एवं श्रीमद् भगवती सूत्र के थोकड़े) आदि पुस्तकें

दीक्षा महोत्सव निवेदन

शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में **09 जून 2024** को **बेगूँ, जिला चित्तौड़गढ़** की पावन धरा भव्य जैन भागवती दीक्षा प्रसंग होना संभावित है। सभी सम्मानित श्रावक-श्राविकाओं एवं स्थानीय संघों से करबद्ध निवेदन है कि इस अवसर पर सपरिवार एवं ससंघ पधारकर दीक्षा साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त कर कर्मनिर्जरा का लाभ लेवें। इस पावन अवसर पर पधारने से आपको अत्र विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का लाभ सहज ही प्राप्त हो सकेगा।

वरदीचंद कोठारी	नेमीचंद आंचलिया	दिनेश आंचलिया
9414733769	7023400590	9460163421

धीरज नाहर	आवास-निवास व्यवस्था	शैलेंद्र आंचलिया
9414730547		9001859020

निवेदक

* श्री साधुमार्गी जैन संघ
* समता युवा संघ

बेगूँ
चित्तौड़गढ़ (राज.)

* समता महिला मंडल
* समता बहू मंडल

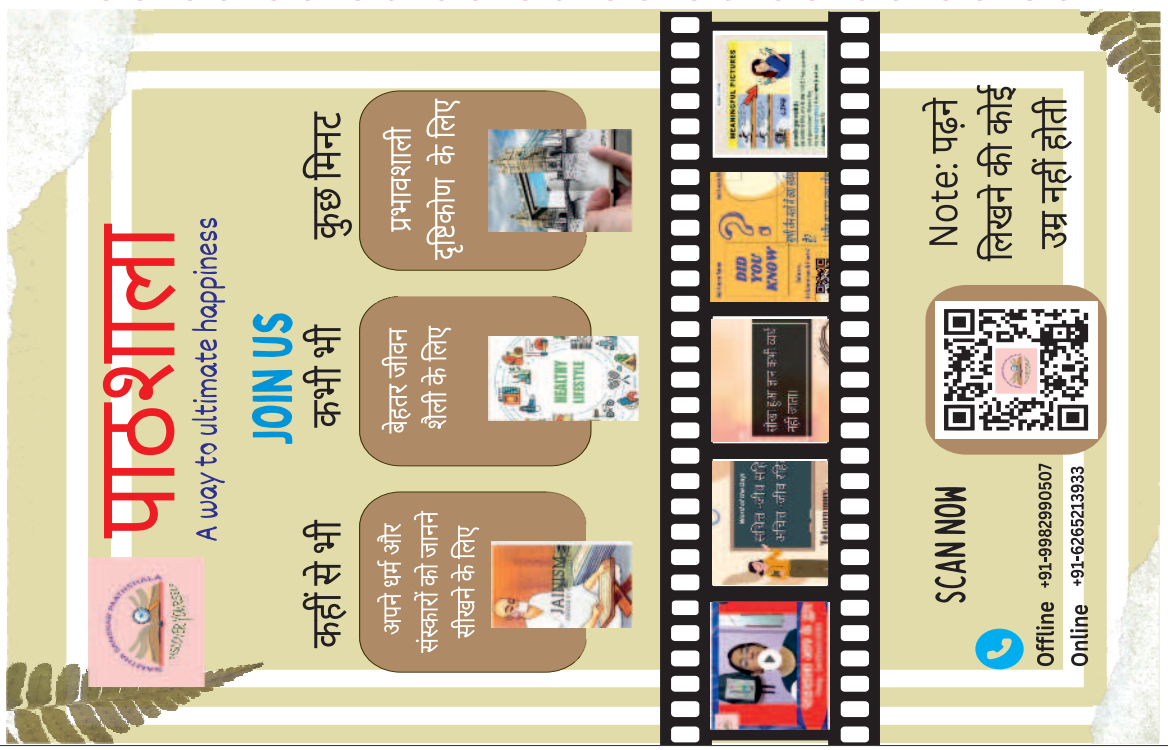

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह.....10
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र..... 14
श्रमणोपासक हेडलाइंस..... 16
गुरुचरण विहार.....17
विविध समाचार..... 32
विविध भेंट मार्फत..... 38
विनम्र श्रद्धांजलि..... 51
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति..... 53
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ..... 60
विहार सूची..... 62

शोभा

सुविचार

साधुओं की शोभा होती, त्याग व तपस्या मांही।
श्रावकों की शोभा प्रेम-दान में बताई है।।
अंत्यजों की शोभा सेवा, धर्म में सुनो रे भाई।
ब्राह्मणों की शोभा ब्रह्मज्ञान में गिनाई है।।
साख्र होवे पूरी-पूरी, बनियों की शोभा तब।
क्षत्रियों की शोभा पर-जान जो बचाई है।।
निज के कर्तव्य छोड़, पर करतब करे।
मुनि गौतम गरिमा, उनकी नसाई है।।

साभार– वीर कहे गौतम से

चिंतन

अननुभूत सुख : अव्याबाध

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

अव्याबाध सुख = जिस सुख में निरंतरता बनी रहती है, जिसमें कोई व्यवधान नहीं आता। ऐसा सुख सिद्ध भगवंतों का माना गया है। ऐसे सुख का अनुभव स्वल्प भी जिसने नहीं किया, वह सुख के प्रति कैसे अनुरक्त हो, यह एक प्रश्न उभरता है। वस्तुतः संसारी जीवों ने उस सुख का स्वाद चखा ही नहीं, जाना ही नहीं तो उसके भाव अव्याबाध सुख के लिए कैसे बनें? अतींद्रिय विषय की, अनुभूत विषय के प्रति भी किसी के द्वारा कहे जाने पर, बताए जाने पर जिज्ञासा जाग्रत हो जाती है। उदाहरण के तौर पर बही खातों में पूर्वजों द्वारा कुछ रकम जमीन में गड़े होने का संकेत हो तो उसे पाने के लिए व्यक्ति उद्यत होता है या नहीं? होता है। किसी फिल्म के विषय में उसके विज्ञापन को देखकर उसे देखने की चाह जगती है या नहीं? जगती है। वैसे ही तीर्थंकर भगवंतों द्वारा बताए गए अव्याबाध सुख के विषय में भी जीव की प्रवृत्ति होती है। जो तीर्थंकर भगवंतों पर विश्वास रखता है, वह निश्चित तौर पर अव्याबाध सुख पर भी विश्वास करता है। उसे पाने के तरीकों को भी जानने का प्रयत्न करता है।

वर्तमान में कहूँ या संसारी जीव के लिए कहूँ, पाँच इंद्रियों के विषयों में जब तक वह लीन रहता है, तब तक उसे अव्याबाध सुख का अनुभव नहीं हो सकता। साध्वी मृगावती भगवान महावीर में लीन हो गई, उस समय वह अन्य विषयों की तरफ से प्रतिमुख हो गई थी। वह थी व भगवान थे। वह भगवान की भगवत्ता का रसास्वादन कर रही थी। वह आनंद अपूर्व था, अद्भुत था। वैसा आनंद उसे पूर्व में प्राप्त नहीं हुआ था। अव्याबाध सुख की झलक ध्यान के क्षणों में व्यक्ति कभी भी पा सकता है। कदाचित् पाए या न पाए, पर तीर्थंकरों की वाणी से तो वह उस पर श्रद्धा करता ही है। प्रयत्न करने पर वह उसे पा भी सकेगा, पर उसके लिए बाह्य रस, जो पौद्गलिक है, उससे उपरत होना होगा। जब तक उसमें मन रमा रहेगा तब तक अव्याबाध सुख का स्वाद मिलना कठिन है।

फाल्गुन शुक्ल 5, रविवार, 13.03.2016

साभार- आरोह

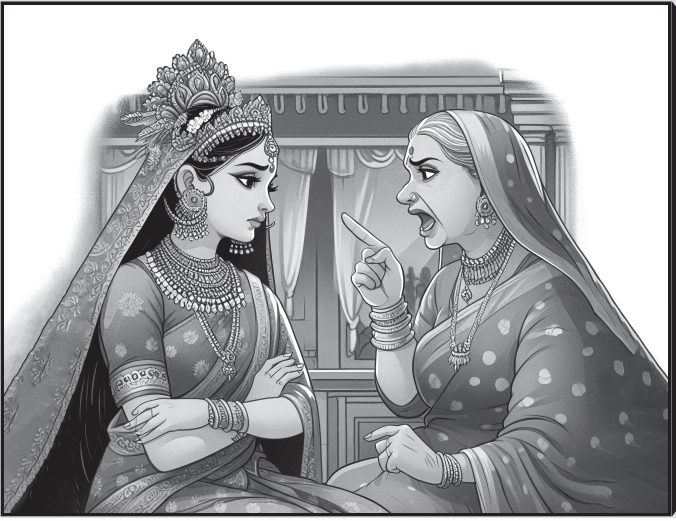

धर्मदेशना

रुक्मिणी विवाह

कुण्डिनपुर में

29-30 मार्च 2024 अंक से आगे....

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

रुक्मिणी- ''माता विवाह का अर्थ है अपने आपको किसी को समर्पित करना। मैं अपने आपको श्रीकृष्ण को समर्पित कर चुकी हूँ और जब मैं श्रीकृष्ण को समर्पित हो चुकी हूँ, तब आपका कहना मानकर अपने आपको किसी दूसरे को समर्पित करना दूसरा विवाह नहीं तो और क्या है?''

माता- ''तेरा.... और कृष्ण को समर्पण? बेटी कुछ विचार तो कर कि कहाँ तू और कहाँ कृष्ण? तू क्षत्रिय कन्या है और उसके तो माता-पिता का भी पता नहीं है। तू सुंदरी है, वह कुरूप है। तू गोरी है, वह काला है। तेरा और उसका जोड़ किसी भी तरह नहीं जुड़ता। कोई तेरा यह विचार सुनेगा तो क्या कहेगा?''

रुक्मिणी- ''कोई कुछ भी कहे, मेरे लिए तो श्रीकृष्ण ही पति हैं। आप उनके कुल, रूप आदि के विषय में जो कुछ कहती हैं, वह ठीक नहीं है। इस विषय की सब बातें मुझे नारद जी से मालूम हो चुकी हैं। कदाचित् आपका कथन ठीक भी हो, तब भी प्रेम न तो जात-पात देखता है, न ही सुंदर-कुरूप। प्रेमी को तो प्रिय वही लगता है, जिससे वह प्रेम करता है। इसके सिवाय शरीर का काला-गोरा रंग मनुष्य की अच्छाई-बुराई का कारण नहीं हो सकता। न तो सब काले आदमी बुरे होते हैं, न सब गोरे आदमी अच्छे, बल्कि कहीं-कहीं गोरे की अपेक्षा काले का महत्त्व अधिक है। आँख की पुतलियाँ यदि काली नहीं हों, सफेद हों, तो अंधा बनना पड़ेगा। सिर के केश यदि काले से उज्ज्वल हो जाएँ तो अशक्तता के पंजे में फँसना पड़ेगा। काली कस्तूरी को सभी चाहते हैं, लेकिन सफेद संखिया केवल मरने की इच्छा करने वाला ही चाहता है। कृष्ण यदि काले हैं तो मेरे लिए हैं, दूसरे को इसकी व्यर्थ चिंता क्यों?

माता- ''यदि ऐसा ही था तो मुझे पहले कह देना चाहिए था। आज जब बारात आ रही है, तेरा यह ढंग कैसे ठीक है? यदि तू ऐसी हठ पकड़कर बैठ जाएगी तो इसका परिणाम क्या होगा, यह तो विचार कर?''

रुक्मिणी- ''माता! मुझसे किसी ने पूछा ही कब था, जो मैंने नहीं कहा? मुझसे बिना पूछे चुपचाप छिपाकर टीका भेज दिया और अब कहती हो कि पहले क्यों नहीं कहा? बल्कि टीका चढ़ जाने के बाद जब मेरी सखियों ने मुझसे टीका चढ़ जाने का समाचार सुनाया था तब मैंने उसी समय मेरे ये विचार प्रकट कर दिए थे, जो आपको मालूम भी हो गए थे। फिर भी आपने इस विषय में कोई विशेष विचार नहीं किया और अब मेरे सिर पर दोष रखती हो। रही परिणाम की बात तो मुझे परिणाम का किंचित् भी भय नहीं है। मुझे शरण देने के लिए मृत्यु मेरे समीप ही खड़ी रहती है, फिर मैं परिणाम का भय क्यों करूँ? परिणाम का भय तो उसे हो सकता है जो मरने से डरती हो। मैं तो पहले ही कह चुकी हूँ कि यह शरीर यों तो कृष्ण को अर्पण है, परंतु यदि उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया और किसी दूसरे ने इस पर

अपना अधिकार जमाना चाहा तो फिर मैं यह शरीर अग्नि को समर्पित कर दूँगी, लेकिन जीवित रहती हुई तो इस पर दूसरे का अधिकार नहीं होने दूँगी।''

रुक्मिणी की माता को रुक्मिणी के उत्तर से बहुत निराशा हुई। उसने विचार किया कि अभी रुक्मिणी उद्विग्न है। इसलिए इस समय इससे अधिक बातचीत करना ठीक नहीं। इसे शांत होने देना अच्छा है। इस प्रकार विचार कर वह वहाँ से यह कहती हुई चली कि रुक्मिणी मेरी बात का उल्लंघन करेगी, यह आशा मुझे स्वप्न में भी नहीं थी। रुक्मिणी ने भी वहाँ से जाती हुई माता को उसकी बात के उत्तर में सुना दिया कि मुझे मेरा जीवनसाथी चुनने के अधिकार से वंचित कर दिया जाएगा, यह आशंका मुझे स्वप्न में भी नहीं थी।

एकांत में रुक्मिणी की माता विचारने लगी कि रुक्मिणी को समझाने के लिए क्या उपाय किया जाए। दूसरे दिन उसने रुक्म की पत्नी को रुक्मिणी के पास उसे समझाने के लिए भेजा। रुक्मिणी की भावज ने भी हँसी-दिल्लगी करते हुए रुक्मिणी को खूब समझाया, परंतु उसे भी निराश ही लौटना पड़ा। रुक्मिणी की माता ने विवश होकर सब हाल रुक्म से कह दिया। रुक्म ने विचार किया कि इस समय रुक्मिणी को समझाना ठीक नहीं होगा। अभी तो बारात की अगवानी करनी चाहिए। संभव है कि बारात आ जाने पर शिशुपाल और बारात को देखकर रुक्मिणी का हृदय पलट जाए। बारात और शिशुपाल को देखकर भी यदि रुक्मिणी ने अपना विचार नहीं बदला तो फिर मैं समझाऊँगा और यदि मेरे समझाने पर भी नहीं समझी तब बल प्रयोग करूँगा। इस प्रकार विचार कर रुक्म ने अपनी माता से रुक्मिणी को फिर समझाने के लिए कहा और स्वयं बारात की अगवानी के लिए तैयारियाँ कराने लगा।

शिशुपाल की बारात चंदेरी से कुण्डिनपुर के लिए निकल चुकी थी। ज्योतिषी, भावज, नारद जी और पत्नी ने तो शिशुपाल को कुण्डिनपुर जाने से रोका ही था, मार्ग में प्रकृति ने भी अपशकुनों द्वारा कुण्डिनपुर जाने का निषेध किया। फिर भी शिशुपाल जब नारद जी जैसे महर्षि की बात ठुकरा चुका था, तब वह अपशकुनों को कब मानने वाला था! अनेक भयंकर अपशकुनों की अवहेलना करता हुआ शिशुपाल बारात सहित कुण्डिनपुर के समीप पहुँच गया।

मार्ग में उसकी सुंदर बारात देखकर दर्शकगण खूब प्रशंसा करते थे, परंतु उन्हें क्या पता कि इस बारात का भविष्य बुरा है और इस बारात का दुलहा हठपूर्वक एक कन्या से उसकी इच्छा के विरुद्ध विवाह करने के लिए जा रहा है। इसलिए जब यह परास्त होकर लौटेगा तब सब बात मालूम होने पर हमें इसकी निंदा भी करनी पड़ेगी।

इधर रुक्म ने जब सुना कि अब बारात कुण्डिनपुर से थोड़ी ही दूरी पर है, तब वह भी सज-धज के साथ बारात की अगवानी करने के लिए चला। उसके साथ ही सेना, सजे हुए हाथी, घोड़े और पुर-परिजनों को देखकर यही अनुमान हो रहा था जैसे यह भी एक बारात है, जो चंदेरी से आने वाली बारात से संगम करने जा रही है। कुण्डिनपुर के समीप चंदेरी और कुण्डिनपुर के मार्ग में शिशुपाल और रुक्म का सम्मिलन हुआ। रुक्म के साथियों ने शिशुपाल की बारात के लोगों का खूब आदर-सत्कार किया। रुक्म और शिशुपाल भी मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। रुक्म कहने लगा कि इस अवसर पर आपने पधारकर मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है। यह मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है कि मेरे पत्र का सम्मान करके आपने मेरी और क्षत्रिय कुल की प्रतिष्ठा बचाई है। पिता से मेरा मतभेद हो गया था क्योंकि वे बहन का विवाह उस ग्वाले के साथ करना चाहते थे, परंतु मैं यह कैसे होने दे सकता था? यदि ऐसा हो जाता तो क्षत्रियों की नाक कट जाती। मैंने पिता की बात का विरोध तो किया था, परंतु यदि आप मेरी बात नहीं मानते तो मेरा वह विरोध निरर्थक होता। आज मैं अपने को धन्य मान रहा हूँ। आपने पूरी तरह मित्रता निभाई और यहाँ पधारकर मेरा घर पवित्र किया, नहीं तो कहाँ आप और कहाँ मैं तुच्छ! मेरे यहाँ आप पधारें, यह सद्भाग्य कहाँ!

इस प्रकार रुक्म ने शिशुपाल की खूब प्रशंसा की। अपनी प्रशंसा सुनकर शिशुपाल प्रसन्न हो रहा था।

रुक्म द्वारा की गई प्रशंसा के उत्तर में वह भी रुक्म की प्रशंसा करते हुए कहने लगा कि आप क्षत्रिय कुलभूषण हैं। आपने इस समय क्षत्रिय जाति को कलंकित होने से बचाया है और वह भी विरोधों को सहकर। आपके बुलाने से आकर मैंने कोई प्रशंसनीय कार्य नहीं किया है। आप तो मेरे लिए इतना विरोध सहें और मैं इतना भी नहीं करूँ? फिर मित्रता का परिचय देने का समय ही कौनसा होता? आपने जिस कार्य का पक्ष लिया, उसमें सहायता करना मेरा साधारण कर्त्तव्य है। ऐसा विचार कर ही मैंने विवाह करने की आवश्यकता नहीं होने पर भी आपका भेजा हुआ टीका स्वीकार कर लिया।

रुक्म तथा शिशुपाल परस्पर प्रशंसा करते हुए बारात की अगवानी के लिए गए हुए लोगों सहित कुण्डिनपुर आए। कुण्डिनपुर के नर-नारी बारात देखने के लिए उमड़ पड़े। राजपरिवार की स्त्रियाँ भी महल की छत से बारात देखकर बारात की प्रशंसा कर रही थीं और रुक्मिणी के भाग्य की सराहना कर रही थीं, परंतु रुक्मिणी अपने महल में उदास बैठी थी।

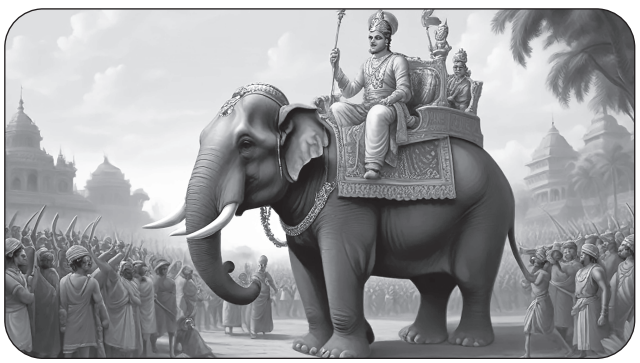

उसे किंचित् भी प्रसन्नता नहीं थी। रुक्म ने सुंदर सजे हुए महल में शिशुपाल और साथ आए राजाओं आदि को यथायोग्य स्थान पर ठहराया व खान-पान आदि की समुचित व्यवस्था करके स्थान-स्थान पर अपनी ओर से सेवक नियुक्त कर दिए। रुक्म के सुप्रबंध से शिशुपाल और उसकी बारात को बहुत संतोष हुआ।

शिशुपाल रुक्म के सद्व्यवहार और उसकी नम्रता की बार-बार सराहना करते हुए कहता था कि अच्छा हुआ जो मैंने ज्योतिषी, भावज अथवा नारद जी की बात नहीं मानी। यदि उनकी बात मानकर मैं कुण्डिनपुर नहीं आता तो मुझे ऐसा संबंधी कैसे मिलता? उस दशा में तो ऐसे श्रेष्ठ संबंध से वंचित ही नहीं रहता, अपितु रुक्म को अपना शत्रु बना लेता और एक क्षत्रिय कन्या को ग्वाले के हाथ पड़ने का कारण भी बनता।

रुक्म और शिशुपाल में फिर बातें होने लगीं। रुक्म कहने लगा कि आपको मैंने विवाह तिथि से इतने दिन पहले बुलाना इसलिए आवश्यक समझा कि पिताजी विवाह कार्य से तटस्थ और असहमत हैं। संभव है कि वे उस ग्वाले को किसी प्रकार का संदेश भेज दें अथवा वह ग्वाला स्वयं ही निर्लज्जतापूर्वक यहाँ आ जाए तो विघ्न हो जाएगा। अब आपके आ जाने से किसी को विघ्न करने का दुस्साहस नहीं हो सकता। कदाचित् वह ग्वाला आ भी गया तो मेरी और आपकी सम्मिलित शक्ति के सम्मुख उसे आत्मसमर्पण करना पड़ेगा।

शिशुपाल- ''हाँ, आपने बहुत बुद्धिमानी और दूरदर्शिता से काम लिया है। यदि वह ग्वाला यहाँ आ जाए तो मुझे आपकी बहन रूपी लक्ष्मी के साथ ही विजयलक्ष्मी भी प्राप्त होगी और कृष्ण के मारे जाने से या अधीन होने से महाराज जरासंध का भी प्रेम बढ़ेगा। आपने मुझे पहले बुलाकर बड़ा अच्छा किया। मैं अपने साथ सेना भी ऐसी लाया हूँ कि जो एक बार मृत्यु से भी युद्ध कर सकती है। मेरे अजेय योद्धाओं के सम्मुख वह ग्वाला चीज ही क्या है? आप किंचित् भी भय या संदेह मत रखिए और विवाह की तैयारी करवाइए।''

रुक्म- ''विवाह की तो सब तैयारी है, केवल बहन का दिमाग किसी ने बिगाड़ दिया है। इसलिए उसने तेल नहीं चढ़वाया है, परंतु यह कोई चिंता योग्य बात नहीं है। विवाह तिथि अभी दूर है, इसलिए मैंने बहन पर किसी प्रकार का दबाव नहीं डाला, न उसे समझाया है। मेरा विश्वास है कि अब वह आपको और आपकी बारात को देखकर प्रसन्नतापूर्वक तेल

चढ़वाना स्वीकार कर लेगी। मेरी सम्मति है कि आप अपनी बारात को एक बार जुलूस के रूप में नगर में निकालिए, जिससे नगर के नर-नारी भी आपको तथा बारात को देख लें और बहन भी देख ले।''

रुक्म की यह बात सुनकर शिशुपाल के हृदय को एक धक्का-सा लगा। अपने साथ विवाह करने के लिए रुक्मिणी को असहमत जानने के पश्चात् उसे उचित तो यह था कि वह रुक्म की बात अस्वीकार कर देता और कह देता कि जब आपकी बहन मुझे नहीं चाहती तब उसको पाने के लिए मैं किसी प्रकार की चेष्टा क्यों करूँ? जिस प्रकार द्रौपदी स्वयंवर में कर्ण ने धनुष उठाकर चढ़ा भी लिया था और राधावेध/लक्ष्यवेध करने की शक्ति भी रखता था, फिर भी द्रौपदी को अपनी पत्नी बनने के लिए असहमत देखकर दुर्योधन की बहुत प्रेरणा होने पर भी उसने राधावेध/लक्ष्यवेध नहीं किया था। उसी प्रकार शिशुपाल का भी कर्तव्य था कि वह भी रुक्मिणी को पाने की चेष्टा नहीं करता और घर लौट जाता, लेकिन धर्म और नीति को तो वह पहले ही पददलित कर चुका था। वह चंदेरी में ही रुक्मिणी की असहमति जान चुका था। यदि उसे रुकना होता तो वहीं रुक जाता, परंतु उसने स्त्रियों को अपने भोग की सामग्री मान रखा था और इस कारण वह स्त्रियों की इच्छा की अपेक्षा करना उसी प्रकार अनावश्यक समझता था, जिस प्रकार मांसाहारी लोग पशु-पक्षी की इच्छा की अपेक्षा नहीं करते।

रुक्म की बात के उत्तर में शिशुपाल ने पूछा- ''आपकी बहन ने अभी तेल नहीं चढ़वाया है?''

रुक्म- ''नहीं, जान पड़ता है कि वह पिताजी के बहकावे में आकर उस ग्वाले को चाहती है।''

शिशुपाल- ''मैं आपके कथनानुसार बारात का जुलूस तो निकालूँगा ही, परंतु यदि इस कार्य का कोई यथेष्ट परिणाम नहीं निकला तो?''

रुक्म- ''न निकले ! फिर बल प्रयोग का उपाय तो है ही। एक कन्या की ताकत ही क्या है? मैंने आपको व्यर्थ ही नहीं बुलाया है, न आप व्यर्थ ही बारात सजाकर आए हैं। कोई काम जब तक सुगम उपाय से हो जाए, तब तक उसके लिए किसी कठिन उपाय का अवलंबन लेना उचित नहीं है।''

साभार- श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

-क्रमशः

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक **'महत्तम व्यक्तित्व : • व्यक्तित्व से कृतित्व की ओर • हमारा व्यक्तित्व कैसा हो • दिखावे का चक्रव्यूह'** पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिंदी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

-श्रमणोपासक टीम

श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

संकलनकर्ता -
कंचन कांकरिया, कोलकाता

29-30 मार्च 2024 अंक से आगे....

ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध – ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

मतिज्ञान

प्र.2459 व्यंजनावग्रह को मतिज्ञान के भेद में क्यों लिया गया है?

उत्तर ज्ञान की पूर्व भूमिका होने के कारण अर्थात् पुद्गलों से संबंध के बिना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिए व्यंजनावग्रह को ज्ञान में लिया गया है।

प्र.2460 क्या व्यंजनावग्रह के बाद अर्थावग्रह, ईहा, अवाय, धारणा क्रमानुसार ही होते हैं?

उत्तर हाँ, क्रमानुसार ही होते हैं।

प्र.2461 अर्थावग्रह का संधि विच्छेद कीजिए।

उत्तर अर्थ – कारण + अवग्रह - बोध, ज्ञान।

प्र.2462 अर्थावग्रह किसे कहते हैं?

उत्तर प्रारंभिक ज्ञान अर्थात् जिसके कारण वस्तु का सामान्य (अव्यक्त) बोध हो, उसे अर्थावग्रह कहते हैं।

प्र.2463 अर्थावग्रह से स्पष्ट बोध क्यों नहीं होता है?

उत्तर अर्थावग्रह की स्थिति एक समय ही है, इसलिए अर्थावग्रह मतिज्ञान से छद्मस्थों को व्यक्त (स्पष्ट) बोध नहीं होता है।

प्र.2464 ईहा और अवाय मतिज्ञान की स्थिति कितनी है?

उत्तर अंतर्मुहूर्त्त।

प्र.2465 श्रोतेंद्रिय अर्थावग्रह का वर्णन कीजिए।

उत्तर शब्द का प्रारंभिक ज्ञान होना श्रोतेंद्रिय अर्थावग्रह कहलाता है। इसी प्रकार शेष चार इंद्रियों का अर्थावग्रह कहना चाहिए।

प्र.2466 नोइंद्रिय (मन) अर्थावग्रह का वर्णन कीजिए।

उत्तर नोइंद्रिय अर्थावग्रह की स्थिति एक समय है। एक समय में मन का स्पष्ट ज्ञान नहीं हो सकता है।

प्र.2467 मन को नोइंद्रिय क्यों कहते हैं?

उत्तर संस्कृत कोष में 'नो' शब्द के दो अर्थ कहे गए हैं। यथा- नहीं और ईषत् (अल्प, थोड़ा)। इंद्रियाँ ज्ञान का माध्यम हैं। यह गुण मन में भी है, किंतु इंद्रियों की रचना होती है, मन की नहीं। इसलिए मन को 'नोइंद्रिय' कहते हैं अर्थात् इंद्रियों का अल्प गुण मन में भी है।

प्र.2468 क्या अर्थावग्रह के बाद ईहा, अवाय, धारणा निश्चित रूप से होते हैं?

उत्तर नहीं, अर्थावग्रह के बाद जिज्ञासा न हो या विषयांतर हो जाए या काल कर जाए तो ईहा आदि नहीं होते हैं। जैसे-

1. किसी ने सिर्फ अवग्रह किया।
2. किसी ने अवग्रह, ईहा किया।
3. किसी ने अवग्रह, ईहा, अवाय किया।
4. किसी ने चारों यानी धारणा भी की।

इसी प्रकार ईहा और अवाय का भी उपयोगपूर्वक समझना चाहिए।

प्र.2469 इंद्रियों को अवग्रह, ईहा आदि का बोध किस प्रकार होता है?

उत्तर मति-श्रुतज्ञानावरणीय और चक्षु-अचक्षु दर्शनावरणीय कर्म के क्षयोपशम के कारण इंद्रियों का बोध होता है।

प्र.2470 द्रव्य इंद्रियों की प्राप्ति कौनसे कर्म के उदय से होती है?

उत्तर अंगोपांग नामकर्म के उदय से इंद्रियों की प्राप्ति होती है।

प्र.2471 क्या असंज्ञी जीवों में अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा होता है?

उत्तर असंज्ञी जीवों में इंद्रिय संबंधी अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा होता है, किंतु मन संबंधी अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा नहीं होता है।

प्र.2472 एकेंद्रिय यावत् असंज्ञी पंचेंद्रिय के अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा का वर्णन कीजिए।

उत्तर एकेंद्रिय में एक इंद्रिय का, बेइंद्रिय में दो इंद्रियों का यावत् असंज्ञी पंचेंद्रिय में पाँचों इंद्रियों का अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा होता है।

प्र.2473 मतिज्ञान के कुल कितने भेद हैं?

उत्तर 1) अर्थावग्रह, ईहा, अवाय, धारणा – ये चारों 5 इंद्रिय और मन से होते हैं। अत: $6 \times 4 = 24$ भेद अर्थावग्रह के,

2) चक्षु को छोड़कर शेष 4 इंद्रियों से व्यंजनावग्रह होता है। अत: $24 + 4 = 28$ भेद,

3) 1. बहु, 2. अबहु, 3. बहुविध, 4. अबहुविध, 5. क्षिप्र, 6. अक्षिप्र, 7. निश्रित, 8. अनिश्रित, 9. संदिग्ध, 10. असंदिग्ध, 11. ध्रुव, 12. अध्रुव $= 12 \times 28 = 336$ भेद श्रुत निश्रित मतिज्ञान के +

4) चार भेद अश्रुत निश्रित (बुद्धि) के = कुल 340 भेद मतिज्ञान के होते हैं।

यद्यपि जातिस्मरणज्ञान धारणा के अंतर्गत है। किंतु ग्रंथों में स्पष्टता से वर्णन करने के अभिप्राय से इसे अलग गिनकर 341 भेद भी बताए हैं।

प्र.2474 बहु व अबहु मतिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर बहु - अनेक, अबहु - एक। एक काल में अनेक पदार्थों को जानने वाला अवग्रह, ईहा आदि ज्ञान बहु मतिज्ञान है और एक पदार्थ को जानने वाला अबहु मतिज्ञान है। ये दोनों भेद संख्या की अपेक्षा हैं।

प्र.2475 बहुविधग्राही व अबहुविधग्राही किसे कहते हैं?

उत्तर एक काल में एक या अनेक पदार्थों को लंबाई-चौड़ाई आदि अनेक प्रकार से जानना बहुविधग्राही मतिज्ञान है और एक प्रकार से जानना अबहुविधग्राही मतिज्ञान है। ये दोनों भेद पर्याय की अपेक्षा हैं।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमश:

राम चमकते भानु समाना

श्रमणोपासक हेडलाइंस

- भदेसर में संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के संथारे का 24 अप्रैल को 47वें दिन। संथारा अपूर्व धर्मोद्योत के साथ गतिमान। गुरुवर के पावन दर्शन कर धन्य हुई संथारा साधिका।
- मेवाड़ के अनेक क्षेत्रों को पावन करते हुए परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. का अक्षय तृतीया पारणा एवं अभिमोक्षम् शिविर के पावन अवसर पर चित्तौड़गढ़ पधारना संभावित।
- आचार्य भगवन् ने सामायिक में मन नहीं लगने की समस्या का समाधान फरमाया- सामायिक काल के 48 मिनट का विभाजन 15 मिनट स्वाध्याय, 15 मिनट माला, 5 मिनट दिन के कृत्य कर्मों पर चिंतन, 5 मिनट भविष्य निर्धारण, 8 मिनट समता साधना एवं स्वचिंतन आदि में करना।
- उपवास, बेला, तेला, संवर, आयंबिल आदि में लोग ले रहे उत्साहपूर्वक भाग। जैन-जैनेतर गुरु सान्निध्य का उठा रहे भरपूर लाभ। त्याग-प्रत्याख्यानों की मच रही होड़।
- भदेसर में गुरु दर्शनार्थ पधारे मुमुक्षु भाई सौरभ जी संचेती, दुर्ग का एक अलग कार्यक्रम में श्री साधुमार्गी जैन संघ के पदाधिकारियों द्वारा शानदार अभिनंदन। अन्य अनेक स्थानों पर भी हुआ अभिनंदन।
- सांवलिया जी मंदिर ट्रस्ट के चेयरमैन भैरूलाल जी गुर्जर, भीलवाड़ा के कर्नल राजेंद्र जी मुर्मा, पूर्व विधायक देवीलाल जी धाकड़, गरोठ-मंदसौर, समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित अनेक गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।
- उदयपुर संघ की ओर से '**राम आए थे**' मनमोहक कार्यक्रम के माध्यम से आचार्य प्रवर के उदयपुर चातुर्मास की विशिष्टताओं को आत्मसात् करने का अभिनव प्रयास। आयोजन में लगभग 1000 साधुमार्गी सदस्यों की उपस्थिति।
- रियल रामेश रत्नम् प्रतियोगिता के विजेता समता संस्कार पाठशाला, खिरकिया के बालक आगम रांका ने स्वाध्यायी सेवा से किया गौरवान्वित।
- आचार्य श्री रामेश के ब्यावर चातुर्मास के प्रवचनों पर आधारित नवीन साहित्य '**नयतां वरः**' का विमोचन 25 मार्च को मंगलवाड़ चौराहा में संघ प्रमुखों एवं मुमुक्षु सौरभ जी संचेती के करकमलों से संपन्न।

ज्ञान ही सुख की खान है - आचार्य श्री रामेश
जीवन में बदलाव जरूरी - उपाध्याय प्रवर

युगनिर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. द्वारा मेवाड़ क्षेत्र में अपूर्व धर्म प्रभावना

भदेसर में संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. का संथारा निरंतर गतिमान

समता भवन एवं ओस्तवाल परिसर, मंगलवाड़ चौराहा, समता भवन, मोरवन, भूतखेड़ा, मंडफिया, सांवलिया जी, भदेसर, आवरी माता।

न माइक, न लाइट, न पंखा, न कूलर, न फोटो, न वीडियो, न मोबाइल, न लैपटॉप, इन सभी इलेक्ट्रिक उपकरणों से उपयोग सदैव विरत रहने वाले, कठोर संयम साधना के सजग प्रहरी, युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर, रत्नत्रय के महान् आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के मेवाड़ क्षेत्र में पावन प्रवास से जैन-जैनेतर सभी आध्यात्मिक आलोक से आलोकित हो रहे हैं। आगमसम्मत जीवन निर्माणकारी प्रवचनों की धूम मची हुई है। मार्गवर्ती अनेक क्षेत्रों में सामायिक, स्वाध्याय, दया, संवर, एकासना, आयंबिल, बेला, तेला सहित अनेक त्याग-प्रत्याख्यानों में लोग बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। स्कूलों में व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण के कार्यक्रम '**राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश**' अभियान के अंतर्गत हो रहे हैं।

तत्त्वज्ञान शिविर, आदर्श जीवन के सूत्र एवं जिज्ञासा-समाधान कार्यक्रम के तहत जिज्ञासु जनता धर्म के मर्म को समझने का प्रयास कर रही है। देश-विदेश से श्रद्धालु धर्मप्रेमी भाई-बहन त्यागी महापुरुषों के पावन दर्शन कर जीवन धन्य बना रहे हैं।

कल्पना के जाल बुनना समस्त परेशानियों का मूल

01 अप्रैल 2024, न्यू समता भवन, ओस्तवाल परिसर, मंगलवाड़ चौराहा। परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. आदि ठाणा का बिलौदा से 7 किमी. विहार कर मंगलवाड़ चौराहा स्थित ओस्तवाल परिसर न्यू समता भवन में जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। प्रवेश यात्रा में संपूर्ण मार्ग जय-जयकारों से गुँजायमान हो रहा था। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति से धर्म श्रद्धा परिलक्षित हो रही थी। मंगलमय प्रवेश के पश्चात् विहार यात्रा धर्मसभा में परिवर्तित हो गई।

धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को आगमसार से लाभान्वित करते हुए प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**इस दुखिया संसार में उलझन ही उलझन है। कल्पना के जाल बुनना नई आफत को बुलावा देना है। कल्पना की उड़ान ही समस्त परेशानियों-उलझनों की जड़ है। अशांति एवं क्रोध की अवस्था में व्यक्ति को मुसीबतों से घबराना नहीं चाहिए। छोटे-छोटे बदलाव लाकर करुणा, परोपकार, दया के भाव से लोगों को अपने निकट लाकर परेशानियों का समाधान ढूँढ़ना चाहिए। जीवन में कोई भी परीक्षा अंतिम परीक्षा नहीं होती। सफलता में फूलना नहीं चाहिए और मुसीबत में घबराना नहीं चाहिए। नकली हार चमकता ज्यादा है, किंतु ज्यादा कीमत असली हार की होती है। आमतौर पर व्यक्ति 85 प्रतिशत कर्म आश्रव के एवं 15 प्रतिशत कर्म निर्जरा के करता है। एक सुख आत्मा का व दूसरा सुख पुद्गलों का, चिंतन का विषय है। राग-द्वेष से चिपकी आत्मा का पुद्गलों के लगाव का रस छूटता नहीं है। भीतर के रामत्व को जाग्रत कर जीवन को सफल बनाने पर ही आत्मकल्याण संभव है।**''

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मंगल की किरणें हमें निर्भय बनना सिखाती है। जो डर गया वो मर गया।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता श्री जी म.सा. ने फरमाया कि राम गुरु आगम के अनुसार चलने वाले हैं। स्थानीय श्रावकों ने आचार्य भगवन् के असीम उपकारों के प्रति अहोभाव व्यक्त किया। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मंगलवाड़ की सेवाएँ अत्यंत सराहनीय रही।

साध्वी श्री प्रसिद्धि श्री जी म.सा. ने गीतिका '**लगन गुरु से लगने पर जो होगा देखा जाएगा**' प्रस्तुत करते हुए मेवाड़ी भाषा में फरमाया कि पाँचवें आरे की तीन पहचान- मन का टेढ़ापन, वचन का खारापन और तन का उतावलापन हैं। इनसे बचने का प्रयास करें। राम गुरु महाविदेह क्षेत्र की आत्मा हैं। आपश्री जी के हम पर अनंत उपकार हैं। साध्वी मंडल ने '**तिन्नाणं-तारियाणं कृपासिंधु परम वंदनम्**' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

पुद्गलों से प्रीत हटाएँ

02 अप्रैल 2024, समता भवन, मोरवन। प्रात: प्रार्थना पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर सहित सान्निध्यवर्ती संतवृंद का मंगलवाड़ चौराहा से समता भवन, मोरवन में मंगलमय पदार्पण हुआ। यहाँ पर आयोजित धर्मसभा को धर्म भाव से सराबोर करते हुए संयम सुमेरु आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**पुण्य का सहकार ज्यादा या पाप का सहकार ज्यादा? सापेक्षिक दृष्टि से दोनों कथन सहयोगी हैं। आत्मा के उत्थान में पाप और पुण्य दोनों ही सहयोगी बनते हैं। मोह की नींद पुद्गलों से जब तक प्रीत बनाए रखेगी तब तक हर क्षण संकट आते रहेंगे। संताप मिटाने के लिए लगाव, आसक्ति का भाव हटाना पड़ेगा। पुद्गलों की प्रीत व मोह की नींद उड़ानी पड़ेगी। ज्ञान ही सुख की खान है। इंद्रियों का दमन करने वाले का पुद्गलों से आकर्षण समाप्त हो जाता है और वह क्षमा को धारण कर लेता है। उसे कोई भी वार, शब्दबाण परेशान नहीं कर सकता। जो बात हो गई उसे भूल जाना ही क्षमा है। कर्मयोगी कृष्ण ने अपनी भुआ कुंती से कुछ माँगने के लिए कहा तो कुंती ने कहा कि तू मुझे दु:ख ही दु:ख देना ताकि हर पल तेरा स्मरण कर सकूँ। शालिभद्र ने सोचा कि मेरे पुण्य में क्या कमी रही जो मेरे पर भी नाथ हैं। पाँच इंद्रियों का दास अनाथ होता है। साधु किसी पर आश्रित नहीं होता। दवाओं से शांत नहीं होने वाली असहनीय वेदना साधुत्व का संकल्प लेते ही पुण्य का प्रबल योग होने पर शांत हो जाती है।**

पुराने जमाने में श्रावक पक्के और घर कच्चे होते थे। आज घर पक्के और श्रावक कच्चे हैं। छोटे-छोटे त्याग-प्रत्याख्यान से श्रावकत्व को पक्का करके ही हमारी आत्मा का कल्याण कर सकेंगे।''

श्री नीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि चौदह पूर्व के ज्ञान में किसी भी प्रकार का ज्ञान बकाया नहीं रहता। ज्ञान की आराधना के बाद चार प्रकार के विनय भाव पैदा होने आवश्यक हैं। गुरु के सान्निध्य में अहं, अभिमान का विनाश होता है और विनय की प्राप्ति होती है।

साध्वी श्री ऋजुता श्री जी म.सा. ने राम का महत्त्व बताते हुए फरमाया कि सीता के लिए अंगूठी से ज्यादा राम का महत्त्व था। आपश्री जी ने आचार्य भगवन् के आयामों को आत्मसात् करने की प्रेरणा दी।

सामायिक में मन नहीं लगने की समस्या के समाधान की दिशा में सामायिक काल के 48 मिनट का विभाजन 15 मिनट स्वाध्याय, 15 मिनट माला, 5 मिनट दिन के कृत्य कर्मों पर चिंतन, 5 मिनट भविष्य निर्धारण, 8 मिनट समता साधना एवं स्वचिंतन आदि में करना चाहिए।

संवर में लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। जैन-जैनेतर गुरु सन्निधि का भरपूर लाभ उठा रहे हैं। दोपहर में आगम वाचनी, प्रश्नोत्तरी, ज्ञानचर्चा आदि धार्मिक कार्यक्रम हुए।

एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षु भाई सौरभ जी संचेती, दुर्ग का शानदार स्वागत-अभिनंदन श्री साधुमार्गी जैन संघ, मोरवन के पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा किया गया। अपने उद्गार में मुमुक्षु भाई ने कहा कि संसार छोड़ने योग्य है, संयम ग्रहण करने योग्य है और मोक्ष पाने योग्य है। उभय गुरु-भगवंतों की कृपा से मैं वीतराग पथ पर अग्रसर होने जा रहा हूँ, यह मेरे जीवन का सबसे सौभाग्यशाली क्षण होगा।

नकारात्मक सोच से आत्मा का पतन

03 अप्रैल 2024, समता भवन, मोरवन। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में **'प्रभु पंच परमेष्ठी दयाला'** भक्तिगीत के साथ गुणानुवाद किया गया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को अपनी अमृतवाणी से पावन करते हुए तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने फरमाया कि **''नकारात्मक सोच आत्मा का उत्थान नहीं होने देती। दूसरों को हीन समझना, धर्म का दिखावा करना, सामायिक की बदनामी जैन युवाओं को धर्म से विमुख कर रही है। पूणिया श्रावक की एक गुणात्मक सामायिक को सम्राट श्रेणिक राजा भी नहीं खरीद पाया। भगवान महावीर ने गौतम के संशयमय जीवन से मन की चंचलता मिटाई। सामायिक में मन नहीं लगने की समस्या के समाधान की दिशा में सामायिक काल के 48 मिनट का विभाजन 15 मिनट स्वाध्याय, 15 मिनट माला, 5 मिनट दिन के कृत्य कर्मों पर चिंतन, 5 मिनट भविष्य निर्धारण, 8 मिनट समता साधना एवं स्वचिंतन आदि में करना चाहिए। आत्मा में छुपी रिजर्व शक्ति संकट में सहगामी बनती है। इसलिए घबराना नहीं चाहिए। हिम्मत नहीं हारकर इंद्रियों के पाँचों विषयों में समभाव से रहकर हम आत्मा का कल्याण कर सकते हैं।''**

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मशीनीकरण के युग में घरों में होने वाले समस्त कार्य मशीनों से होने लग गए, जिससे समय की बहुत बचत होने लगी है। परंतु उस समय का सदुपयोग नहीं करके उसे पापकारी प्रवृत्तियों में लगाकर मानव क्रोधी, तनावयुक्त होकर आधुनिकता के युग में विभिन्न रोग बढ़ाने में लगा हुआ है। उपकरणों की लत प्रकृति विनाशक बन रही है। हर समय नवकार मंत्र का स्मरण करने से जीवन आत्मभावों में स्थिर हो सकेगा।

साध्वी श्री सुसमृद्धि श्री जी म.सा. ने मन को साधना में जोड़ने एवं स्वाध्याय में अधिक से अधिक लगाने की प्रेरणा दी। सामूहिक दया में भाई-बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। गाँव में रहते हुए दिन में एक बार धर्मस्थानक में आने व धर्मध्यान करने का नियम अनेक व्यक्तियों ने लिया। संस्कृत विद्यालय में व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण का कार्यक्रम हुआ।

मन की गाँठें चट्टान से भी अधिक कठोर

04 अप्रैल 2024, समता भवन, मोरवन। भोर के प्रस्फुटन के पश्चात् प्रात:कालीन प्रार्थना में धर्मगीत के स्वर प्रवाहित हुए। समता भवन में आयोजित प्रवचन सभा में अपार जनमेदिनी ज्ञानपिपासु चातक की भाँति गुरुवचनों को श्रवण करने को आतुर नजर आ रही थी। सिरीवाल प्रतिबोधक, आध्यात्मिक आरोग्यम् के प्रणेता परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''जिंदगी का हर दिन नया होता है। जो क्षण को जान लेता है वह पंडित कहलाता है। यदि हम वर्तमान को सुखी बना लेंगे तो हमारा मोक्ष दूर नहीं है। यदि हम हर पल मन को अशांत रखेंगे तो मोक्ष दूर का डूंगर लगेगा। आध्यात्मिक दृष्टि के धरातल पर सोचा जाए तो व्यक्ति अपने आप से दु:खी होता है। जीवन बगिया में आग लगाने वाले हम स्वयं हैं, क्योंकि हमने धर्म के मर्म को नहीं समझा है। कटु वचन कलह, युद्ध के कारण बन जाते हैं। द्रौपदी का एक कड़वा वाक्य 'अंधों की संतान अंधी होती है' महाभारत युद्ध का कारण बना तथा मंथरा की कुटिल सोच रामायण का कारण बनी। छोटी-छोटी बातें मनोरोग का कारण बनती है और मनोरोग की स्थिति में खाना-पीना सब दुष्कर लगता है। यही भाव आगे चलकर कैंसर, हृदय रोग, ब्लड प्रेशर, शुगर आदि गंभीर बीमारियों के जनक बनते हैं। हमारी लय ही मनोवृत्ति को बदलने वाली है। स्व. आचार्य श्री नानेश ने समता दर्शन एवं व्यवहार में फरमाया है कि ग्रंथी विमोचन के माध्यम से भीतर की ग्रंथियों का शोधन करके ही हम आत्मकल्याण कर सकते हैं। मन की गाँठें चट्टान की तरह कठोर होती हैं, जो मन में बंध का रूप ले लेती है। ये बंध ही संयुक्त परिवारों के टूटने का मुख्य कारण है। जीवन जीने की कला नहीं जानने के कारण देश में आज लाखों शिक्षित लोग आत्महत्याएँ कर रहे हैं।''**

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने धर्माराधना के लिए साधना को महत्त्वपूर्ण बताते हुए मोक्ष मार्ग के चार उपाय दान, शील, तप, भावना का उल्लेख किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'राम गुरु को वंदन है'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। मोरवन संघ अध्यक्ष एवं सदस्यों ने चारित्रात्माओं के चातुर्मास हेतु पुरजोर विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। पक्खी प्रतिक्रमण करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। सामूहिक एकासन एवं स्वाध्याय दिवस में भाई-बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। दोपहर में आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि धार्मिक कार्यक्रम हुए। लक्ष्मीपुरा में सिरीवाल प्रवृत्ति समता भवन में दीक्षार्थी भाई सौरभ जी संचेती, दुर्ग का आत्मीय स्वागत स्थानीय जनों द्वारा किया गया।

समाधि भाव से कल्याण संभव

05 अप्रैल 2024, समता भवन, मोरवन। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना पश्चात् आयोजित धर्मसभा में परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने उपस्थित गुरुभक्तों को भगवान महावीर की पावन अमृतवाणी का रसपान

कराते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**धर्म आराधना का मतलब धर्म की उपासना करना और धर्म की दिशा में अपने आपको गतिशील बनाना है। धर्मक्रियाओं से हमने संबंध जोड़ा है। धर्मवाणी सुनने से पाप मार्ग एवं कल्याण पथ का ज्ञान होता है। दोनों को जानने के बाद समीक्षा हमें करनी होगी कि मुझे कौन-सा मार्ग स्वीकार करना है? हमारी दृष्टि जैसी होगी वैसा ही ग्रहण करने हेतु हम समर्थ बनेंगे। सभी प्रकार की समाधि होने पर ही तपस्या करना सार्थक है। समाधि भंग करके तपस्या करने से कोई फायदा नहीं है। समाधि महत्त्वपूर्ण है। बिना समाधि खाना और बिना समाधि तपस्या करना, दोनों से ही कल्याण होने वाला नहीं है। समाधि में समभाव रहेगा तो ही कल्याण संभव है। अपने को श्रेष्ठ व दूसरों को हीन समझने वाला कभी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। सहनशीलता और समाधि भाव साधना के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। ये अंग यदि भीतर विकसित होते हैं तो बहुत ही उच्च स्थिति है। सुनना, सुनना, सुनना, लेकिन कब तक सुनना? जब तक जीवन तब तक सुनना। हम अपने आपको प्रेरित कर सत्य को समझने का प्रयास करें।**''

श्री नीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि कर्म नहीं आत्मा बलवान है। आत्मा कर्मों को बाँधती है और तोड़ती है। हमने दिनभर में क्या कर्म किए हैं, कर्मों की निर्जरा की है या कर्मों का बंध किया है? आत्मचिंतन अवश्य करें। निरर्थक कार्यों को छोड़िए।

शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने '**नाना गुरुवर रो राम संघ में कर रह्या भारी कमाल**' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। चातुर्मास में एक तेला करने एवं महावीर जयंती के अवसर पर उपवास करने का प्रत्याख्यान कई भाई-बहनों ने लिया। सामूहिक बियासना एवं संवर में भी लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। राजकीय माध्यमिक विद्यालय में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम हुआ।

साध्वी श्री श्रेया श्री जी म.सा. ने फरमाया कि महापुरुषों के सान्निध्य में हम अपने जीवन को सुसंस्कारित बनाएँ। शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा. आदि ठाणा का मंगल पदार्पण गुरुचरणों में हुआ।

यतनापूर्वक करें हर कार्य

06 अप्रैल 2024, भूतखेड़ा। भोर की पावन बेला में पक्षियों के मधुर कलरव के बीच मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति के पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. सहित सान्निध्यवर्ती संतरत्नों का मोरवन से विहार कर भूतखेड़ा गाँव में भगवान जी पाटीदार के निवास पर जय-जयकारों के साथ नयनाभिराम मंगल प्रवेश हुआ।

दोपहर में आयोजित प्रवचन सभा में श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमें हर कार्य में यतना-विवेक का ध्यान रखना चाहिए। अयतनापूर्वक चलने, बोलने, बैठने से पापकर्म का बंध होता है।

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने भजन '**आया कहाँ से, कहाँ है जाना**' प्रस्तुत किया। नवकार मंत्र का सामूहिक जाप किया गया। संघ एवं समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी सहित अनेक स्थानों से पधारे गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

शासन दीपिका साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा. आदि ठाणा का गुरुचरणों में पधारना हुआ। पाटीदार, गायरी, लोहार समाज सहित ग्रामीणों की सेवा-भक्ति सराहनीय रही। परम गुरुभक्त राकेश जी मोगरा, रतलाम के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने रात्रिकालीन ज्ञानचर्चा में ग्रामीण भाइयों को धर्मबोध देते हुए फरमाया कि सत्संगत से सुख मिलता है। हमें सदैव अच्छे लोगों की संगति करनी चाहिए। जैसी संगत होती है वैसी ही रंगत होती है। भगवान की भक्ति करना, जीवन में सदैव सत्य बोलना और कठिनाई के समय कभी घबराना नहीं चाहिए।

जो सत् में लीन वे ही संत

07 अप्रैल 2024, वर्धमान जैन भवन सांवलिया जी, मंडफिया। प्रात:काल आचार्य भगवन् सहित सान्निध्यवर्ती संतवृंद का गगनभेदी जयनारों के साथ भूतखेड़ा से मंडफिया की दिशा में विहार हुआ। मार्गवर्ती क्षेत्रों में ग्रामीण जनता का उत्साह देखते ही सुखद अनुभूति हो रही थी। सभी जाति एवं धर्म के लोगों ने मार्ग के दोनों और गुरुवर की अगवानी कर अपना जीवन धन्य बनाया। आपश्री जी का मंडफिया के वर्धमान जैन भवन में मंगलमय पदार्पण हुआ।

प्रवचन सभा में जैन धर्म का सार बतलाते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''आत्मिक सुख हमारे भीतर भरा पड़ा है किंतु हम उसको प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। इसका कारण हमारी दृष्टि एवं हमारी सोच है। जब तक दृष्टि में राग-द्वेष और स्वार्थ बना रहेगा तब तक उस आत्मिक सुख का अनुभव नहीं कर पाएँगे। आत्मिक सुख का अनुभव राग-द्वेष रहित दृष्टि से हो पाएगा। धर्म की साधना व आराधना से स्वार्थ की दृष्टि हटेगी और वसुधैव कुटुंबकम् की स्थिति बनेगी। धर्म क्या है? सत् की खोज करना धर्म है। सत् की अनुभूति, सत् के प्रति निष्ठा धर्म है। सत्संगति करने से धर्म का बोध प्राप्त होता है। जो सत् में लीन हो जाते हैं वे संत हो जाते हैं। संतों के माध्यम से ही सत् के बोध की अवस्था हमें प्राप्त होती है। नीतिशास्त्र में कहा गया है- *'साधुनामं दर्शनं महापुण्यं'* साधु तीर्थ रूप होते हैं। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका तीर्थ हैं, जो तिराते हैं। श्रावक को जीवाजीव आदि नौ तत्त्व व हेय-ज्ञेय-उपादेय का ज्ञान होना चाहिए। क्या ग्रहण करने योग्य है और क्या छोड़ने योग्य है, इसका ज्ञान होना चाहिए। क्षीर और नीर की दृष्टि होनी चाहिए। क्रोध, मान, माया, लोभ ग्रहण करने योग्य नहीं हैं। इनको छोड़ना चाहिए।''**

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जिनवाणी श्रवण दुर्लभ है। उससे भी ज्यादा दुर्लभ जिनवाणी पर श्रद्धा है। श्रद्धा को परम दुर्लभ कहा गया है। देव, गुरु, धर्म के प्रति हमारी श्रद्धा गहरी होनी चाहिए। श्रद्धा में कोई मिलावट नहीं होनी चाहिए।

स्थानीय गुरुभक्तों ने आचार्य भगवन् के आगमन पर हर्ष व्यक्त करते हुए अधिकाधिक विराजने की विनती प्रस्तुत की। वर्ष में बारह एकासन, 12 आयंबिल एवं भोजन करते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया।

सुश्राविका सुआ देवी पाबूदान जी बोथरा, गंगाशहर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। शासन दीपिका साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ।

हर समस्या का समाधान है

08 अप्रैल 2024, वर्धमान स्थानक भवन, मंडफिया (सांवलिया जी)। भगवान महावीर स्वामी को समर्पित प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में **'महावीर भगवान देना सद्ज्ञान जी'** भजन की स्वरलहरी से संपूर्ण

माहौल धर्ममय बन गया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हर कोई व्यक्ति मन से परेशान है। मन को साधने का प्रयास होना चाहिए। हम अपनी समीक्षा करें। हर समस्या का समाधान संभव है। हम स्वयं की गलती नहीं देखकर दूसरों के दोष देखते रहते हैं। हमारी दृष्टि गुणपरक होनी चाहिए। हमारी दिनचर्या सुव्यवस्थित होनी चाहिए। अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति में मन को शांत-प्रशांत रखने का अभ्यास करना चाहिए। ऐसे महान जिनधर्म व सद्गुरु मिलने के बाद हमारे जीवन में बदलाव नहीं आया तो हमारा कहीं भी कल्याण होने वाला नहीं है।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ प्रदान कर भक्तों को कृतार्थ किया। एक घंटा मौन रहने एवं घर में रहते हुए धोवन पानी पीने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। सांवलिया एकेडमी स्कूल में व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए। सामूहिक दया आयोजन में 21 भाई-बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दोपहर में श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने आगमिक धारणा सहित अनेक महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

श्री सांवलिया जी मंदिर ट्रस्ट के चेयरमैन श्री भैरूलाल जी गुर्जर व भीलवाड़ा के कर्नल राजेंद्र जी मुर्मा आदि सहित अनेक गणमान्यजनों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

कोई मेरा नहीं

09 अप्रैल 2024, जैन स्थानक भवन, मंडफिया (सांवलिया जी)। भोर की मंगल प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति से ओत-प्रोत **'हे प्रभु पंच परमेष्ठी दयाला'** एवं **'गुरु नाना के हो राम मेरे दिल में बस जाए'** की मधुर ध्वनि से संपूर्ण वातावरण भक्तिमय बन गया।

धर्मसभा को अपने पावन वचनों से आप्लावित करते हुए परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''धर्म में जीना बहुत ही आसान है। धर्म में जीना सीख लेंगे उस दिन सारी कठिनाइयाँ अपने आप समाप्त हो जाएँगी। धर्म आराधना कठिन इसलिए लगती है क्योंकि यह शिखर पर चढ़ने के समान है। धर्म दो प्रकार के हैं- निश्चय धर्म और व्यावहारिक धर्म। निश्चयात्मक धर्म में जीना बहुत आसान है, जहाँ किसी से कोई नाता नहीं, कोई रिश्ता नहीं। व्यवहार धर्म में जीना कठिन काम होता है। सबसे रिश्ते-नाते रखते हुए सबसे अलग होना बहुत मुश्किल है। सबके साथ हिलमिल कर चलो, किंतु भीतर में सावधान रहो कि कोई मेरा नहीं है। मोह को शिथिल करने की एकमात्र ताकत धर्म में है। संसार से रिश्ते-नाते जोड़ने पड़ते हैं, किंतु धर्म कहता है कि हम इन सबसे अलग रहें। स्वयं को किसी से अटैच मत होने दें। मोह हमारे भीतर दुःख पैदा करता है। यदि मोह को नहीं हटाएँगे तो कहीं न कहीं से दुःख हमारे नजदीक आएगा ही। हमारी दृष्टि साफ होनी चाहिए कि इस दुनिया में मेरा कोई नहीं है। कोई किसी को न तो साथ ले जाने वाला है और न ही कोई साथ जाने वाला है।''**

श्री नीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मन, वचन, काया को साधने का प्रयास करना चाहिए। काया-क्लेश तप के माध्यम से समभाव की साधना को आगे बढ़ाएँ। सदैव सत्य, प्रिय, मधुर, हितकारी वचनों का प्रयोग करें। बारह वर्ष तक जो असत्य नहीं बोले, उसे वचन सिद्धि प्राप्त हो जाती है। मन को साधने से पहले वचन और काया को साधने का प्रयास करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा. ने फरमाया आचार्य भगवन् अद्भुत शक्ति के केंद्र हैं। वे सभी को नई ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं। संयम शतक के लिए हम भी भागीरथी पुरुषार्थ करें।

संघ अध्यक्ष एवं मंत्री ने महावीर जयंती पर सांवलिया जी संघ को सान्निध्य प्रदान करने की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। गाँव में रहते हुए प्रतिदिन कम से कम एक बार धर्म स्थानक में आने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। दोपहर में श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने मंडल में आने से होने वाले लाभों की जानकारी दी। वैदिक विद्यालय में नैतिक शिक्षा व संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा. आदि ठाणा का भींडर, मंगलवाड़ होते हुए गुरुचरणों में पधारना हुआ। पूर्व विधायक देवीलाल जी धाकड़, गरोठ-मंदसौर ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

संघर्ष नहीं, समन्वय करो

10 अप्रैल 2024, जैन स्थानक भवन, मंडफिया (सांवलिया जी)। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में **'मेरे प्यारे देव गुरुवर श्री जिन धर्म महान्'** की धर्म से पूरित स्वरलहरी से जन-जन का जीवन पावन हो गया।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए जन-जन के तारणहार आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''तीर्थंकर देव अकेले साधना में प्रवृत्त होते हैं और खोज व शोध करते हैं। उसके बाद वे भवी आत्मा को दिशाबोध देते हैं कि तुम्हें कौनसी दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। हर किसी के लिए एकाकी साधना कठिन होती है। इसलिए तीर्थंकर देव ने साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप चार तीर्थ की स्थापना की और समुदायगत साधना का सूत्रपात किया। एक तरफ हम बहुत अच्छी तरह साधना कर सकते हैं और दूसरी तरफ हम संक्लेश में जा सकते हैं। हमारी सारी दृष्टि दूसरों पर होती है तो हमारा मन संक्लेषित हो जाता है। भगवान महावीर ने उपदेश दिया कि अपने आपसे युद्ध करो। मतलब अपनी विचारधारा को शुद्ध बनाना है। अशुभ विचार आगे बढ़ जाएँगे तो वे हमें विपरीत दिशा में ले जाने वाले बनेंगे। अपने आपसे युद्ध करना कि मुझे प्रशंसा नहीं सुननी है। लोग हमारे मुँह पर प्रशंसा करते हैं, किंतु बाद में वे बुराई करते हैं। राग-द्वेष की साफ-सफाई करनी है तभी भीतर की सुगंध प्रकट होगी। संघर्ष नहीं, समन्वय का रास्ता अपनाएँ।''**

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने **'आया कहाँ से कहाँ है जाना ढूँढ़ ले ठिकाना'** गीत के साथ फरमाया कि आज धन के लिए अंधी दौड़ लगी हुई है, जबकि कुछ भी साथ जाने वाला नहीं है। एकमात्र धर्म, सच्चाई, ईमानदारी साथ जाने वाली है।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा., साध्वी श्री रविप्रभा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने **'राम गुरु सारे जग में छा गए'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। महेश नाहटा ने उभय गुरु-भगवंतों के दिव्य गुणों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया।

आदर्श विद्या निकेतन में व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए। दिगंबर जैन समाज के प्रमुख मनोहरलाल जी गदिया ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

क्रोधी के साथ रहना कोई पसंद नहीं करता

11 अप्रैल 2024, जैन स्थानक भवन, मंडफिया (सांवलिया जी)। प्रात: मंगलमय प्रार्थना श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. द्वारा करवाई गई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने **'लाखों को पार**

लगाया है भगवान तुम्हारी वाणी ने' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जब-जब आत्मा में क्रोध, मान, माया, लोभ का आवरण छा जाता है, तब-तब आत्मा कठोर बनती है। क्रोधी, अहंकारी के साथ कोई रहना पसंद नहीं करता है। धर्म श्रद्धा का योग मिलने पर आत्मा सरल बनती है। देव, गुरु, धर्म पर हमारी श्रद्धा अटूट होनी चाहिए तभी आत्मा सरल बन पाएगी। भगवान की वाणी सुनकर जीवन में बदलाव आना चाहिए। आत्मकल्याण की दिशा में कदम आगे बढ़ना चाहिए। लोग क्या कहेंगे उससे ऊपर उठना होगा। खाने-पहनने में ज्यादा दिमाग नहीं लगाना है।

शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा., साध्वी श्री रविप्रभा श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। प्रतिदिन 15 मिनट स्वाध्याय करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने मर्यादापूर्वक जीवन जीने की समझाइश विस्तारपूर्वक दी।

संतोषी सदा सुखी

12 अप्रैल 2024, पोटला (भदेसर)। आराध्य देव आचार्य भगवन् आदि ठाणा का मंगलमय पदार्पण जय-जयकारों के साथ श्री शिव जी सुखलाला के निवास पोटला में पधारना हुआ।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 का भादसोड़ा से विहार करते हुए श्री वर्धमान जैन स्थानक भवन, सांवलिया जी में जय-जयकारों के साथ पदार्पण हुआ। उपस्थित धर्मसभा में उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''मन की दृष्टि में असंतोष भरा हुआ है। सुख भीतर के संतोष में है। जिसके मन में संतोष है, वह हमेशा सुखी है। हमारे पास जो है, उसी में आनंद मनाना चाहिए। अपने-अपने उद्देश्यों को स्पष्ट करें, अपनी उपलब्धि से संतुष्ट रहें। गुरु अपने आपको जानने का उपदेश देते हैं। आत्मज्ञान जितना गहरा होगा उतनी ही बाहरी चंचलता खत्म होगी।''**

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने दुर्लभ मानव जीवन को धर्म आराधना से सफल बनाने की प्रेरणा दी।

शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा., श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 3 का सांवलिया जी से 12 कि.मी. का विहार कर समता भवन, भदेसर में पधारना हुआ।

पोटला में श्रद्धेय श्री राजन मुनि जी म.सा ने फरमाया कि जो कल्याण-मोक्ष को प्राप्त करना चाहता है तो आत्मा की शुद्धि करनी चाहिए। उन्हें प्रज्ञा, दया, संयम व ब्रह्मचर्य को धारण करते हुए आत्मरमणता की दिशा में कदम आगे बढ़ाना होगा। विभिन्न शुभ संकल्प हुए।

आत्मबल सर्वश्रेष्ठ

13 अप्रैल 2024, समता भवन भदेसर। नानेश पट्टधर आचार्य भगवन् आदि ठाणा का पोटला से भदेसर समता भवन में **'त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की'**, **'संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं'**, **'नाना गुरु ने क्या दिया, राम दिया भई राम दिया'**, **'बच्चा-बच्चा जहान का, भक्त है गुरु राम का'** आदि जयघोषों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। आचार्य भगवन् ने आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ प्रदान किया।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री नीरज मुनि जी म.सा. ने **'लाखों को पार लगाया है भगवान तुम्हारी वाणी ने'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि भगवान की वाणी को जो श्रवण करता है, आचरण करता है, पुरुषार्थ करता है, अमल करता है, उसका कल्याण अवश्य होगा। आत्मबल ही सभी बलों का सरदार है। साधक जब अपने आत्मबल

को समझ लेता है तो उन्नत मार्ग पर आगे बढ़ जाता है। हमारे अंदर वो शक्ति है कि हम सब कुछ कर सकते हैं। संथारा साधिका नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. ने अपने आत्मबल को जगाकर संथारा, दीक्षा का प्रसंग उपस्थित किया। संयम जीवन का एक क्षण भी कई वर्षों के श्रावक जीवन से बढ़कर है। साध्वीश्री जी तीनों मथोरथ पूर्ण करने की दिशा में आगे बढ़ गए।

साध्वी श्री अविचल श्री जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु के मुख से निकला हर वचन वरदान होता है। जो गुरु वचन सुनकर उन पर चल पड़े वो ही असल विद्वान होता है। संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. ने संघ, शासन व परिवार का गौरव बढ़ाया है। परिवार वालों ने संथारे की स्थिति जानकर आचार्य भगवन् से विनती की। भगवन् ने फरमाया कि संथारा लंबा चला तो! तो परिवार वालों ने कहा कि आपकी कृपा। श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा. ने गुरु आज्ञा को शिरोधार्य कर संथारा व दीक्षा दिलाई। शरीर की सेवा मत करो, आत्मा की सेवा करो। मुझे खाली हाथ नहीं जाना है, वो यही भावना भाते थे। नाना गुरु व राम गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आपश्री पूरे आत्मबल के साथ मोक्षमार्ग की ओर बढ़ गए। आचार्य भगवन् 27 वर्ष पूर्व भदेसर पधारे। उस समय मेरी दीक्षा संपन्न हुई। साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. की आचार्य गुरु राम के दर्शन की अभिलाषा तीव्र हुई, उनकी पुण्यवाणी का ही फल है कि आज भगवन् पधारे। भदेसर संघ सेवा के लिए सदैव तत्पर है।

साध्वी श्री शर्मिला श्री जी म.सा. ने **'खुशी के गीत सब गाओ, मेरे भगवान पधारे हैं'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आज का दिन हम सब के लिए पुण्य उदय का दिन है। भगवन् के दर्शन कर हम कृतार्थ हो गए। साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. अपने लक्ष्य को प्राप्त करे, यही मंगल भावना भावें।

बहू मंडल एवं बालिका मंडल द्वारा स्वागत गीत प्रस्तु किया गया। भदेसर संघ मंत्री ने कहा कि संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के 36वें संथारा दिवस पर 36 गुणों के धारी आचार्य प्रवर भदेसर में पधारे, यह संघ के लिए परम अहोभाग्य है। महेश नाहटा ने आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त आयामों को आत्मसात् करने की अपील की।

12 महीने में 12 आयंबिल, 12 एकासन, 12 उपवास के प्रत्याख्यान कई भाइयों ने ग्रहण किए। दोपहर में आचार्य प्रवर के पावन सान्निध्य में ज्ञानचर्चा व प्रश्नोत्तरी आदि धार्मिक आयोजन हुए।

कौन अपना, कौन पराया

14 अप्रैल 2024। प्रात: समता शाखा के अंतर्गत भाई-बहनों ने उत्साहपूर्वक समता आराधना की। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मानवता के मसीहा आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**अभी आप नाना गुरु की कहानी सुन रहे थे। सबकी अपनी-अपनी कहानियाँ होती हैं। कुछ बातें विशेष हुआ करती हैं। गर्भ में आना, जन्म लेना, पढ़ाई करना, शादी करना, बच्चे होना, यह सब सामान्य बातें हैं। कुछ विशेषताएँ तो जीवन को विशेष बना देती हैं। साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. ने जीवन के अंतिम पड़ाव में अपने जीवन को विशेष बना दिया। यहाँ से अनेक दीक्षाएँ हुई हैं। साध्वी श्री अविचल श्री जी म.सा. की दीक्षा की अपनी कहानी है। वीर पिता शांतिलाल जी मोदी के मन में भी हलचल थी कि दीक्षा की आज्ञा दूँ या न दूँ। कौन अपना, कौन पराया। जिसको मैं मेरा कहता हूँ, वो भी पराया है। अपना कोई नहीं है। यह बोध भीतर में बिठा लें। रामलीला के मंचन में अलग-अलग रोल (भूमिका) प्रस्तुत होते हैं, पर भीतर में जानते हैं कि यह मात्र खेल है, वास्तविकता नहीं। हम भी यही खेल खेल**

- **26 अप्रैल 2024 को भदेसर में मुमुक्षु सायली जी बाफना, निफाड़ की जैन भागवती दीक्षा संभावित होगी। तत्पश्चात् 20 वर्षों के बाद चित्तौड़गढ़ की वीर प्रसूता भूमि वीर महापुरुषों के पावन चरणों से पावन, पवित्र होगी।**
- **अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर चित्तौड़गढ़ में वर्षीतप पारणा महोत्सव एवं अभिमोक्षम् शिविर का आयोजन। महापुरुषों का सान्निध्य मिलना संभावित।**

रहे हैं। जब तक हम लक्ष्य नहीं बनाएँगे, तब तक खेल चलता रहेगा। नाना गुरु का जीवन बोलता है। हमारा जीवन नहीं मुँह बोलता है। स्वार्थ बुद्धि के कारण समस्या पैदा होती है।''

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि नाना गुरु का ननिहाल भदेसर में था। जब बचपन में नाना गुरु भादसोड़ा प्रवचन में छठे आरे का वर्णन सुनकर यहाँ पधारे तब बीच रास्ते में उन्होंने छठे आरे का चिंतन किया कि मुझे छठे आरे में नहीं जाना। बाद में अपने भाई के समक्ष दीक्षा के भाव प्रकट किए।

नए जमाने में नए लोग

15 अप्रैल 2024, आवरी माता। परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने संथारा साधिका नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. को पावन दर्शन प्रदान किया। साध्वी जी धन्य-धन्य हो गईं। वहाँ से आचार्य भगवन् का भदेसर से आवरी माता समता भवन में जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। **'संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं', 'बहती आई ज्ञान की गंगा, मन मंदिर को कर लो चंगा', 'भले पधारो आगमज्ञाता, हम सब पूछें सुख और साता'** आदि जयघोष वातावरण में गूँज रहे थे। बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. का सांवलिया जी से आवरी माता समता भवन में मंगल पदार्पण हुआ। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आजकल का बच्चा कैसा हो रहा है। पहले का बच्चा मजबूत, स्वस्थ रहता था। शहरों के बहुत से लोगों को नहीं पता कि सूर्योदय कैसा होता है। आज की आधुनिक पीढ़ी कहाँ जा रही है? नए जमाने के नए लोग हैं। जैसा जमाना, वैसे लोग।

दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा-समाधान आदि कार्यक्रम हुए। अलौकिक त्यागी महापुरुषों का सान्निध्य पाकर मेवाड़ की धर्मप्रेमी जनता निहाल हो रही है।

हे गुरुवर! वाणी आपकी मंगलकारी, दर्शन आपके कल्याणकारी।
शिक्षा आपकी हितकारी, हम सबके आप हो उपकारी।।

आजीवन शीलव्रत

अशोक जी जारोली, अंबालाल जी सुशीला बाई जारोली, श्यामलाल जी शर्मा, महिपाल जी शांता देवी जारोली, शांतिलाल जी बोथरा-गंगाशहर, अशोक जी निर्मला देवी सुराना, शांतिलाल जी पामेचा-सांवलिया जी, मदनलाल जी तिवारी, अंजू जी कोठारी-बीकानेर, राधेश्याम जी पामेचा, भैरूलाल जी अंजना देवी जारोली, केसरीमल जी मारू, रोशनलाल जी तारा देवी बाबेल-आवरी माता, बसंतीलाल जी टीपू देवी मट्ठा-आवरी माता, भंवरलाल जी सूरज देवी भंसाली-आवरी माता, संपत जी दशोरिया

-महेश नाहटा

अपने आचार्यदेव को जानें

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष को **'महत्तम शिखर'** के रूप में मनाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत पाठकों को आचार्यश्री के जीवन से परिचित कराने के लिए उनका जीवन चित्रण प्रस्तुत किया जा रहा है। यह चित्रण 29-30 मार्च 2024 समाचार अंक से प्रारंभ हुआ है, जो 12 माह तक श्रमणोपासक के समाचार अंकों में प्रकाशित किया जाएगा। इसके अंतर्गत आचार्यदेव का संपूर्ण जीवन- **बाल्यकाल, युवावस्था, मुनि प्रवर, युवाचार्य एवं आचार्य अवस्था** आदि विभिन्न पड़ावों का वर्णन किया जाएगा। इन पड़ावों के आधार पर पाठकों के समक्ष कुछ प्रश्न प्रस्तुत किए जाएँगे, जिनके उत्तर पाठकों को भरकर भिजवाने होंगे। इस शृंखला के अंतिम पड़ाव के रूप में **फरवरी 2025** के अंक में वर्षभर में दिए गए संपूर्ण चित्रण पर एक मुख्य प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी, जिसमें वर्षभर में प्रकाशित विभिन्न पड़ावों पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे। अत: पाठकों से आग्रह है कि 29-30 मार्च 2024 समाचार अंक से आचार्य प्रवर के जीवन पर प्रकाशित संपूर्ण सामग्री संग्रहित करके रखें।

****** दृढ़निश्चयी, दृढ़संयमी आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ******

पाँच बहनों एवं दो भाइयों के भरे-पूरे परिवार में आपका शैशव निखरने लगा। गवरा बाई धार्मिक क्रियाओं एवं पारिवारिक कार्यों में उद्यमी महिला थी। नेमीचंद की मनोवृत्ति सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी से ओतप्रोत थी। ज्येष्ठ भ्राता मांगीलाल भी सहजता, स्पष्टता एवं नियमितता का मूर्त रूप था। श्रेष्ठ बीज के बिना कभी श्रेष्ठ फल की परिकल्पना नहीं की जा सकती। माता-पिता की उच्च गुणवत्ता के बिना संतान में वैशिष्ट्य की कल्पना करना व्यर्थ है। अत: जैन शास्त्रों में साधु एवं विशेषत: आचार्य के लिए मातृपक्ष एवं पितृपक्ष की शुद्धि पर विशेष बल दिया गया है। गवरानंदन राम उच्च एवं कुलीन, धार्मिक खानदान से प्राप्त संस्कारों के परिणामस्वरूप एवं पूर्वजन्म के प्रभाव से धर्म के प्रति तीव्र रुचि रखते थे। राम की मेधा भी बहुत तीव्र थी एवं आपने विद्यालयी अध्ययन प्रारंभ करने से पूर्व ही गणित के अनेक पहाड़े सीख लिए। गणित उस समय से लेकर आज तक आपका प्रिय विषय रहा है। गणित की प्रियता ने आपके भीतर समस्याओं को हल करने की ऐसी प्रज्ञा विकसित कर दी कि जीवन पथ पर उत्पन्न होने वाली अनेक समस्याओं का हल आपके बुद्धिबल से शीघ्र ही हो जाता है। बचपन के मित्रों के साथ के एक खेल में जब सभी अपने-अपने भविष्य की बातें कर रहे थे उस समय आपने दृढ़ता से कहा कि मैं तो दीक्षा लेकर साधु बनूँगा। अपनी बात का कथन दृढ़ता एवं मजबूती के साथ करने का अपना गुण आज भी उसी प्रकार कायम है। आज भी प्रवचन एवं ज्ञानचर्चा में भय एवं संकोच से रहित रहकर सैद्धांतिक तथ्यों की सशक्त प्रस्तुति श्रोताओं के शिथिल मन में एक नई ऊर्जा एवं बल उत्पन्न कर देती है। समय की परतों को चीरकर देखें तो एक सत्य उभरकर सामने आ जाता है कि दु:खों की भूमि से उत्पन्न होकर एवं उसी से रस खींच-खींचकर ही महापुरुषों के जीवन का सुंदर और स्व-पर को सुखदायी कल्पवृक्ष पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ करता है। इस संसार में यदि दु:ख नहीं रहा होता तो जीवन दर्शन के अनेक पहलु अनछुए रह जाते। कष्टरूपी गोताखोरों में ही इतनी शक्ति है कि वे जीवन सागर में गहरे जाकर भीतर छिपे अनमोल रत्नों को बाहर निकालकर रत्नाकर का रत्नाकरत्व प्रमाणित कर देते हैं।

बालक राम भी चर्म रोग से ग्रसित हो गया। अनेक उपचार किए पर सब व्यर्थ। प्रकृति माता में जन्मदात्री माता से भी अधिक निर्माणकारिणी शक्ति होती हैं। जब तक सही औषध नहीं मिल पाती, तब तक प्रकृति संतुष्ट कैसे हो सकती थी। परिवर्तन के लिए दो तत्त्वों की अपेक्षा होती है- प्रयत्न और धैर्य। प्रयत्न तो हम सभी करते हैं, लेकिन धैर्य के दुर्गम मार्ग से हम अधिकतर फिसल जाते हैं और परिणाम आता है- असफलता। धैर्य का गुण हमें प्रकृति से सीखना चाहिए। प्रकृति कभी जल्दबाजी नहीं करती, लेकिन फिर भी सबकुछ समय पर संपन्न हो जाता है। राम के निर्माण में प्रकृति धैर्यपूर्वक लगी हुई थी। अंतत: सकारात्मक परिणाम समक्ष आया। आचार्य पूज्य श्री जवाहर द्वारा प्रदत्त प्रवचन 'अनाथ भगवान' (सनाथअनाथ निर्णय) में अनाथीमुनि का जीवन-चरित्र पढ़ते हुए राम के मन में भी संकल्प उभरा कि यदि मेरा रोग ठीक हो गया तो मैं दो वर्षों के भीतर-भीतर दीक्षा ले लूँगा। सत्यनिष्ठ इनसान जो कुछ ज्ञान प्राप्त करता है, उसे अपने जीवन में ढालने का पुरुषार्थ करता है, जबकि साधारण इनसान ज्ञान को मात्र मस्तिष्क की खुराक बनाता है, आचरण का ईंधन नहीं।

संकल्प की शक्ति अमाप होती है। संसार में ऐसा कौन-सा कार्य है जो संकल्प से सिद्ध नहीं होता। सफलताएँ संकल्पशाली व्यक्तियों के चरणों में अठखेलियाँ करती हैं। राम का संकल्प परिणाम रंग लाया एवं अनेक औषधियों को अंगूठा दिखा चुका रोग संकल्प मात्र से उपशांत हो गया।

भूलें जीवन की सबसे बड़ी शिक्षिकाएँ हैं। भूल से प्राप्त होने वाली एक बार की असफलता मनुष्य को अनुभव की जिस गहराई तक पहुँचा देती है, सैकड़ों बार की असफलताओं की खुशियाँ कभी उस गहराई तक नहीं पहुँचा सकतीं। महापुरुषत्व किसी माँ की कुक्षि से जन्म नहीं लेता, महापुरुषत्व जीवन के दुर्लभ अनुभवों की पैदाइश हुआ करता है। महापुरुषों के महापुरुषत्व की भूमिका का अध्ययन करें तो वह भूलों एवं असफलताओं से भरा मिलेगा। जीवन के प्रारंभकाल की भूलें बचपन में लगने वाले उन टीकों के समान हैं जो जीवनभर के लिए उस प्रकार की भूल या रोग से प्रतिरोधी शक्ति का निर्माण कर देती है। दो वर्ष बीत गए आजकल पर टालते हुए और दीक्षा नहीं हुई। जैसे ही दो वर्ष की संकल्प सीमा पूर्ण हुई पुन: चर्म रोग भयावह रूप लेकर उभरा। प्रकृति मानो किसी देवी की तरह प्रतिबोध देने को संकल्पित थी। जैसे ही रोग ने भयावह रूप लिया कि राम को अपनी भूल का स्मरण हो गया कि मैंने संकल्प सीमा के भीतर दीक्षा नहीं ली। अब आपका मन दीक्षा हेतु तत्पर हो गया।

आचार्य श्री नानेश का चातुर्मास जयपुर में था। समझ की परिपक्वता के बाद पहली बार राम ने आचार्य श्री नानेश के दर्शन करने का सौभाग्य जयपुर में प्राप्त किया एवं यहीं भवबंधन से मुक्ति का मूल सम्यक्त्व रत्न गुरु के श्रीमुख से स्वीकार किया। संयम की भावनाओं को एक नया वेग मिला। यहाँ से आसाम जाकर पुन: मुमुक्षु राम गुरुचरणों में उपस्थित हुए एवं ज्ञानार्जन करने लगे।

गृहस्थ जीवन एवं मुनि जीवन के बीच का पथ है वैराग्य। वैराग्यकाल कुछ क्षणों से लेकर अनेक वर्षों तक हो सकता है। यह समय जीवन के रूपांतरण का है। विषयों की ओर लपकती इंद्रिय अश्वों को ज्ञान दिशादर्शक थपथपाहट से आत्मशोध के मार्ग पर मोड़ देने की वेला है यह। संयम के प्रासाद की मजबूत नींव का निर्माण इसी समय में हुआ करता है। गृहस्थ भाव एवं संयम भाव की सुखदता की रस्साकसी में कभी एक ओर तो कभी दूसरी ओर झुकते मन को, शांत एकांत क्षणों में उपस्थित होकर, सभी प्रकार के प्रलोभनों एवं दबावों से मुक्त होकर मानव जीवन के वास्तविक विराट उद्देश्य की दिव्यज्योति पर अपलक नेत्र टिकाए हुए, सर्वज्ञों का नि:स्वार्थ उपदेश, प्रतीयमान एवं वास्तविक सुख का भेद, अल्पकालिक सुखाभास एवं शाश्वत स्थायी सत्यसुख का फर्क, दूसरों पर आधारित अत: डोलायमान सुख एवं स्वयं पर आधारित अत: सुनिश्चित सुख

का अंतर इत्यादि विषयों पर गहन चिंतन, मनन एवं मंथन करके संयम की अनिवर्चनीय सुखानुभूति पर स्थिर करके संयम स्वीकार के मार्ग एवं संयम पथ पर आने वाले कष्टों एवं बाधाओं का सामना करने के लिए अपनी समग्र आत्मशक्तियों को घनीभूत करने का समय होता है वैराग्यकाल। मुमुक्षु राम ने वैराग्यकाल से ही स्वयं को साधना प्रारंभ कर दिया। भोजन में अपने प्रियतम आलु का आपने त्याग कर दिया। एक स्थान पर कुछ श्रावकों ने परीक्षा लेने के लिए आपको थली प्रदेश में धूप से तपते रेतीले धोरों पर खड़े होने को कहा। मुमुक्षु राम बिना कुछ विचारे गर्म बालु पर जाकर खड़े हो गए एवं तब तक खड़े रहे जब तक परीक्षा करने वाले श्रावकों ने पुन: बुलाया नहीं। इंद्रिय विजय ही संयमी सुख का केंद्र बिंदु है। इंद्रियों में आसक्त व्यक्ति कदापि सच्चे आत्मसुख का अनुभव नहीं कर सकता।

माघ शुक्ल द्वादशी, संवत् 2031 को मुमुक्षुओं की दीक्षा होने वाली थी। कुछ ही दिन बचे थे। मुमुक्षु राम के भीतर आत्मध्वनि उभरी कि तुम्हें भी इसी तिथि को दीक्षा लेनी है। फिर क्या था आपने जगह-जगह पत्र, तार द्वारा समाचार दे दिए कि मेरी दीक्षा इस तिथि की होनी निश्चित है। पहली गाड़ी से शीघ्र पहुँचे। हालांकि अभी तक आपके पारिवारिकजनों ने आपको दीक्षा की अनुमति नहीं दी थी, लेकिन आप संकल्प के धनी हैं। आपका आत्मविश्वास बड़ा प्रबल है। पूज्य आचार्य श्री जवाहर ने फरमाया है कि हमारी अनेक भूलों में से एक बहुत बड़ी भूल यह है कि हम अपनी अंतरात्मा की आवाज पर ध्यान नहीं देते है। जिन साधकों ने अपनी अंतर्ध्वनि को सुनने का अभ्यास किया है, जो अपने भीतर की आवाज को पहचानते हैं, उनका आत्मविश्वास बड़ा सशक्त एवं प्रभावी होता है। मुमुक्षु राम का संकल्प रंग लाया एवं पारिवारिकजन भी बहुत कशमकश के बाद अंतत: राजी हुए। जन्मस्थली देशनोक आज दीक्षास्थली में परिणत हो गई।

महासाधक आचार्य श्री नानेश से दीक्षा एवं संयम की शिक्षा पाकर गुरु सेवा एवं गुरु के चित्त को प्रसन्न रखना मुनिराज का उद्देश्य बन गया। अध्ययनादि कार्य भी चलता रहा। अपनी पैनी सूझ-बूझ एवं कार्य कौशल से थोड़े ही दिनों में मुनि राम गुरु नाना के हृदय में बस गए एवं तीन-चार वर्ष की स्वल्प दीक्षा पर्याय होने पर भी गुरु नाना ने संघीय व्यवस्थाओं संबंधी अंतरंग कार्य मुनि राम को सौंप दिए।

मुनि राम नि:स्पृह एवं फक्कड़ संत थे। जीवन स्पष्ट एवं खुली किताब जैसा। जैसा भीतर वैसा बाहर, दिखावे एवं प्रदर्शन से दूर, प्रशंसा की घुड़-दौड़ में आप कभी शामिल नहीं हुए। नाम की चाह के बिना काम को सही तरीके से पूर्ण करना ही आपका ध्येय था। बहुत खेद का विषय है कि आज सर्वस्व त्यागी मुनियों को भी प्रशंसा एवं यश की अतृप्त लालसा ने अपने राक्षसी शिकंजे में दबोच लिया है। जो गुण साधना के विकास के प्रतीक है या परिणाम है या कर्मनिर्जरा के कारण है। यश एवं कीर्ति ने उन सबको अपना पेट बढ़ाने के लिए अपना भोजन बना लिया है। विशिष्ट, विद्वता, कठिन तपस्या, कठोर क्रिया, उग्रविहार, मधुर गायन, प्रेरक प्रवचन, शिष्य समुदाय की बड़ी संख्या, धर्म प्रेरणा कौशल इत्यादि जिनका उपयोग राग-द्वेष को नष्ट करने में, समत्व को विकसित करने में, जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होकर सिद्धत्व प्राप्त करने में होना चाहिए, किंतु जब हमारे कान स्तुति एवं प्रशंसा के लोलुप बन जाते हैं तो साधक मोक्ष को पीठ दिखाकर प्रशंसात्मक तुच्छ शब्द पाने हेतु ही इन गुणों का उपयोग करने लगता है। मुनि राम का जीवन कुछ अलग ही किस्म की नि:स्पृहता लिए हुए था। आपने नाम एवं यश को कभी सन्मुख नहीं रखा एवं आत्मगुणों की अभिवृद्धि करते हुए निरंतर गुरु एवं शासन की सेवा में स्वयं को लगाए रखा। अहमदाबाद चातुर्मास में आपने मासखमण (एक महीने तक आहार त्याग करना) का तप किया। शासन संबंधी अंतरंग कार्य करते हुए भी अन्य आगमों के अध्ययन में तत्पर रहते।

प्रश्नावली

एक शब्द में उत्तर देवें –

प्रश्न 1. श्रेष्ठ बीज के बिना किसकी परिकल्पना नहीं की जा सकती? .....

प्रश्न 2. भरे-पूरे परिवार में कितने भाई व बहनें थीं? .....

प्रश्न 3. बचपन के मित्रों के साथ खेल में राम ने दृढ़ता के साथ क्या कहा? .....

प्रश्न 4. संसार में यदि दुःख नहीं होता तो क्या अनछुए रह जाते? .....

प्रश्न 5. प्रकृति माता में जन्मदात्री माता से क्या अधिक होती है? .....

प्रश्न 6. किसका जीवन चारित्र पढ़ते हुए राम के मन संकल्प उभरा? .....

प्रश्न 7. संकल्पशाली व्यक्तियों के चरणों में कौन अठखेलियाँ करती है? .....

प्रश्न 8. महापुरुषों के महापुरुषत्व की भूमिका का अध्ययन करें तो वह किससे भरा मिलेगा? .....

प्रश्न 9. समझ की परिपक्वता के बाद राम को पहली बार आचार्य श्री नानेश के दर्शन करने का सौभाग्य कहाँ प्राप्त हुआ? .....

प्रश्न 10. गृहस्थ जीवन एवं मुनि जीवन के बीच का पथ कौनसा है? .....

प्रश्न 11. इंद्रियों में आसक्त व्यक्ति कदापि किसका अनुभव नहीं कर सकता? .....

प्रश्न 12. मुमुक्षु राम ने जगह-जगह पत्र एवं तार द्वारा कौनसी तिथि को अपनी दीक्षा होनी सुनिश्चित बताई? .....

प्रश्न 13. महासाधक आचार्य श्री नानेश से दीक्षा एवं संयम की शिक्षा पाकर मुनिराज का क्या उद्देश्य बन गया? .....

प्रश्न 14. मुनि राम ने चातुर्मास में कौनसे स्थान पर मासखमण तप किया? .....

प्रश्न 15. मुनि राम का जीवन कुछ अलग ही किस्म की लिए हुए था? .....

उत्तर भिजवाने हेतु WhatsApp No. : 9314055390

Email : shramanopasak @sadhumargi.com

अंतिम तिथि
20 मई 2024

> “इस संसार में बहुत से पदार्थ भरे पड़े हैं- ताँबा, पीतल, कांसा, लोहा आदि, किंतु चुंबक घुमेगा तो किसे आकृष्ट करेगा? केवल लोहे को। वैसे ही हम जहाँ भी हों, कहीं भी घूमें, किंतु जो जीवन के लिए उपयोगी है उसे ही आकर्षित करें। इस प्रकार गुरु का अवतरण अपने भीतर कर लें। गुरु के ज्ञान से, लौ से रगड़ करेंगे तो हमारे भीतर भी ज्ञान पैदा होगा। आप कहेंगे हमारे भीतर दीप कहाँ है, बाती कहाँ है? भले ही नहीं है, पर जैसे एरंड की लकड़ी या चकमक पत्थर के दो टुकड़े जब आपस में रगड़े जाते हैं तो उस रगड़ से आग पैदा हो जाती है। विद्युत के लिए भी कहा गया है कि संघर्ष-रगड़ से आग पैदा हो जाती है। उसी प्रकार आवश्यक है कि गुरु के ज्ञान से हमारे ज्ञान की रगड़ हो जाए।
>
> **-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.**

राम चमकती भानु समाना

विविध समाचार

✧✧✧✧✧✧✧ मेवाड़ अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

आयड़ (उदयपुर)। शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 का 20 मार्च को भूपालपुरा से आयड़ स्थित ऋषभ भवन में मंगल प्रवेश हुआ। आपश्री जी के सान्निध्य में प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन, दोपहर में धार्मिक कक्षा और रात्रि प्रतिक्रमण व संवर आराधना तथा दोपहर में ज्ञानार्जन का ठाठ लगा रहा। साध्वी श्री सौम्यसुगंधा श्री जी म.सा. द्वारा प्रार्थना पश्चात् प्रवचन सभा में श्री निर्वेद श्री जी म.सा. ने विनीत शिष्य की विशेषताओं एवं लाभ पर प्रकाश डाला।

शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. ने श्रावक जीवन के छह आवश्यक एवं इनसे होने वाले लाभ पर सारगर्भित विवेचना फरमाई। फाल्गुनी चातुर्मासिक पर्व के दौरान दोपहर में महिलाओं के लिए **'बिंदु से सिंधु'** विषय पर त्रि-दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 45 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया। साध्वीवर्याओं की विशेष प्रेरणा से रात्रि संवर की आराधना के साथ-साथ विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। रविवारीय समता शाखा का आयोजन भी किया गया। आपश्री जी ने नौ दिवस आयड़ क्षेत्र में धर्म लाभ प्रदान कर 28 मार्च को गणेश नगर क्षेत्र की ओर विहार किया। **-दीपक मोगरा**

उदयपुर। आचार्य श्री नानेश ध्यान केंद्र, भारतीय प्राकृत स्कॉलर्स सोसायटी तथा जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 5 से 7 अप्रैल को समीक्षण ध्यान योग शिविर आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 60 शिविरार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर आयोजक संस्थाओं के पूर्व संयोजक, अध्यक्ष, महामंत्री सहित अनेक गणमान्यजनों ने अपने भाव व्यक्त किए। योग शिक्षक डॉ. सत्यनारायण शर्मा ने समीक्षण योगासन, प्राणायाम आदि का अभ्यास कराया। **-डॉ. सत्यनारायण शर्मा**

उदयपुर। साधुमार्गी जैन संघ द्वारा 14 अप्रैल को **'राम आए थे'** भव्य कार्यक्रम विद्या निकेतन सेक्टर-4 में आयोजित किया गया। इसके अंतर्गत प्रात: समता शाखा, फिर **'राम आए थे'** विषय पर साध्वीवर्याओं का उद्बोधन एवं उसके बाद **'एक एक मिल बना संघ यह'** महत्तम कार्यशाला आयोजित की गई।

आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का चातुर्मास वर्ष 2022 में उदयपुर में संपन्न हुआ था। इस चातुर्मास ने इतिहास रच गया था। उस वर्ष को उदयपुरवासी कभी विस्मृत नहीं कर पाएँगे। उन्हीं लम्हों के साथ यह आयोजन किया गया। आयोजन में 1000 से अधिक साधुमार्गी सदस्यों की उपस्थिति रही।

साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में फरमाया कि संसार में विश्वास का बड़ा महत्त्व है। हम सभी की आस्था राम गुरु में है, जो विश्वास के सहयोग से है। भक्त प्रभु से माँगते-माँगते नहीं थकता एवं प्रभु अपने भक्तों को देते-देते नहीं थकते।

जावरा से पधारे ओजस्वी वक्ता अतुल जी पगारिया ने कहा कि आज का आयोजन बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। **'राम आए थे'** कार्यक्रम आयोजित किया है, पर राम क्यों आए थे? उस उद्देश्य को स्मृति में रखकर सभी को अपना आध्यात्मिक उत्थान करना है।

आयोजन में ज्ञान, दर्शन, तप, त्याग के संकल्प पत्र के साथ ही **'अनुभूति के क्षण - राम गुरु के संग'** नामक एक पत्र भी सभी सदस्यों ने लिखा, जिसमें राम गुरु के प्रति अपनी आस्था को व्यक्त किया गया।

साधुमार्गी जैन संघ के मंत्री ने नि:शुल्क स्थान उपलब्ध करवाने हेतु विद्या निकेतन प्रशासन को

धन्यवाद के साथ आयोजन को सफल बनाने हेतु समता युवा संघ की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

-अल्पेश धाकड़

✧✧✧ बीकानेर-मारवाड़ अंचल ✧✧✧

देशनोक। शासन दीपक श्री चंद्रेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में फाल्गुनी चातुर्मासिक पर्व पर त्याग-तप सहित चातुर्मासिक पक्खी की आराधना की गई। संतवृंद का नोखा की दिशा में विहार हुआ है।

महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा सहित अनेक पदाधिकारियों का प्रवास के क्रम में यहाँ पधारना हुआ। आपने महिला समिति की विभिन्न प्रवृत्तियों एवं महत्तम महोत्सव से जुड़ने की प्रेरणा दी।

मुमुक्षु भाई सौरभ जी संचेती एवं मुमुक्षु बहन प्रणिता जी बाफना का क्रमशः 30 एवं 31 मार्च को पधारना हुआ। आप द्वय का भव्य अभिनंदन संघ की ओर से किया गया।

शासन दीपिका साध्वी श्री निष्ठा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का 03 अप्रैल को पदार्पण हुआ। साध्वी श्री भवपार श्री जी म.सा. का दीक्षा के पश्चात् प्रथम बार अपनी जन्मभूमि पर आगमन होने से स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं में विशेष उल्लास देखा गया। साध्वीवृंद के तीन दिवसीय प्रवास को क्रमशः सामायिक दिवस, स्वाध्याय दिवस एवं मौन दिवस के रूप में मनाया गया। **-आशीष बुच्चा**

लूणकरणसर। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रशांत श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में 17 से 21 मार्च तक प्रार्थना, प्रवचन, स्वाध्याय एवं तप-त्याग का ठाठ लगा रहा। इस दौरान श्रावक-श्राविकाओं ने दर्शन-सेवा, ज्ञानचर्चा, प्रतिक्रमण, एकासन आदि में बढ़-चढ़कर भाग लिया। समता भवन में लगभग प्रतिदिन विभिन्न धार्मिक आयोजन हुए। एकासन की लड़ी का क्रम चला।

-ओमप्रकाश बरड़िया

उदयरामसर। शासन दीपक श्री विनय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में समता भवन में प्रार्थना, प्रवचन एवं ज्ञानार्जन का ठाठ लगा रहा। उभयकाल प्रतिक्रमण एवं रात्रि ज्ञानचर्चा व स्वाध्याय में युवाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। 12 मार्च को आचार्य श्री रामेश का युवाचार्य पदारोहण दिवस एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. का उपाध्याय पदारोहण दिवस अपूर्व धर्मोद्योत के साथ मनाया गया। फाल्गुनी चातुर्मासिक पर्व में आस-पास सहित अनेक क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने पधार कर धर्माराधना का लाभ लिया। एकासना, बियासना, आयंबिल, उपवास, तेला आदि विभिन्न तपस्याओं के साथ विजय कुमार जी सांड, देशनोक वालों के 31 मार्च को मासखमण तप पूर्ण हुआ। सायर देवी रतनलाल जी बोथरा ने आजीवन शीलव्रत ग्रहण किया। मुमुक्षु भाई सौरभ जी संचेती एवं मुमुक्षु बहन प्रणीता जी बाफना ने दर्शन-सेवा का लाभ लिया। एक अलग कार्यक्रम में आप द्वय का भावभीना सम्मान संघ द्वारा किया गया। **-नवरतन सिपानी**

गंगाशहर-भीनासर। महत्तम महोत्सव के अंतर्गत जैन जवाहर विद्यापीठ में महिला मंडल की ओर से केशरिया कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 30 महिलाओं ने भाग लिया। 07 मार्च को मधुर भजनों के कार्यक्रम के दौरान प्रतियोगिता करवाई गई। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को सम्मानित किया गया।

शासन दीपक श्री रमेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-4 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में 12 मार्च आचार्य श्री रामेश युवाचार्य पदारोहण दिवस एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के उपाध्याय पदारोहण दिवस को तप, स्वाध्याय, सामायिक सहित मनाया गया। प्रवचन पश्चात् सामूहिक नवकार मंत्र जाप किया गया।

उपस्थित चारित्रात्माओं सहित अनेक वक्ताओं ने महापुरुषों का गुणगान किया। **-प्रमिला देवी बोथरा**

✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

ब्यावर। श्री नरेंद्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कंवर जी

म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में 24 मार्च को फाल्गुनी चातुर्मासिक पर्व तप-त्याग, संवर-पौषध के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर श्री शोभन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमको जीवन का उद्देश्य पता होना चाहिए। भूत, भविष्य की चिंता छोड़कर वर्तमान में जीना सीखें। वर्तमान में जीने वाला वर्धमान बनता है।

साध्वी श्री पराग श्री जी म.सा. ने फरमाया कि अपने अहंकार को छोड़कर रिश्तों को बचाया जा सकता है। होली हमें यही संदेश देती है कि किसी का अपमान, तिरस्कार नहीं करें। एक-दूसरे की टांग खिंचाई नहीं कर सहयोग करके कर्मों की निर्जरा कर सकते हैं। 25 मार्च को धुलंडी के प्रसंग पर आपश्री जी ने फरमाया कि आज के दिन आत्मा पर जो पाप का मैल चढ़ा है उसे एवं अन्य दुर्व्यसनों को हटाना है। आपश्री जी ने ***'होली खेलिए सज्जन सब मिलकर'*** भजन प्रस्तुत कर सभी को आत्मविभोर कर दिया।

साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि हमें जन्म-मरण से मुक्त होना है तो महावीर के पथ पर चलना होगा।

अनेक जनों ने पौषध, संवर किए व प्रतिक्रमण के बाद श्री शोभन मुनि जी म.सा. ने क्षमायाचना का प्रसंग उपस्थित किया। **-नोरतमल बाबेल**

✧✧✧✧✧✧ मध्य प्रदेश अंचल ✧✧✧✧✧✧

इंदौर। आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव शिखर वर्ष के उपलक्ष्य में 21 फरवरी को युवा पीढ़ी के आध्यात्मिक विकास हेतु यंग श्रुतम् क्लासेज का शुभारंभ शासन दीपिका साध्वी श्री श्रीकांता श्री जी म.सा. के आशीर्वचन पश्चात् वरिष्ठजनों, पदाधिकारीगणों, सदस्यों एवं महिला मंडल की उपस्थिति में किया गया। इस कक्षा में 18 से 45 वर्ष के ज्ञानपिपासु ज्ञानार्जन कर रहे हैं एवं अन्य भी लाभान्वित हो रहे हैं। प्रत्येक रविवार को समता शाखा के पश्चात् इस कक्षा का आयोजन होता है, जिसमें चारित्रात्माओं का सान्निध्य भी प्राप्त हो रहा है। इस अवसर पर संघ, महिला मंडल एवं समता युवा संघ के संरक्षक, अध्यक्ष, मंत्री सहित अनेक महानुभावों ने शुभकामनाएँ दीं।

-आभा डूंगरवाल

✧✧✧ कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल ✧✧✧

अलसूर, बेंगलुरु। शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में फाल्गुनी चातुर्मासिक पर्व धर्म-ध्यान, त्याग-तप के साथ महावीर भवन में मनाया गया। इस अवसर पर साध्वीवर्या के श्रीमुख से '**जन से जैन और जैन से जिन**' विषय पर सात दिवसीय प्रवचन शृंखला में श्रावक-श्राविकाओं ने अपूर्व धर्म लाभ प्राप्त किया। प्रतिदिन प्रात:, मध्याह्न एवं रात्रि कक्षाओं का सफल आयोजन हुआ। युवा संघ ने होली नहीं खेलकर आदर्श उपस्थित किया। श्री श्वेतांबर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ की ओर से मंत्री ने कृतज्ञता के भाव व्यक्त करते हुए साध्वीवर्याओं के सान्निध्य को अविस्मरणीय बताया। **-अभय कुमार बांठिया**

बालक आगम ने स्वाध्यायी सेवा से किया गौरवान्वित

खिरकिया। समता संस्कार पाठशाला के होनहार 15 वर्षीय बालक आगम रितेश जी राँका ने इस बार फाल्गुनी चातुर्मासिक पर्व पर तीन दिन समता प्रचार संघ के माध्यम से कानवन (म.प्र.) में स्वाध्यायी सेवा देकर धर्म-ध्यान, तप-त्याग का अपूर्व ठाठ लगाया।

बालक आगम ने तीनों दिन धर्मसभा में गद्य और पद्य में प्रवचन दिया। पौषध में भी पूर्ण ऊर्जा के साथ सभी गतिविधियाँ संपन्न करवाई। बालक आगम ने रियल रामेश रत्नम् प्रतियोगिता में रतलाम में प्रथम स्थान एवं नीमच में हुई प्रतियोगिता में देशभर में दूसरा स्थान स्थान प्राप्त किया था।

-पूजा शाह

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

द्वितीय कार्यसमिति बैठक

मंगलवाड़ चौराहा, 25 मार्च 2024, दोपहर 12.15 बजे। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की अध्यक्षता में सत्र 2023-25 की द्वितीय कार्यसमिति बैठक यू.एस. ओस्तवाल साइंस, आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, मंगलवाड़ चौराहा (राजस्थान) में संपन्न हुई, जिसका सत्रारंभ लगभग 112 सदस्यों की उपस्थिति में नवकार मंत्र के सामूहिक उच्चारण एवं संघ समर्पणा गीत के सहगान के साथ हुआ।

राष्ट्रीय महामंत्री ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हमें संघ सेवा का यह सुअवसर मिला है। संघ के प्रत्येक सदस्य को इससे जोड़ते हुए संघ को विकास की दिशा में अग्रसर करना है। उन्होंने निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए समग्र रूप से प्रयास करने हेतु प्रेरणा दी। आपने 20 जनवरी 2024 को जावद में संपन्न विगत कार्यसमिति बैठक का कार्यवृत्त, संघ सदस्यता, संघ प्रवृत्तियों एवं विकास का प्रगति प्रतिवेदन PPT के माध्यम से प्रस्तुत किया, जिस पर संपूर्ण सदन ने स्वीकृति प्रदान की।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने आगामी वर्ष 2024-25 के लिए वार्षिक बजट प्रस्तुत किया, जिसे सदन ने सर्वानुमति से पारित किया। तदुपरांत अध्यक्षीय अनुमति से विविध विषयों (जैसे- श्रमणोपासक व साहित्य प्रभारी की नियुक्ति, जैन समाज जमीन आवंटन, धार्मिक जगह से 200 मीटर क्षेत्र में अंडा, मांस, शराब की दुकानें बंद करवाने हेतु पत्र, संघ साधक डाटा को ग्लोबल कार्ड से जोड़ना, लाभम् व सिद्धिम् समुद्देशीय संस्थाओं में ट्रस्टीगण का चयन, विहार सेवा संयोजन सदस्यता का परिचय श्रमणोपासक में देना, संघ संपत्ति आनंद सागर की चार दीवारी बनवाने इत्यादि अन्य कई विषयों) पर चर्चा की गई।

इसी क्रम में समता जनकल्याण प्रन्यास के अंतर्गत ऑपरेशन के अलावा इंप्लांट सर्जरी व रेगुलर मेडिसिन आदि की सहायता व समता जनकल्याण प्रन्यास के बैंक एकाउंट में नए पदाधिकारियों के हस्ताक्षर सम्मिलित करने के प्रस्ताव पर भी सदन ने स्वीकृति प्रदान की।

प्रवृत्तिवार प्रस्तुति के क्रम में साहित्य संयोजक व सभी उपस्थित पदाधिकारीगणों द्वारा **'नयतां वरः'** नवीन साहित्य का विमोचन किया गया। तत्पश्चात् दानपेटी योजना, धर्मपाल प्रचार-प्रसार समिति, इदं न मम, साहित्य विभाग आदि प्रवृत्तियों के संयोजकों ने अपनी प्रस्तुति दी।

आंचलिक प्रतिवेदन के रूप में मध्य प्रदेश अचंल, जयपुर-ब्यावर अंचल, बीकानेर-मारवाड़ अंचल के उपाध्यक्ष/मंत्रीगणों से अंचलवार समीक्षा सदन में प्रस्तुत की। महत्तम शिखर के बजट पर निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने अपने विचार रखे।

राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने अपने उद्बोधन में कहा कि संघ एक केंद्रीयकृत प्रणाली के अनुसार कार्य कर रहा है, जिसमें संघ की सभी प्रवृत्तियों, सदस्यों एवं पदाधिकारियों के बीच समन्वयात्मक रूप से कार्य संपादित हो सके इसके लिए आप सभी अपना सहयोग प्रदान करावें।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं नानेश निकेतन, रतलाम के संयोजक जी ने कहा कि गुरुदेव की महती कृपा से होली चातुर्मास मंगलवाड़ चौराहा संघ को प्राप्त हुआ, यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। आपने महत्तम शिखर को सफल बनाने हेतु भी अपने विचार रखे।

बैठक के अंत में राष्ट्रीय सहकोषाध्यक्ष ने आभार अभिव्यक्ति के साथ संघ की भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए सभी सदस्यों/परिवारों को संघ के प्रत्येक गतिविधि से जुड़ने हेतु प्रेरित किया। तत्पश्चात् संघ समर्पणा गीत के सामूहिक गान के साथ बैठक का समापन हुआ।

-राष्ट्रीय महामंत्री

दानपेटी योजना

नियमित दान बने स्वभाव

मंगलवाड़ चौराहा में 25 मार्च 2024 को आयोजित श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की कार्यसमिति बैठक के दौरान संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने दानपेटी योजना पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि संघ की प्रत्येक प्रवृत्ति आत्मनिर्भर बने। निरंतर संपर्क और समन्वय भाव से परिणाम निश्चित रूप से निकलता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण '**दानपेटी योजना**' के रूप में हमारे सामने है। अभी हम सभी ने PPT के माध्यम से स्क्रीन पर देखा कि कितने कम समय में इस प्रवृत्ति ने परिणामों को प्राप्त किया और प्रगति की दिशा में आगे बढ़ी। हर परिस्थिति में अथक परिश्रम करते हुए टारगेट तय कर सराहनीय टीम वर्क किया, परिणाम हम सभी के सामने है। जिस प्रकार दानपेटी योजना ने लक्ष्य प्राप्त किए हैं उसी प्रकार अन्य प्रवृत्तियों का भी लक्ष्य शीघ्र ही प्राप्त किया जा सकेगा।

राष्ट्रीय पदाधिकारीगणों व दानपेटी योजना टीम द्वारा लोगो का लोकार्पण

आपने **इदं न मम** एवं **दानपेटी योजना** में अंतर व उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए निवेदन किया कि यह विशेषकर महिलाओं एवं बच्चों के लिए आवश्यक है। संघ का प्रत्येक घर दानपेटी योजना के माध्यम से सीधे केंद्रीय संघ से जुड़े। सभी का केंद्रीय संघ के प्रति समर्पित दृष्टिकोण हो। दानपेटी योजना की टीम बहुत ही सराहनीय कार्य करते हुए घर-घर में दानपेटी लगाने के कार्य को पूर्ण करने हेतु सतत प्रयत्नशील है।

ऊर्जावान राष्ट्रीय महामंत्री जी ने कहा कि दानपेटी योजना के राष्ट्रीय संयोजक जी एवं उनकी टीम ने मिलकर जिस ऊर्जा के साथ एक माह का संकल्प लेकर यह कार्य संपादित किया है, वह प्रशंसनीय है। इस प्रकार अन्य प्रवृत्तियाँ भी लक्ष्य प्राप्त कर सकती हैं। आपने इस कार्य की सराहना करते हुए दानपेटी योजना की पूरी टीम को बधाई एवं साधुवाद दिया।

लीडरशिप ओरिएंटेशन ट्रेनर श्वेता जी बच्छावत ने कहा कि हमें संघ की सभी प्रवृत्तियों पर कार्य की सोच को बदलते हुए लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए। जिस प्रकार दानपेटी योजना में '**काम वही सोच नई**' पद्धति से कार्य किया जा रहा है उसी प्रकार प्रत्येक संघ ने स्वयं दानपेटियाँ लगाकर एक आदर्श प्रस्तुत किया है।

दानपेटी योजना के राष्ट्रीय संयोजक जी ने प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया कि 31 दिसंबर 2023 तक दानपेटियों से लगभग 22.53 लाख की सहयोग राशि प्राप्त हुई। इस राशि को 31 मार्च 2024 तक 40 लाख रुपए तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया, जिसे लगभग 30 लाख रुपए और एकत्रित कर कुल 52 लाख रुपए से अधिक राशि संग्रहित कर केंद्रीय संघ में जमा करवाई गई। 18 फरवरी से 19 मार्च 2024 तक 3000 नई दानपेटियाँ लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, जिसे लगभग 4800 दानपेटियाँ लगाकर टीम के प्रयासों से पूर्ण किया गया। संयोजक मंडल के सभी सदस्य, अंचल संयोजक, स्थानीय प्रभारी एवं टीम के अथक पुरुषार्थ से

जो प्रशंसनीय कार्य हुआ है, इसके लिए प्रबल पुरुषार्थ करने वाली दानपेटी योजना टीम को अंतर्मन से साधुवाद।

कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय पदाधिकारियों, गणमान्यजनों के साथ दानपेटी योजना टीम ने दानपेटी योजना के लोगो का लोकार्पण किया।

इस योजना का मुख्य उद्देश्य बच्चों में दान के संस्कारों को सींचना है। घर में मनाए जाने वाले प्रत्येक विशेष दिवस की शुरुआत दान से हो ताकि जन-जन में दान की प्रवृत्ति बढ़े। इसलिए दानपेटी को ऐसे स्थान पर रखें, जहाँ परिवार के सभी सदस्यों की दृष्टि सरलता से पहुँचती हो। हमारे द्वारा जिस राशि का त्याग दान के रूप में किया जाता है उससे हमारे धन में कोई कमी नहीं होती। अत: हम सभी को नियमित दान को स्वभाव में लाना चाहिए।

दिनांक 11 से 13 अप्रैल को जयपुर-ब्यावर अंचल प्रवास के दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय महामंत्री जी, दानपेटी योजना राष्ट्रीय संयोजक, आंचलिक उपाध्यक्ष,

मंत्री सहित कार्यकारिणी सदस्यों एवं स्थानीय पदाधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति में दानपेटियों का वितरण किया गया। वक्ताओं ने इस योजना पर प्रकाश डालते हुए संघ के प्रत्येक घर में दानपेटियाँ लगाने का निवेदन किया।

-आभा डूंगरवाल

'नयतां वर:' का विमोचन संपन्न

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के ब्यावर चातुर्मास के प्रवचनों पर आधारित नवीन साहित्य '**नयतां वर:**' का विमोचन 25 मार्च को मंगलवाड़ चौराहा (राज.) स्थित यू.एस. ओस्तवाल कॉलेज के ऑडिटोरियम में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की कार्यकारिणी बैठक के दौरान मुमुक्षु सौरभ जी भूरा एवं उपस्थित पदाधिकारियों के करकमलों से संपन्न हुआ।

साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में ब्यावर में सन् 2021 में आचार्यश्री द्वारा फरमाए गए कुछ प्रवचनों को संकलित किया गया है। पुस्तक के माध्यम से पाठकगण स्वयं को उत्तम, श्रेष्ठ, सुरक्षित तरीके से आनंदमय सिद्धि स्थान तक पहुँचा सकते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

विमोचन कार्यक्रम में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्ष, कई शिखर और महाप्रभावक सदस्य, वीर परिवार सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

-संयोजक, साधुमार्गी पब्लिकेशन

विविध भेंट मार्फत

01 मार्च से 25 मार्च 2024

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट राशि प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है –

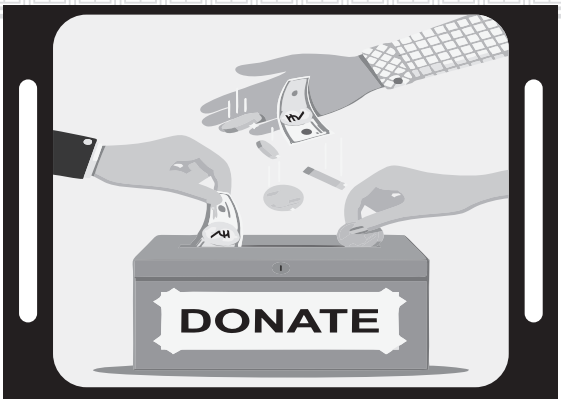

संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

11,00,000/- संतोष देवी मोदी, भिलाई

3,00,000/- गुप्तदान, बंगईगाँव

2,20,000/- कमलचंद जी बैद, मुंबई

2,20,000/- दिलीप जी ओस्तवाल, कलंगपुर

महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त)

7,00,000/- पूरणमल जी शाह, अहमदाबाद

2,50,000/- केशर देवी कांकरिया, कोलकाता

2,00,000/- मदनलाल जी पारख, राजनांदगाँव

1,00,000/- छाऊ देवी दूल्हराज रांका फाउंडेशन (शांतिलाल जी, गौतम जी, संपत जी रांका), जयनगर/मुंबई

1,00,000/- अनिल जी मनोज जी नवीन जी देशलहरा, दुर्ग

1,00,000/- लालचंद जी डागा, कोलकाता

25,000/- संजय जी रोशन जी पारख, नोखा/गुवाहाटी

समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त)

समता भवन, हावड़ा

39,00,000/- समता युवा संघ, हावड़ा

समता भवन, रावतसर

1,00,000/- केशर देवी कांकरिया, कोलकाता

समता भवन, सवाई माधोपुर

51,000/- निश्चल जी कांकरिया, कोलकाता

समता भवन, संगरिया

50,000/- छाऊ देवी दूल्हराज रांका फाउंडेशन (शांतिलाल जी, गौतम जी, संपत जी रांका), जयनगर/मुंबई

50,000/- केशर देवी कांकरिया, कोलकाता

50,000/- जबर देवी दीपचंद जी दस्साणी चैरिटेबल ट्रस्ट

50,000/- किशोर जी बैद, रायपुर

25,000/- राजकुमार जी नाहर, जयपुर

25,000/- शांतिलाल जी सिंघवी, पाली

समता भवन, लूणकरणसर

31,000/- गुप्तदान

16,000/- राजेश जी मुदित जी बच्छावत, भीनासर

समता भवन, खोर

30,000/- नथमल जी जसकरण जी तातेड़, करीमगंज

30,000/- छाऊ देवी दूल्हराज रांका फाउंडेशन (शांतिलाल जी, गौतम जी, संपत जी रांका), जयनगर/मुंबई

30,000/- केशर देवी कांकरिया, कोलकाता

30,000/- जबर देवी दीपचंद जी दस्साणी चैरिटेबल ट्रस्ट

30,000/- किशोर जी बैद, रायपुर

15,000/- मनोज जी डागा, कोलकाता

15,000/- शांतिलाल जी सिंघवी, पाली

समता भवन, चिकलाकसा

11,000/- शांतिलाल जी सिंघवी, पाली

संघ सहयोग

5,00,000/- ललित जी डागा, कोलकाता (पुत्री मुमुक्षु सुश्री रिया जी डागा की दीक्षा के उपलक्ष में)

11,000/- श्रेयांश जी अरविंद जी सालेचा, जयपुर

5,100/- निर्मल जी सरला देवी बोथरा (पौत्र हितार्थ सुपुत्र सिद्धार्थ जी-श्वेता जी के प्रथम जन्मोत्सव पर)

3,100/- हेमराज जी मुणोत, अजमेर

2,800/- केशर देवी कांकरिया, कोलकाता

साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग (सौजन्य से प्राप्त)

5,00,000/- संजय जी कटारिया, रतलाम (डी.पी. आभूषण लिमिटेड)

1,000/- मदनलाल जी ललिता देवी मनीष जी प्रियंका जी मोहित जी सुमन जी श्रीश्रीमाल, चित्तौड़गढ़ (ओजस्वी श्रीश्रीमाल के प्रथम जन्मदिवस पर)

888/- नेहा जी जैन, जोधपुर

इदं न मम (सौजन्य से प्राप्त)

11,00,000/- जयचंदलाल जी डागा, बीकानेर

7,00,000/- छाऊ देवी दूल्हराज रांका फाउंडेशन (शांतिलाल जी, गौतम जी, संपत जी रांका), जयनगर/मुंबई

5,00,000/- अनिल जी मांगीलाल जी पारख, रायपुर

1,50,000/- धीरज जी सिपानी, बेंगलुरु

1,00,000/- केशर देवी कांकरिया, कोलकाता

51,000/- रतनचंद जी देवराज जी सांखला, नवापारा राजिम/धमतरी

51,000/- उगमा देवी हजारीमल जी भूरा, नोखा/जांगलू

51,000/- सुरेश कुमार जी नांदेचा, खाचरौद

42,000/- सुभाषचंद जी छाजेड़, दुर्ग

41,000/- सागरमल जी मोहनलाल जी चोरड़िया, चेन्नई

38,100/- नैनेश जी रजनीकांत जी कामदार, अमलनेर

31,000/- विमला देवी गौतमचंद जी बैद, जगदलपुर

22,400/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, नागपुर

21,000/- नेमीचंद जी पारख, जोधपुर

21,000/- स्वरूपचंद जी नवीन जी चोरड़िया, खैरागढ़

21,000/- जैन फूड प्रोडक्ट (अनिल जी संखलेचा), नोखा

20,600/- पवन जी कांकरिया, बेंगलुरु

20,400/- रवि कुमार जी दस्साणी, गुवाहाटी

15,000/- पूनमचंद जी बरड़िया, महासमुंद

13,200/- कमला बाई डागा, खेरली (जयपुर)

11,000/- प्रदीप जी सोनावत, नई दिल्ली

11,000/- मांगीलाल जी सागरमल जी कटारिया, रावटी

11,000/- झमकलाल जी अनिल कुमार जी चोरड़िया, खाचरौद

11,000/- सुनील कुमार जी बंब, टोंक

11,000/- प्रकाशचंद जी भंडारी, चेन्नई

11,000/- संतोषचंद जी ताराबाई पारख, नयापारा

11,000/- प्रकाशचंद जी राजू जी गिड़िया, नयापारा राजिम

11,000/- अरविंद कुमार जी आंचलिया, दलखौला

11,000/- सुरेशचंद जी सिंघवी, गंगापुर

11,000/- गौतमचंद जी सुराणा, कटिहार

11,000/- कांतिलाल जी जुहारमल जी कटारिया, रावटी (रतलाम)

11,000/- कमला बाई चोरड़िया परिवार, बालाघाट

11,000/- नथमल जी खेतमल जी कोटड़िया, नंदुरबार

11,000/- रिखबचंद जी डोसी, डौंडीलोहारा

10,500/- निर्मल जी जय कुमार जी सेठिया, जलगाँव

10,202/- बालचंद जी संचेती, बालाघाट

10,000/- बाबूलाल जी खिंदावत, पिपलियामंडी

6,600/- कमल जी सिपानी, जलगाँव

6,500/- विकास जी सुराणा (पलक साड़ी), नोखा

6,100/- रमेश कुमार जी साँखला, महासमुंद

6,000/- कैलाश जी कोठारी, गंगापुर

5,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– अजित जी संचेती, गुलाबबाग, डॉ. विनोद कुमार जी जैन, पिपलिया मंडी, नवीन जी गेलड़ा, बेंगलुरु, संतोष देवी संखलेचा, नोखा, महेंद्र जी मोहनलाल जी चोरड़िया, जगदलपुर, **रावटी से–** कन्हैयालाल जी छाजेड़, सरोज जी मणिलाल जी कटारिया, आनंदीलाल जी गाँधी, **दलखौला से–** अशोक जी लुणावत, मांगीलाल जी बरड़िया, मुकेश जी लुणावत, सुनील जी सोहनलाल जी बरड़िया

5,000/– सुनीता जी तुषार जी बरमेचा, एलंदुरपेट

5,000/– शंकरलाल जी सुराणा, चित्तौड़गढ़

5,000/– मोहनलाल जी बोथरा, अहमदाबाद

4,200/– ओमप्रकाश जी डोसी, फारबिसगंज

4,100/– वीरेंद्र जी पुगलिया, सुपेला (भिलाई)

3,500/– सिमरन सिंह जी, अहमदाबाद

3,110/– गुप्तदान, जगदलपुर

3,100/– अशोक जी अजीत जी अंकुर जी अनमोल जी रायसोनी, राजिम

3,100/– मुकेश जी दिनेश जी रायसोनी, नवापारा राजिम

3,100/– राजेंद्र कुमार जी पीयूष कुमार जी, कंजार्ड़ा

3,000/– बंशीलाल जी राकेश कुमार जी सुराणा, चित्तौड़गढ़

2,500/– राजमल जी सागरमल जी कटारिया, रावटी

2,500/– डॉ. राकेश कुमार जी जैन, पिपलिया मंडी

2,500/– दिनेश कुमार जी जैन, पिपलिया मंडी

2,200/– नथमल जी सुराणा, फारबिसगंज

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– प्रभादेवी झाबक, फारबिसगंज, विनीत जी प्रवीण जी जैन, मुंबई, बाबूलाल जी कटारिया, रावटी, सुधीर जी कटारिया, रावटी, मनोज कुमार जी प्रेमचंद जी भंडारी, कंजार्ड़ा, तेजमल जी शैलेंद्र कुमार जी भंडारी, कंजार्ड़ा, नरेंद्र कुमार जी चौहान, झारड़ा, श्यामा बाई चौहान, झारड़ा, राजूमल जी बरड़िया हिंदमोटर, रौनक कुमार जी उज्ज्वल कुमार जी गोलछा, कोलकाता, विनोद कुमार जी डोसी, डौंडीलोहारा, उत्तमचंद जी बेताला, नोखा, राजश्री जी सुराणा, नोखा, सरिता देवी सुराणा, बीकानेर **इंदौर से–** अशोक कुमार जी गांधी, ऊषा जी गांधी, अंकित कुमार जी गांधी, मयंक जी गांधी, अद्वैत जी गांधी, मृणालिनी जी गांधी, **पिपलिया मंडी–** अनिल कुमार जी मोहन कुमार जी अभ्भानी, मनोज कुमार जी पारस जी बाली जी चौहान, शांतिलाल जी भंडारी

2,000/– संतोषचंद जी बंबोरिया, पिपलिया मंडी

1,501/– अंकित जी बंब, टोंक

1,500/– अशोक कुमार जी कटारिया, रावटी

1,500/– सुशील कुमार जी कटारिया, रावटी

1,200/– कोमलचंद जी पोखरना, चित्तौड़गढ़

1,200/– तेजमल जी पामेचा, पिपलिया मंडी

1,200/– इंदरचंद जी मेघराज जी मुणोत, हिंदमोटर

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– भूषण जी संकलेचा, धूले, नरेंद्र जी शाह, राजनांदगाँव, धीरज कुमार जी नाहर, बेगूँ, महावीर कुमार जी ढड्ढा, हिंदमोटर, महेंद्र कुमार जी चोरड़िया, हिंदमोटर, दिनेश कुमार जी सांखला, तिरुपुर, जाग्रत जी सुराणा, नोखा, जयंत जी सुराणा, नोखा, **महिदपुर से–** दिनेश जी कांठेड़, पारसमल जी भंडारी, अनिल जी कांठेड़, राजेश कुमार जी कांठेड़, राहुल जी कांठेड़, अमित जी कांठेड़, **रायपुर से–** ममता जी गोलछा, सुरभि जी नाहर, निखिल जी गोलछा, **कंजार्ड़ा से–** दिलीप कुमार जी मूलचंद जी भंडारी, विनय कुमार जी सौभाग्यमल जी भंडारी, दिनेश कुमार जी घीसालाल जी भंडारी, तरुण कुमार जी पटवा, **झार्ड़ा से–** अशोक कुमार जी चौहान, अमृतलाल जी चौहान, कन्हैयालाल जी नलवाया, आकाश जी नलवाया, **पिपलिया मंडी से–** नरेंद्र कुमार जी पितलिया, महेश कुमार जी धींग

1,000/– जगदीशलाल जी भंडारी, बोहेड़ा

1,000/– ललित जी बोहरा, चिकारड़ा

1,000/- राजेंद्र जी कीमती, पिपलिया मंडी
1,000/- प्रतीक जी दुगड़, अहमदाबाद
701/- अनिल जी सांखला, तरपोंगी
600/- राजेंद्र कुमार जी सुराणा, सूरत
555/- कमला बाई पुखराज जी चोपड़ा, सेलंबा

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- मधु जी भाणावत, उदयपुर, राजेश कुमार जी बैद, फारबिसगंज, अमृतलाल जी कांठेड़, नागदा, **पिपलिया मंडी से-** विजय कुमार जी सुशील कुमार जी भंडारी, दिनेश कुमार जी मूलचंद जी भंडारी, **हिंदमोटर से-** अशोक कुमार जी सुशील कुमार जी मुणोत, दिलीप जी अनिल जी अंकित जी बोथरा, हनुमानमल जी भूरा, कांतिलाल जी सुराणा, सुभाष कुमार जी जितेश जी सेठिया

दानपेटी योजना

25,000/- रतनचंद जी देवराज जी साँखला, नवापारा राजिम
22,000/- राजीव जी संगीता जी सेठिया, दिल्ली
21,000/- पारसमल जी पंकज जी जैन, गरियाबंद
18,000/- जेठी देवी कुमुद देवी सिपानी, बेंगलुरु
18,000/- प्रेमचंद जी वोहरा, बदनावर
16,100/- समता महिला मंडल, नागपुर
12,000/- हर्षित कुमार जी अमन जी सोनी, नीमच
11,000/- उगमराज जी देवेंद्र जी नितेश जी कोठारी, राजिम
11,000/- हुकमचंद जी रिंकू बाई पारख, राजिम
11,000/- नेमीचंद जी ज्ञानचंद जी चोरड़िया, नीमच
9,730/- भगवान जी मनीष कुमार जी लोढ़ा, पाली
7,000/- समता महिला मंडल, बरहमपुर
7,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, गंगापुर
6,710/- हीरालाल जी श्रीश्रीमाल, बदनावर
6,300/- प्राची श्री परिवार, बदनावर
6,200/- लहरचंद जी पटवा, सिलचर
6,100/- अखेचंद जी सोनावत, सिलचर
5,200/- एवंत कुमार जी मूलचंद जी डागा, बीकानेर

5,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- तारा बाई एवं सुशांत जी कोचर, बीकानेर, शांतिलाल जी रोहित कुमार जी बैद, नागपुर, राजेंद्र प्रसाद जी राकेश कुमार जी बैद, नागपुर, असानी परिवार, नागपुर, गौतमचंद जी विनोद जी बोथरा, नागपुर, घेवरचंद जी झामड़ परिवार, नागपुर, सुराणा सुपारी सेंटर, नागपुर, मोहनलाल जी मामारचंद जी गोलछा, नागपुर, भोमराज जी राजेश जी गुलगुलिया, सिलचर, मैसर्स भारत मोटर्स, सिलचर, सिरिया बाई रमेशचंद जी बाफना, नवापारा राजिम, मीना बाई अशोक जी मनोज जी महेंद्र जी पारख, नवापारा राजिम, अमृतलाल जी गंगाबाई संदेश जी पारख, राजिम, प्रकाशचंद जी राजेंद्र कुमार जी गिड़िया, नवापारा राजिम, अशोक जी ज्ञानचंद जी श्रीश्रीमाल, पाली, विनोद कुमार जी कांठेड़, नीमच
5,000/- शरदचंद जी मेहता, बीकानेर
5,000/- अनिल कुमार जी जयेश कुमार जी लूनिया, बदनावर
5,000/- सूरज देवी सिपानी, बेंगलुरु
5,000/- बिमला देवी अरुण जी पटवा, हावड़ा
4,843/- प्रेमचंद जी कोठारी, बदनावर
4,500/- अनिल जी आशीष जी सोनी, नीमच
4,427/- विजय कुमार जी बाफना, बदनावर

4,200/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- केशरीचंद जी लुणिया, हावड़ा, **सिलचर से-** बीकानेर रेडियो केंद्र, एस.एस. भूरा, झूमरमल जी सुराणा, शांतिलाल जी सुंदरी देवी पटवा, हस्तीमल जी बरड़िया,
4,100/- झंवरलाल जी कुमट, सिलचर
4,100/- सूरजमल जी सेठिया, सिलचर
4,100/- प्रकाशचंद जी सुराणा, सिलचर
3,800/- रेवंतमल जी रविंद्र जी गुलगुलिया, सिलचर
3,500/- बिजयराज स्टोर, सिलचर
3,500/- डॉ. अरुण जी सिपानी, सिलचर
3,500/- रतनलाल जी बरड़िया (मीना फर्नीचर), सिलचर

3,400/– श्री महावीर ज्वैलर्स, बेंगलुरु
3,300/– नीलम जी बुच्चा, बीकानेर
3,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– सुरेश कुमार जी गोयल, बीकानेर, प्रमोद कुमार जी प्रवीण कुमार जी कोठारी, नागपुर, राजेश कुमार जी पंकज जी भूरा, नागपुर, शशिकला जी नीरज जी रितेश जी रायसोनी, जामगाँव, सागरमल जी दिलीप जी मोहित जी धींग, नीमच, चंदा देवी गुणवंतलाल जी गोदावत, नीमच **सिलचर से–** उदयचंद जी नथमल जी सिपानी, मूलचंद जी बरड़िया, विनोद कुमार जी सिंघी, मैसर्स ओसवाल इलेक्ट्रॉनिक, मैसर्स करणी इलेक्ट्रॉनिक्स, मूलचंद जी सुराणा, भंवरलाल जी जेठमल जी बैद, **नवापारा राजिम से–** अशोक जी अंकित जी अंकुर जी अनमोल जी रायसोनी, फूलचंद जी मुकेश जी दिनेश जी रायसोनी
3,000/– चंद्रप्रकाश जी रोहन जी गुलगुलिया, सिलचर
3,000/– डालचंद जी गुलगुलिया, सिलचर
3,000/– नवरतन जी जैन, भीलवाड़ा
3,000/– झंवरलाल जी कविता जी बोथरा, हावड़ा
2,575/– राजूमल जी बरड़िया, हिंदमोटर
2,516/– शौकिनलाल जी हितेश जी हिमांशु जी डांगी, नीमच
2,500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– गौतमचंद जी सुराना, कटिहार, निर्मल जी चोपड़ा, फिंगेश्वर, सुखराज जी भींवराज जी मालू, जेठानिया, शांतिलाल जी विनोद जी कांठेड़, नीमच, **सिलचर से–** विजय कुमार जी विशाल जी सांड, विकास टेक्सटाइल्स, प्रकाशचंद जी पुगलिया, मांगीलाल जी सुखानी, आईदान जी अनिल कुमार जी गोलछा, विमल कुमार जी धीरज जी गुलगुलिया
2,200/– विश्वास कुमार जी पितलिया, बेंगलुरु
2,200/– मैसर्स रामलाल भंवरलाल, सिलचर
2,200/– जतनलाल जी पटवा, सिलचर
2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– संतोकचंद जी सिपानी, गंगाशहर, सुरेंद्र जी जैन, बीकानेर, सुरेंद्र जी मुकेश जी सिपानी, लुधियाना, मांगीलाल जी चोरड़िया राजिम, पुखराज जी निर्मल जी पारख, राजिम, संतोषचंद जी ताराबाई पारख, नवापारा, दीपक जी कामदार, नवापारा, विमल जी पगारिया, फिंगेश्वर, लालचंद जी मुणोत, भीम, मांगीलाल जी मोतीलाल जी लोढा, उटवालिया, भंवरलाल जी राजकुमार जी लोढा, उटवालिया, अशोक कुमार जी राहुल जी लोढ़ा, उटवालिया, संजय कुमार जी योगेश कुमार जी दुगड़, सोमेसर, रावलचंद जी हर्ष कुमार जी दुग्गड, सोमेसर, हनुमानचंद जी पवन कुमार जी दुग्गड, सोमेसर, विमल कुमार जी बोथरा, दिल्ली, नारायणचंद जी पींचा, दिल्ली, मनोज कुमार जी पींचा, दिल्ली, रौनक कुमार जी उज्ज्वल कुमार जी गोलछा, कोलकाता, मंत्री जी पटवा, सेरामपुर, पूनमचंद जी सुराणा, सूरतगढ़, हस्तीमल जी हेमंत जी दुगड़, पाली, प्रकाशचंद जी वैभव जी लसोड़, पाली, भंवर सिंह जी सुनीश जी चोरड़िया, नीमच, शेखर जी बंब, नीमच, अशोक कुमार जी मोगरा, नीमच, **नागपुर से–** नितेश जी माणकचंद जी डागा, पंकज जी शांतिलाल जी दुगड़, रमेश कुमार जी दिनेश कुमार जी बोथरा, चाँदमल जी मोहन कुमार जी सुराणा, नवरतनमल जी दुगड़, मनोज कुमार जी मरोठी, संदीप कुमार जी सुराणा, गिरीश जी सुभाष चंद जी सुराणा, अनिल कुमार जी सुनील कुमार जी सुखानी, सुभाषचंद जी भूरा, विजयराज जी मिन्नी, राजेश जी नरेश जी पुगलिया, सुनील जी सुभाष जी बोगावत, राजेंद्र जी सुरेंद्र जी रविंद्र जी सुखानी परिवार, **सिलचर से–** हनुमानमल जी रूपकिशोर जी सुराणा, मैसर्स रावतमल प्रेमसुख, बिमल कुमार जी भूरा, नरेंद्र जी चोरड़िया, जयनारायण जी विजय कुमार जी सांड, राकेश जी हीरावत, माणिकचंद जी लुणिया, प्रकाशमल जी बरड़िया, मैसर्स श्री टेक्सटाइल, टोडरमल जी कांकरिया, कमलचंद जी कौशल जी गुलगुलिया, लक्ष्मीचंद जी राजू जी बोथरा (काबूगंज वाले), पूरणमल जी प्रेम कुमार जी

रांका, एस.आर. इंफोटेक, सुंदरलाल जी भूरा, मैसर्स ममता ऑटोमोबाइल्स (प्रेम)

2,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– जेठी देवी कांकरिया (सुशील जी), सिलचर, पूनमचंद जी नवीन जी गुलगुलिया, सिलचर, इंद्रचंद जी बोथरा, हावड़ा, केशरीचंद जी बोथरा, हावड़ा, विजय कुमार जी संजय जी खिंदावत, नीमच, विपिन कुमार जी सुरेंद्र जी कटारिया, नीमच, **बीकानेर से–** अनिल जी बांठिया, कुसुम देवी कोठारी, गौतम कुमार जी कोठारी, मनीष कुमार जी कोठारी, त्रिशला जी बुच्चा

1,800/– रामलाल जी गुलगुलिया, सिलचर

1,800/– समता समग्र आरोग्यम्, बीकानेर

1,650/– सुजानमल जी राकेश जी मारू, नीमच

1,600/– अनूपचंद जी देवेंद्र जी बाफना, जेठानिया

1,565/– पवन जी भंसाली, बीकानेर

1,539/– नरेंद्र कुमार जी नितीश जी बोहरा, बदनावर

1,501/– कमल कुमार जी लविश जी पोखरना, बदनावर

1,500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– रामलाल जी इंदर जी बांठिया, पाली, विमलचंद जी सिपानी, हावड़ा, महेंद्र कुमार जी खटोड़, हावड़ा, **बीकानेर से–** राजेंद्र कुमार जी कवि जी गोलछा, प्रदीप कुमार जी संजीव कुमार जी सांड, पूरनमल जी विजय प्रकाश जी रांका, **सिलचर से–** ताराचंद जी लोढ़ा, मैसर्स मोहित ट्रेडर्स, भंवरलाल जी नवरतन जी सुराणा, अभय कुमार जी आशीष कुमार जी भूरा, जेठमल महावीर जी दुगड़, **नीमच से–** मितेश जी तरुण जी सेठिया, आनंदीलाल जी पंकज जी कांठेड़, कन्हैयालाल जी बापूलाल जी कांठेड़, कोमलचंद जी केतन जी गांग, मनोज कुमार जी पारसमल जी खिंदावत

1,400/– रतनलाल जी भिखमचंद जी सुराणा, बीकानेर

1,350/– सुरेश कुमार जी भैरूलाल जी मुणेत, नीमच

1,200/– भारती जी मुणोत, बेंगलुरु

1,111/– निर्मल कुमार जी अभिषेक जी भूरा, बीकानेर

1,111/– सुरेश कुमार जी गेंदमल जी सोनी, नीमच

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– राजेंद्र जी भड़कतिया, बदनावर, दिनेशचंद्र जी बोथरा, फारबिसगंज, प्रदीप जी भंसाली, राजिम, चंदनमल जी बाफना, खिसोरा, विमलचंद जी रायसोनी, खिसोरा, सांगीलाल जी गोलछा, अभनपुर, दीपेश कुमार जी चोपड़ा, अभनपुर, गौतम जी पारख, नवापारा राजिम, नेमीचंद जी गोलछा, फिंगेश्वर, दोस्त होजयरी स्टोर्स, नवापारा, शकुन बाई पंकज जी बोथरा, नवापारा, शिखर जी बाफना, नवापारा राजिम, ज्ञानमल जी देवेंद्र कुमार जी संचेती, जेठानिया, कुंदनमल जी जसराज जी मालू, जेठानिया, महेंद्र जी चोरड़िया, हिंदमोटर, सूरजमल जी राजेंद्र कुमार जी डागा, हिंदमोटर, उत्तम कुमार जी मिन्नी, रिशरा, विजयचंद जी लुणावत, हनुमानगढ़, प्रवेश जी जैन, सूरतगढ़, सुभाषचंद जी गौरव जी वीर जी चोरड़िया, हावड़ा, **हसन से–** चौथमल जी कमलेश जी विमलेश जी सिपानी, राजू जी लखन जी सिपानी, माणिकचंद जी राजू जी जीतू जी मनीष जी मिन्नी, **गंगाशहर–भीनासर से–** नवरतन जी संचेती, जयचंदलाल जी भूरा, पीरदान कांतिलाल जी पटवा, राजेश जी बच्छावत, सूरज प्रकाश जी झाबक, **बीकानेर से–** रविंद्र जी बरड़िया, मोतीलाल जी भूरा, पुखराज जी चंद्रप्रकाश जी लोढ़ा, कमलचंद जी सुनील कुमार जी गुलगुलिया, नाकोड़ा साड़ीज, गणेशमल जी हीरालाल जी बेगाणी, मनीष कुमार जी गोलछा, कमलचंद जी बुच्चा, मोहनलाल जी राजेंद्र जी सेठिया, कमलचंद जी सांड, अमरचंद जी राजेश कुमार जी सुराणा, सुरेश कुमार गोलछा, तरुण कुमार जी मांडोत, **बेंगलुरु से–** अरुण कुमार जी नागौरी, ललिता देवी पवन कुमार जी, दिलीप कुमार जी पारख, रमेशचंद जी पितलिया, **लुधियाना से–** शांतिलाल जी सेठिया, निर्मल जी मरोठी, गणेशमल जी लुणावत, लाभचंद जी सुराणा, दिलीप जी प्रवीन जी चोरड़िया, रणजीत जी बोथरा, मनोज जी पवन जी छाजेड़, चंपालाल जी बैद, नवरतन जी सुराणा, गुप्तदान, **नागपुर से–** करणीदान जी सिद्धार्थ जी सुराणा, महावीर जी बैद,

सिलचर से– संपतलाल जी धनराज जी सुराणा, अशोक कुमार जी अनिल कुमार जी सिपानी, माणिकचंद जी पटवा, शुभकरण जी सिपानी, धूड़चंद जी बरड़िया, बीना देवी सिपानी (नवरतन जी सिपानी), झंवरलाल जी दीपक कुमार जी पटवा, महावीर प्रसाद जी दुगड़, गौतमचंद जी बेताला, विनोद कुमार जी गोलछा, अभय कुमार जी धारीवाल, **भीम से–** शांतिलाल जी मारू, कमलेश जी देसरला, भीखमचंद जी कोठारी, तरुण कुमार जी गन्ना, महावीरचंद जी गुरलिया, मांगीलाल जी दक, माणकचंद जी दलाल, रमेश कुमार जी मुणोत, तेजराज जी कोठारी, नवरतनमल जी गुरलिया, विकास कुमार गुरलिया, पारसमल जी बंब, अशोक कुमार जी पोखरना, बाबूलाल जी कोठारी, देवीलाल जी कैलाश जी दक, मोतीलाल जी दलाल, **चाड़ी से–** मनोज जी छाजेड़, देवीचंद जी छाजेड़, त्रिलोकचंद जी संचेती, निखिल जी छाजेड़, सायरचंद जी संचेती, विनयराज जी जैन, हस्तीमल जी छाजेड़, **ऊँटवालिया से–** सवाईमल जी हार्दिक कुमार जी लोढ़ा, गौतमचंद जी जोगेश कुमार जी लोढ़ा, जसराज जी मुकेश जी लोढ़ा, नरेश कुमार जी अदिति जी लोढ़ा, मोहनलाल जी रावलचंद जी लोढ़ा, सांगीलाल जी जसराज जी लोढ़ा, **सोमेसर से–** जेठमल जी रोहित कुमार जी दुग्गड़, भीवराज जी राजकुमार जी दुग्गड़, मोहनलाल जी दिनेश कुमार जी दुग्गड़, माणकलाल जी ललित कुमार जी दुग्गड़, भींवराज जी प्रकाशचंद जी दुग्गड़, मंगलचंद जी ललित जी कुमार दुग्गड़, **पांचूड़ी से–** चंचल देवी लोढ़ा, देवीचंद जी लोढ़ा, महावीरचंद जी लोढ़ा, विजयराज जी लोढ़ा, हंसराज जी लोढ़ा, गणेशमल जी लोढ़ा, प्रकाशचंद जी लोढ़ा, **दिल्ली से–** धनराज जी डागा, रोशन जी डागा, कमल किशोर जी बोथरा, उत्तम कुमार जी निर्मल जी भूरा, छगनलाल जी बोथरा, मनोज जी विनोद जी बरड़िया, **पाली से–** पदमचंद जी लोढ़ा, शांतिलाल सिंघवी, मोहनलाल जी अशोक जी तलेसरा, जीवन जी प्रकाश जी सिंघवी, सुरेंद्र जी नीलेश जी मेड़तवाल, प्रदीप कुमार जी श्रीश्रीमाल, लालचंद जी सुमित जी रांका, छोटूलाल जी छाजेड़, प्रेमचंद जी अर्पित जी ढेड़िया, शेखरचंद जी बांठिया, **नीमच से–** प्रकाशचंद्र जी हेमंत जी मोहित जी भंडारी, संदीप जी शांतिलाल जी चौधरी, सुरेश जी जितेश जी गांग, पारसमल जी सोनी रंगवाला, सुशील जी सुनील जी पितलिया, अरविंद कुमार जी वया, सोहनलाल जी दिलीप जी छाजेड़, कांतिलाल जी सुशील जी नवीन जी मुणेत, अरुण जी रोहित जी कोठारी, जमनालाल अभय जी नपावलिया, सुमतिलाल जी संजय जी चौधरी, अरुण कुमार जी संदीप जी खाबिया, सुनील कुमार जी पारसमल जी चौधरी, अशोक जी विमल जी विनोद जी कांठेड़, आशीष जी विकास जी पटवा, प्रकाश जी मेघराज जी पीयूष जी कड़ावत, कोमल सिंह जी बाफना, प्रदीप कुमार जी बोड़ावत, गुणवंत जी दीपक कुमार जी लोढ़ा, लक्ष्मीलाल जी कांठेड़, विजय कुमार जी बोड़ावत, गिरिराज सिंह जी विशाल जी श्रीमाल, रघुराज सिंह जी चौरड़िया, नवीन जी अभय जी फाफरिया

1,029/– प्रकाशचंद जी कोठारी, बदनावर

1,008/– शौकिनलाल जी मुणोत, नीमच

1,001/– रविंद्र जी मेहता, नीमच

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– सुरेश जी विक्रम जी सिपानी, हसन, बींजराज जी डागा, गंगाशहर, मोहिनी देवी झाबक, गंगाशहर, बसंतीलाल जी चंडालिया, चित्तौड़गढ़, अशोक कुमार जी मयूर कुमार जी चोरड़िया, बदनावर, रवि कुमार जी पंवार, बदनावर, उत्तमचंद जी देरासरिया, भीम, सिद्धार्थ कुमार जी गन्ना, भीम, **बीकानेर से–** मुल्तानचंद जी बांठिया, मनसुखलाल जी शांतिलाल जी गोलछा, राजेंद्र कुमार जी बुच्चा, **सिलचर से–** मैसर्स नवरंग, कांता जी सिपानी, संजय कुमार जी भूरा, अशोक कुमार जी सिपानी, धर्मपाल जी धारीवाल, जॉयप्रकाश जी गुलगुलिया, **हावड़ा से–** महावीर कुमार जी धारीवाल, सुंदरलाल जी मणोत, विजयराज जी मणोत, दीपक जी बैद, शिखरचंद जी भूरा,

श्रेणिक जी रेखा जी बोथरा, **नीमच से–** कन्हैयालाल जी आशीष जी कांठेड़, अमृतलाल जी जुबिन जी मुणत, नवीन कुमार जी आनंदीलाल जी कांठेड़, महेंद्र जी प्राग जी नाहर, अशोक कुमार जी दीपक जी कटारिया, दशरथ जी भरत कुमार जी कोठारी, विमल कुमार जी राजू जी आंचलिया, अजित जी अमित जी अभय जी नाहर धनराज जी माणकलाल जी रांका, सत्यप्रकाश खींचा, शांतिलाल जी पंकज जी कुदार, पारसमल जी कांठेड़, अभय जी नितिन जी कुदार, प्रकाश जी संतोष जी पीपाड़ा, नाहर सिंह जी राजेंद्र जी सुशील जी राठौड़

900/– दीपचंद जी प्रेमसुख जी बेगाणी, बीकानेर

800/– नेमीचंद जी तातेड़, बीकानेर

800/– अरविंद कुमार जी सुराणा, बीकानेर

799/– रविंद्र जी हीरालाल जी भंसाली, बीकानेर

750/– घेवरचंद जी पोखरना, बेंगलुरु

700/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– नथमल जी विमल कुमार जी लूणिया, गंगाशहर, महेंद्र कुमार जी महावीर कुमार जी गोलछा, बीकानेर, कमलचंद जी राजकुमार जी तांतेड़, बीकानेर, शांतिलाल जी विक्रम जी गोलछा, बीकानेर, राजेंद्र कुमार जी गौरव जी बोथरा, सिलचर, मैसर्स धीरज एंड कंपनी, सिलचर, रामलाल जी गजेंद्र कुमार जी बाफना, जेठानिया, लक्ष्मीचंद जी भावेश कुमार जी संचेती, जेठानिया, अशोक कुमार जी बोथरा, दिल्ली, आसकरण जी धीरज कुमार जी बोथरा, हिंदमोटर, जयनारायण जी सांड, हावड़ा, विनयचंद जी विपिन जी कांठेड़, नीमच, अनुराग जी नलवाया, नीमच, प्रकाशचंद जी आंचलिया, नीमच

607/– इंदरचंद जी बच्छावत, बीकानेर

600/– नाथी देवी पूनमचंद जी बोथरा, गंगाशहर

600/– पूनमचंद जी फलोदिया, भीनासर

600/– प्रकाशचंद जी दीपक कुमार जी रांका, बीकानेर

600/– पारसमल जी सुशील जी सहलोत, नीमच

551/– अनिल कुमार जी राजमल जी बोड़ावत, नीमच

550/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– बीकानेर से– नीरज कुमार जी सेठिया, रणजीत जी कोठारी, शांतिलाल जी कांतिलाल जी बांठिया, राजेंद्र कुमार जी दीपक जी बांठिया, बाबूलाल जी अमित कुमार जी गोलछा

521/– कैलाशचंद जी तरुण जी पुगलिया, बीकानेर

511/– कमल जी सूरजमल जी बंबोरिया, नीमच

500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– मदनलाल जी मनोज जी लूणावत, हसन, अनिल कुमार जी पितलिया, बेंगलुरु, सतीश कुमार जी दक, बेंगलुरु, सुभाषचंद्र जी सतीश कुमार जी नांदेचा, बदनावर, धूड़चंद जी हरीश कुमार जी बुरड़, ऊँटवालिया, चैनराज जी लोढ़ा, पाँचूड़ी, इंदरचंद जी जाजू, पाँचूड़ी, प्रेमचंद जी रवि जी दुगड़, पाली, सुनील जी बोथरा, हावड़ा, **गंगाशहर–भीनासर से–** पांचीलाल जी धीरज कुमार जी बैद, चंपालाल जी अशोक कुमार जी भूरा, पूनमचंद जी सुनील कुमार जी बोथरा, मदनलाल जी अनिल कुमार जी मालू, अमरचंद जी प्रिंस जी रांका, धर्मचंद जी नवीन कुमार जी बोथरा, सुभाष जी निखिल जी लूणिया, निर्मल कुमार जी संचेती, प्रकाशचंद जी ललवानी, अमित जी पुगलिया, सुशील कुमार जी सिद्धार्थ जी सिपानी, नितिन कुमार जी करणीचंद जी सुराणा, बाबूलाल जी सोनावत, देवेंद्र कुमार जी सोनावत, **बीकानेर से–** दीपक जी गोलछा, वीरेंद्र कुमार जी बडेर, विमला देवी धैर्य जी कोठारी, नवलचंद जी प्रकाश जी भूरा, हंसराज जी सुखलेचा, प्रकाशचंद जी सेठिया, बाबूलाल जी गुलगुलिया, मनोज कुमार जी महेंद्र कुमार जी बेगाणी, झंवरलाल जी बांठिया, बंशीलाल जी बांठिया, ताराचंद जी बांठिया, राजेश जी ज्ञानचंद जी बडेर, जितेंद्र कुमार जी बडेर, केशरीचंद जी अनिल कुमार जी बांठिया, शांतिलाल जी विकास कुमार जी सांड, कन्हैयालाल जी सोनावत, कमल कुमार जी सिपानी, राजेंद्र कुमार जी बुच्चा, धनराज जी पारसचंद जी पटवा, हंसा देवी सुराणा, निर्मल कुमार जी डागा, सुरेंद्र कुमार जी डागा,

कमलचंद जी अभाणी, किरण बाई गुलगुलिया, कमला देवी पटवा, हरकचंद जी सुराणा, श्रेणिक जी चौरड़िया, मांगीलाल जी सिपानी, सुरेंद्र कुमार जी बडेर, मोहनलाल जी सेठिया, हीरालाल जी गुलगुलिया, शिखरचंद जी अमित कुमार जी मालू, धरमचंद जी मनोज कुमार जी छाजेड़, पूनमचंद जी बुच्चा, संपतलाल जी डागा, अमिताभ जी नागौरी, **चित्तौड़गढ़ से–** लाडकँवर जी चंडालिया, जसकँवर जी चावत, राजेंद्र कुमार जी पोखरना, बंशीलाल जी राकेश कुमार जी सुराणा, **लुधियाना से–** अंकित जी अंकुश जी सेठिया, ललित जी भूरा, मोनू जी संचेती, **सिलचर से–** निहारा जी स्वाधिक जी (उत्तमचंद जी सिपानी), सुजीत कुमार जी सिपानी, मोहनलाल जी बरड़िया, दिनेश कुमार जी गुलगुलिया, निर्मल कुमार जी सांड, महेश कुमार जी बोथरा, कमलचंद जी विमलचंद जी भूरा, महावीर जी बरड़िया, **भीम से–** पुखराज जी देरासरिया, श्यामलाल जी मारू, पवन कुमार जी मेहता, मदनलाल जी पोखरना, अक्षय कुमार जी देशलहरा, लाडूलाल जी मेहता, गणेशलाल जी पोखरना, शिवलाल जी दक, रमेशचंद्र जी गुगलिया, भैरूलाल जी दक, गौतम कुमार जी चौपड़ा, राजेश कुमार जी गुरलिया, माणकचंद जी देरासरिया, शंकरलाल जी सांखला, रतनलाल जी मुणोत, **चाड़ी से–** चंदनमल जी संचेती, भंवरलाल जी छाजेड़, जेठमल जी छाजेड़, उत्तमचंद जी छाजेड़, रानूलाल जी छाजेड़, दिनेश जी छाजेड़, जितेंद्र जी छाजेड़, त्रिलोकचंद जी छाजेड़, प्रकाशचंद जी छाजेड़, अनिल जी छाजेड़, शैलेंद्र जी लोढ़ा, **कोकराझाड़ से–** धरमचंद जी बांठिया, जेठमल जी बरड़िया, प्रकाशचंद जी कातेला, श्रीचंद जी भूरा, पूनमचंद जी छाजेड़, सुंदरलाल जी बरड़िया, राकेश कुमार जी बरड़िया, जतनलाल जी नवलखा, रतनलाल जी बोथरा, पंकज जी पींचा, सुरेंद्र जी कुमार भूरा, संजय जी बोथरा, मोहन जी बोथरा, मनोज जी कुमार भूरा, मोहनलाल जी भूरा, **सोमेसर से–** शांतिलाल जी विक्रम कुमार जी दुग्गड़, मदनलाल जी पवन कुमार जी दुग्गड़, ओमप्रकाश जी दुग्गड़, महावीरचंद जी सुजल कुमार जी श्रीश्रीमाल, **दिल्ली से–** नरेंद्र कुमार जी बोथरा, मनोज जी बोथरा, शांतिलाल जी भूरा, **हिंदमोटर से–** अशोक कुमार जी सुशील कुमार जी मुणोत, इंदरचंद जी दिलीप कुमार जी भूरा, दिलीप जी अनिल जी अंकित जी बोथरा, हनुमानमल जी भूरा, इंदरचंद जी मेघराज जी मुणोत, देवांशी जी सुराना, महावीर कुमार जी ढड्ढा, सुभाष कुमार जी जितेश जी सेठिया, **रावतसर से–** विजयचंद जी गौतम कुमार जी बरड़िया, चिरंगीलाल जी राजेश कुमार जी गोलछा, विजयचंद जी मनोज कुमार जी भूरा, शांतिलाल जी बरड़िया, विमलचंद जी बरड़िया, विजयचंद जी नवरतन जी गोलछा, कंवरलाल जी विकास कुमार जी गोलछा, इंदरचंद जी गोलछा, **सूरतगढ़ से–** सुरेश जी जैन, महेंद्र जी जैन, संपत जी जैन, सुशीला देवी जैन, **नीमच से–** राजमल जी नलवाया, अमृतलाल जी नलवाया, सागरमल जी आशीष जी पितलिया, नरेंद्र जी राहुल जी चौधरी, प्रदीप जी चंदनमल जी सोनी, ओंकारलाल जी गेंदमल जी सोनी, नरेंद्र जी गांग, अमृतलाल जी नागौरी, प्रवीण कुमार जी पुखराज जी भंडारी, निर्मल जी अभिषेक जी गांग, सुरेश जी राजेश जी सेठिया, अरुण जी निखिल जी बंबोरिया, अशोक जी अनूप जी नाहर, महेंद्र जी बंबोरिया, अशोक कुमार जी मुणेत, सुशीला देवी मेहता (कांति जिनेंद्र), बसंतीलाल जी अजय जी कांठेड़, बापूलाल जी सुनील जी मेहता, समरथमल जी बापू सिंह जी चौधरी, मांगीलाल जी पिंकेश जी चौधरी, अनिल जी प्रतीक जी परमार, अभिषेक जी आनंदीलाल कांठेड़, अक्षय जी ओमप्रकाश जी खिंदावत, सागरमल जी रतनलाल जी वया, राहुल जी सूरजमल जी वया, दिलीप कुमार जी आदित्य जी धींग, सुरेश जी शीतल जी गांधी, पुखराज जी हर्षित जी मोगरा, शैलेंद्र कुमार जी भंडारी, सुरेश जी बंबोरिया, लक्ष्मीलाल

जी नलवाया, अजीत कुमार जी भंडारी, अभय कुमार जी मथुरालाल जी मोगरा, प्रकाशचंद जी छिंगावत, संजय कुमार जी कच्छारा, सौरम जी (सीमा जी) डूंगरवाल, अमर सिंह जी मुणेत, आशीष जी विजेंद्र जी कच्छारा, मनोरमा देवी शांतिलाल जी दक, पारसमल जी खिंदावत, रोशनलाल जी भाविक जी फांफरिया, तेजमल जी सुनील कुमार नलवाया, शोभागमल जी भैरूलाल जी मुणेत, अंश जी अशोक कुमार जी कोठारी, किशोर सिंह जी मांगीलाल जी नांदेचा, समरथमल जी अजय जी कांठेड़, मिसरीलाल जी सुशील जी कांठेड़, अशोक कुमार जी शांतिलाल जी चौधरी, राहुल जी सुरेश जी पीपाड़ा, दिलीप कुमार जी शांतिलाल जी चौधरी, जिनेंद्र कुमार जी नागौरी, अशोक जी अजय जी नागौरी, निर्मला देवी राजमल जी डूंगरवाल, किशनलाल जी प्रशांत जी लोढ़ा, अमृतलाल जी मोदीलाल जी कांठेड़, सुजानमल जी धीरज जी गांधी, रोशनलाल जी अविनाश जी फाफरिया, अभय कुमार जी मोतीलाल जी सोनी, बसंत कुमार जी संजय जी कांठेड़, अमित कुमार जी विनोद कुमार जी संघवी, प्रो. अनिल कुमार जी जैन, सागरमल जी अखिलेश जी पटवारी, प्रेमचंद जी नपावलिया, विजय कुमार जी अभय कुमार जी नलवाया, लोकेश कुमार जी बहादुरमल जी चौधरी, भंवरलाल जी रामलाल जी मोगरा, ज्ञानचंद जी सहलोत, अभय जी सागरमल जी नलवाया, सुशीला देवी सुरेंद्र जी डूंगरवाल, संजय जी भामावत, लालचंद जी अजीत कुमार जी कोठीफोड़ा, हेमंत जी नलवाया, भूरालाल जी राजेश जी नलवाया, रविंद्र जी कांठेड़, बहादुरमल जी प्रवीण जी चौधरी, पारसमल जी ललित जी जैन, विजय कुमार जी हिमांशु जी पोरवाड़

जीवदया

21,000/- चैनराज जी पुत्र उत्तमचंद जी देवड़ा, औरंगाबाद (श्रीमती सूरज बाई की पुण्यस्मृति में)

20,000/- कमलचंद जी बैद, मुंबई

11,000/- श्री श्वेतांबर साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था, बीकानेर

11,000/- समता महिला मंडल, वापी

7,000/- भंवरलाल जी नोरतमल जी सेठी, अजमेर

5,000/- सोमेश्वर जी सिपानी, अहमदाबाद

2,100/- विजयचंद जी बरड़िया, गंगाशहर (पिता जी श्री त्रिलोकचंद जी बरड़िया की 43वीं पुण्यतिथि पर)

2,100/- गुप्तदान, सिरकाली

2,000/- मदनलाल जी ललिता देवी मनीष जी प्रियंका जी मोहित जी सुमन जी श्रीश्रीमाल, चित्तौड़गढ़ (ओजस्वी श्रीश्रीमाल के प्रथम जन्मदिवस पर)

1,500/- पीयूष जी मांडोत, पुणे

1,111/- मूलचंद जी मुकेश जी छाजेड़, साजा

501/- मोनालिसा जी जैन, रायपुर

500/- अंकुर जी जैन, राजा खरियार

समता प्रचार संघ

51,000/- बीरेंद्र जी गेलड़ा, हावड़ा

51,000/- सेठ पन्नालाल जी दुलीचंद जी कटारिया ट्रस्ट, रतलाम

21,000/- राजेश जी कांठेड़, इंदौर

समता संस्कार पाठशाला

16,500/- विनोद जी पी. कदमालिया, ठाणे

2,000/- मदनलाल जी ललिता देवी मनीष जी प्रियंका जी मोहित जी सुमन जी श्रीश्रीमाल, चित्तौड़गढ़ (ओजस्वी श्रीश्रीमाल के प्रथम जन्मदिवस पर)

विहार सेवा सदस्यता

50,001/- शांतिलाल जी विनोद कुमार जी कांठेड़, नीमच

समता सरिता सेवा/विहार सेवा

21,000/- कन्हैयालाल जी जारोली, देवगढ़

2,100/- सुरेश जी अरविंद जी कोटड़िया परिवार, शहादा (श्री खुशालचंद जी सोनराज जी कोटड़िया की पुण्यस्मृति में)

श्रमणोपासक भेंट

21,000/- टीकमचंद जी गौतमचंद जी प्रमोद कुमार जी ईशान सालेचा परिवार, खैरागढ़ (श्री यश जी सालेचा की पुण्यस्मृति में)

2,100/- सुरेश जी अरविंद जी कोटड़िया परिवार, शहादा (श्री खुशालचंद जी सोनराज जी कोटड़िया की पुण्यस्मृति में)

2,100/- भीकमचंद जी सुनील जी राकेश जी, चेन्नई (पौत्री इशिका पुत्री सुनील जी का विवाह योगेश पुत्र आनंद जी मोतीलाल जी चंडालिया, चेन्नई के साथ संपन्न होने पर)

1,100/- सुंदर बाई जी रायसोनी, सेमरा (पति श्री मोहनलाल जी रायसोनी की पुण्यस्मृति में)

1,100/- गौतमचंद जी अजीत कुमार जी जैन, कोटा (अमन पुत्र अशोक जी जैन, सोनू पुत्री पारस जी जैन के विवाह के पर)

1,100/- गौतमचंद जी अजीत कुमार जी जैन, कोटा (हिमांशु संग साक्षी के विवाह के उपलक्ष में)

समता मिति योजना

5,100/- श्रीमती पन्ना देवी मूलचंद जी सिपानी, गंगाशहर की पुण्यस्मृति में उनके पुत्रों द्वारा भेंट

समता जनकल्याण प्रन्यास

2,100/- सुरेश जी अरविंद जी कोटड़िया परिवार, शहादा (श्री खुशालचंद जी सोनराज जी कोटड़िया की पुण्यस्मृति में)

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

10,000/- गुप्तदान

5,000/- गुप्तदान, बीकानेर

4,000/- मोनिका जी ओस्तवाल, ब्यावर

2,100/- समता महिला मंडल, वापी

2,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- ममता जी मेहता, आमेट, **ब्यावर से-** जूली जी ओस्तवाल, ज्ञान कंवर जी ओस्तवाल, रूपल जी ओस्तवाल, संपत बाई श्रीश्रीमाल, शकुंतला जी लोढ़ा, अनिल जी लोढ़ा, पंकज जी लोढ़ा, चारु जी लोढ़ा, स्वप्निल जी लोढ़ा, निर्मला देवी कोठारी, ललिता जी ढेड़िया, रेखा जी ढेड़िया, मंजू जी पंच, रतन बाई नाबेड़ा, सज्जन देवी बोहरा, रंजना जी कर्णावट

1,500/- अरुणा जी बुरड़, ब्यावर

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- ब्यावर से- मधु जी श्रीश्रीमाल, मंजू जी रांका, राजुल जी रांका, मनोरमा बाई डागा, प्रेम बाई ललवानी, मुनिया बाई बाबेल, इंद्रकँवर जी खेतपालिया, पारसमल जी खेतपालिया, रिद्धि जी खेतपालिया, सुशीला जी मुणोत, सुशीला देवी हिंगड़, सुमन जी कर्णावत

1,000/- विकास जी बुरड़, ब्यावर

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- ब्यावर से- अनिता जी श्रीश्रीमाल, विनीता जी कोठारी, चंद्रकांता जी डागा, वनिता जी नाहर, मधु जी रांका, सुशीला जी खींचा, मधु जी खींचा, उत्तमचंद जी चौधरी, संतोष देवी नाहर, सुमन जी नाहर, शिखा जी नाहर, प्रमिला जी बोहरा, ललिता जी चोरड़िया, सोनू जी चौधरी, मनीष जी चौधरी, प्रेम बाई चौधरी, सुनीता जी लोढ़ा, रौनक जी बोहरा

:: **विशेष** ::

श्रमणोपासक सदस्यता-6, साहित्य सदस्यता-2, महिला समिति सदस्यता-253

:: 01 अप्रैल 2023 से 25 मार्च 2024 तक ::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में अधोलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन कार्यालय को जमाकर्ता के नाम एवं किस मद हेतु राशि जमा की गई इसकी सूचना प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ

जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नंबर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
12.04.23	501/- प्रतिमाह	UPI विपुल जैन
22.04.23	1,100/-	UPI सिंपल जैन
08.05.23	3,500/-	UPI राहुल
22.05.23	1,000/-	UPI विनोद बम्ब
06.07.23	3,000/-	नकद
20.07.23	1,000/-	UPI पिंकू
26.07.23	1,000/-	UPI प्रियंका
06.09.23	5,500/-	Cheque 403
19.09.23	2,100/-	UPI संजय
04.10.23	3,100/-	UPI मुकुल बोहरा
05.10.23	39,200/-	Ch. No. 732198
15.10.23	1,100/-	UPI विकास
16.10.23	21,000/-	Ch. No. 732210
30.10.23	2,100/-	UPI स्तुति
07.11.23	3,100/-	नकद
16.11.23	1,100/-	UPI सुशीला
11.12.23	2,500/-	NEFT
16.12.23	2,100/-	UPI कौशल
18.12.23	1,100/-	UPI महावीर
21.12.23	5,100/-	UPI चंचल
30.01.24	1,000/-	UPI गांधी सूर्या
02.02.24	1,111/-	UPI गौरव
06.02.24	11,000/-	UPI समता ट्रेडिंग
18.02.24	2,000/-	UPI ऋषभ जैन
29.02.24	7,000/-	नकद
05.03.24	11,000/-	UPI प्रदीप
09.03.24	3,500/-	UPI हेमेंद्र
11.03.24	3,100/-	नकद
11.03.24	1,500/-	नकद
21.03.24	51,000/-	Cheque 142
21.03.24	31,000/-	Cheque 150
22.03.24	4,920/-	नकद
27.03.24	50,000/-	कुमकुम जैन
27.03.24	50,000/-	MRS शांति जैन
30.03.24	1,100/-	धनश्री जैन
31.03.24	40,000/-	मधु एजेंसीज
यूको बैंक		
06.07.23	5,100/-	नकद
11.08.23	26,120/-	नकद
ए.यू. बैंक		
16.08.23	20,600/-	नकद

उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेंद्र!

26 मार्च से 30 अप्रैल 2024 की भेंट सूची आगामी समाचार अंक में प्रकाशित की जाएगी।

"तनिक सोचें कि दु:ख के मूल कारण क्या हैं? मनोविज्ञान ने इसके जो कारण ढूँढ़े हैं, उनमें एक है- **लोभ**। लोभ के बाद दूसरा कारण है- **भय**। भय क्यों पैदा होता है? हमारे भीतर लोभ है, तिरोहित नहीं होता। चित्तवृत्तियों में तृष्णा के भाव हैं, जो लोभ को प्रोत्साहित करते हैं। उसके कारण लोग भयभीत ही नहीं बने रहते, अपितु तनावग्रस्त भी बने रहते हैं। जो जिंदगीभर दूसरों को तनाव देता रहता है, वह स्वयं अमन-चैन से कैसे जी सकता है?

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

स्मृतिशेष अजय कुमार जी (लालू) पारख, राजनांदगाँव

सौम्यता, सहिष्णुता, सरलता, सज्जनता की प्रतिमूर्ति, दृढ़ इच्छाशक्ति के धनी, तपसाधक अजय कुमार जी का जन्म 05 जुलाई 1970 को तपसाधिका श्रीमती सूरज बाई की रत्नकुक्षी से पिता स्व. श्री शिवचंद जी पारख के घर-आँगन में राजनांदगाँव में हुआ। सुसंस्कारों के उपवन में आपका बाल्यकाल पल्लवित एवं पुष्पित हुआ। तप साधना आपको अपनी मातुश्री से विरासत में प्राप्त हुई, जिसके फलस्वरूप आपने तीन मासखमण, 15, 11, 8 सहित कई तपस्याएँ कीं। प्राय: आप हर शनिवार का आयंबिल किया करते थे। आपका शुभविवाह आर्वी निवासी स्व. ज्ञानचंद जी-प्रमिला देवी सकलेचा की सुपुत्री भावना जी के साथ 21 जनवरी 1995 को संपन्न हुआ।

आपश्री की आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा थी। गुरुवचनों को आपने अपनी पहचान बना लिया था। समता मंच, श्री देव आनंद जैन शिक्षण संघ के आप यशस्वी सदस्य थे। गुरुभक्ति के साथ-साथ आप राष्ट्रभक्ति में भी पीछे नहीं रहे।

आपकी मातुश्री श्रीमती सूरज बाई पारख ने 42, 36 की तपस्या के साथ छह मासखमण तप किए हैं। आपकी धर्मसहायिका ने एक मासखमण व 11 की तपस्या आपके साथ जोड़े से संपन्न की। इसके साथ 36, 15, 11, 8, आदि तपस्याएँ भी कीं। आप दो बार समता बहू मंडल की अध्यक्षा रही हैं।

संघ महाप्रभावक सदस्य आपके अग्रज भ्राता खूबचंद जी पारख ने राजनैतिक क्षेत्र में शुचिता, प्रामाणिकता के साथ अपनी जो छवि बनाई है, वह अपने आप में आदर्श है। आपके ही अग्रज भ्राता गौतम जी पारख विभिन्न संस्थानों के माध्यम से शिक्षा, सेवा, व्यसनमुक्ति का कार्य करने के साथ ही श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय महामंत्री व श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के दो बार राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं।

स्मृतिशेष अजय जी का मिलनसारिता के साथ सदा मुस्कुराता चेहरा पारिवारिकजनों के बीच आत्मीयता बाँटने की अनोखी शैली से भरा था। आपका 03 मार्च 2024 को असमय हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। आप शीघ्र ही शाश्वत सुख को प्राप्त करें, यही प्रार्थना....

श्रद्धावनत

सूरज बाई (मातुश्री), **खूबचंद-चमेली देवी पारख, गौतमचंद-सुमन देवी पारख** (अग्रज भ्राता-भाभी), **भावना** (धर्मपत्नी), **सरिता-अजय गटागट, इंदु-संजय सुराना** (बहन-बहनोई), **गौरव-अंशु, सौरभ-मधु** (भतीजे-(भतीजे वधू), **केतन-आस्था** (पुत्र-पुत्रवधू), **नियति** (पुत्री), **हार्दिक** (पौत्र) **एवं समस्त पारख परिवार, राजनांदगाँव।**

राम चमकते भानु समाना

विनम्र श्रद्धांजलि

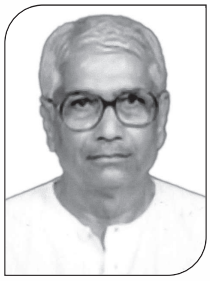

बीकानेर। सुश्रावक विजयचंद जी सुपुत्र श्री दीपचंद जी पारख का 07 फरवरी को 83 वर्ष की आयु में

सागारी संथारे सहित महाप्रयाण हो गया। आपकी देव, गुरु, धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा थी। आपका जीवन सादगी, सरलता एवं आत्मीयता से परिपूर्ण था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

जयपुर। सुश्राविका लक्ष्मी देवी धर्मपत्नी स्व. श्री

श्रीचंद जी नाहर का 10 फरवरी को 79 वर्ष की आयु में निधन हो गया। धार्मिक प्रवृति, सरल स्वभावी, मृदुभाषी आदि से ओत-प्रोत लक्ष्मी देवी की देव, गुरु, धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

टंगला। सुश्राविका कंचन देवी धर्मपत्नी पदमचंद जी कांकरिया गोगेलाव निवासी का 25 फरवरी को

75 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप मृदुभाषी, मिलनसार एवं देव, गुरु, धर्म के प्रति अटूट श्रद्धावान थीं। नियमित सामायिक, प्रतिक्रमण का लक्ष्य रखती थीं। आपने ग्यारह, पंद्रह, दो वर्षीतप, एकासन सहित अनेक तपस्याओं से जीवन भावित किया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

बड़ीसादड़ी। सुश्राविका कमला देवी धर्मपत्नी स्व. श्री सुल्तान सिंह जी मेहता का 27 फरवरी को 91 वर्ष की

आयु में देहावसान हो गया। आपने अपने जीवन में अठाई सहित अनेक तपस्याएँ कीं। आप चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहीं। मरणोपरांत आपके नेत्र दान किए गए। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

नोखा। सुश्रावक सालमचंद जी सुपुत्र स्व. श्री

सोहनलाल जी बांठिया का 10 दिवसीय संथारे सहित 05 मार्च को महाप्रयाण हो गया। समाधि भावों में रमण करते हुए आपने श्रावक का तीसरा मनोरथ पूर्ण किया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

बिलासीपाड़ा। सुश्रावक भंवरलाल जी सुपुत्र स्व. श्री नेमचंद जी लुणावत का 16 मार्च को 83 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

कांकरोली। सुश्राविका पुष्पा देवी धर्मपत्नी लालचंद जी रांका, जयनगर निवासी का 23 मार्च को निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, मिलनसार महिला थीं। आचार्य श्री नानेश व आचार्य

श्री रामेश के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

शहादा। सुश्रावक जसराज जी चोरड़िया का

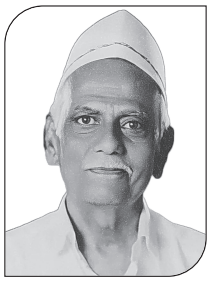

26 मार्च को चौविहार संथारे सहित महाप्रयाण हो गया। प्रतिवर्ष गुरुदर्शनों का लक्ष्य रखते हुए आप आचार्य प्रवर के प्रति अटूट आस्थावान थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

भीनासर। सुश्राविका गट्टू देवी धर्मपत्नी स्व. श्री श्रीपाल जी कोचर हावड़ा प्रवासी का 28

मार्च को 95 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप अत्यंत ही मृदुभाषी, मिलनसार महिला थीं। आप साधुमार्गी संघ के समस्त आचार्यों के प्रति अटूट श्रद्धावान थीं। आपने अठाई, पंचोला, तेला आदि से जीवन सजाया हुआ था। मरणोपरांत आपके नेत्र दान किए गए। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

कंजार्ड़ा। सुश्रावक शोभालाल जी सुपुत्र स्व. श्री नाथूलाल जी भंडारी का 01 अप्रैल को 67 वर्ष की आयु

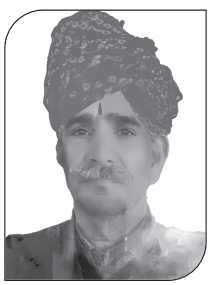

में देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा थी। सादगी, मृदुभाषिता एवं व्यवहार कुशल शोभालाल जी अपने पीछे भरा- पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

नानेशनगर (दाँता)। सुश्रावक सुरेशचंद्र जी पोखरना का 03 अप्रैल को 57 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप सरल, सहज, मिलनसार व्यक्तित्व के

धनी थे। आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धा से आप परिपूर्ण थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

नोखा/कडूर। सुश्रावक कमलचंद जी सुपुत्र स्व. श्री भैरूदान

जी डागा का 07 अप्रैल को 63 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप साध्वी श्री केसर कँवर जी म.सा. के संसारपक्षीय भतीजे थे। सहजता, सादगी, सरलता, मिलनसारिता आपके विशिष्ट गुण थे। आपकी आचार्य श्री रामेश के प्रति एकनिष्ठ श्रद्धा थी। आपने कडूर संघ के अध्यक्ष के रूप में सेवाएँ प्रदान कीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

बीकानेर। सुश्रावक शांतिलाल

जी सुपुत्र स्व. श्री सोहनलाल जी अभाणी का 19 जनवरी को 80 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपने चारित्रात्माओं की सेवा को सर्वोपरि रखा। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

दोंडाईचा। सुश्रावक शांतिलाल जी सुपुत्र पन्नालाल जी भंडारी का 82 वर्ष की आयु में सागारी

संथारा सहित महाप्रयाण हो गया। आपका जीवन त्याग-प्रत्याख्यान से सजा हुआ था। आप प्रतिदिन सामायिक, स्वाध्याय और नवकारसी करने का लक्ष्य रखते थे। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के अनन्य भक्त थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

चिंतन की कड़ियाँ

सूख न जाए सुख

सुखमय जीवन जीने के लिए जरूरी है कि स्वयं को सरल बनाओ। सरलता की परिभाषा है– जैसा भावों में, जैसा मन में हो, वैसा ही कहना एवं करना। भाव, भाषा, मन और काया (प्रवृत्ति) में भिन्नता नहीं होना। जहाँ इनमें भिन्नता होती है, वहाँ सरलता नहीं रह सकती। कुछ न कुछ वक्रता आ ही जाएगी, इसलिए इनमें भिन्नता नहीं आने देनी चाहिए। किसी को राजी रखने के लिए मन में कुछ हो और वचन उससे भिन्न प्रयोग किया जाए तो वह सुखमय जीवन में बाधाएँ खड़ी करेगा। आज नहीं तो कल उसे अशांति आ घेरेगी।

सरलता–सत्य के निकट ले जाती है, जबकि वक्रता असत्य की ओर। वक्रता से मन कलुषित होने लगता है। उसकी स्वस्थता बाधित होने लगती है। परिणामस्वरूप उसमें तनाव आएगा। उससे उसका सुखमय जीवन धीरे–धीरे दु:खमय बन जाता है। सुख, सूख जाता है। दु:ख आर्द्र हो जाता है। अत: स्वयं को सरल बनाओ।

(उपांशु)

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

युवती शक्ति

युवती शक्ति मंच युवतियों के विकास के साथ-साथ युवती शक्ति से जुड़ी सभी संयोजिकाओं की प्रतिभाओं को खोजने का सतत प्रयास कर रहा है।

इसी क्रम में युवती शक्ति अंचल संयोजिकाओं एवं स्थानीय संयोजिकाओं के लिए 'A.B.C.D.' नामक गतिविधि लेकर आई थी।

A.B.C.D. (एड बनाओ क्रिएटिविटी दिखाओ)

इस प्रतियोगिता का विषय '**अभिमोक्षम् : A Holistic Residential Camp**' था, जिसमें भाग लेने वाले प्रतिभागियों को अभिमोक्षम् के प्रचार-प्रसार हेतु DTP, Video, कविता, नाटिका आदि बनाकर अपनी Creativity से सभी को जोड़ना था। इस प्रतियोगिता में 35 संयोजिकाओं ने भाग लिया, जिसमें से प्रथम तीन विजेता इस प्रकार रहीं – 1. कोमल जी सुखलेचा, बीकानेर, 2. ऊषा जी कांकरिया, धामणगाँव, 3. श्वेता जी धारीवाल, रायपुर।

A.B.C.D. प्रतियोगिता में सहभागी रहीं संयोजिकाओं की संख्यानुसार अंचलों का क्रम इस प्रकार रहा–

● मुंबई–गुजरात–यू.ए.ई. अंचल ● छत्तीसगढ़–उड़ीसा अंचल ● मध्य प्रदेश अंचल। सभी संयोजिकाओं को अथक पुरुषार्थ के लिए बहुत–बहुत साधुवाद!

इसी क्रम में 22–31 मार्च 2024 के मध्य में **An Office Planet (महत्तम सामायिक दिवस)** सभी स्थानीय क्षेत्रों में करवाया गया। अभी तक प्राप्त जानकारी के अनुसार अंचलवार प्रतिभागियों की संख्या –

- मेवाड़ अंचल – 83
- बीकानेर-मारवाड़ अंचल – 134
- जयपुर-ब्यावर अंचल – 73
- मध्य प्रदेश अंचल – 65
- छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल – 84
- मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल – 78
- महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल – 48
- पूर्वोत्तर अंचल – 39

कुल 604 युवतियों ने भाग लेकर जैन सिद्धांत बत्तीसी पर आधारित गतिविधि की।

Sadhumargi Women's Motivational Forum

वुमन्स मोटिवेशनल फोरम

बड़े ही हर्ष का विषय है कि श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति के अंतर्गत संचालित प्रवृत्ति '**साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम**' की प्रवृत्ति प्रमुख पद के लिए त्रिशला जी भंसाली, कोलकाता का मनोनयन किया गया है।

वर्षीतप करने वाली बहनों की सूची

तप जीवन का आधार है, तप श्रावक का शृंगार है।
तप की महिमा अपरंपार है, तप से होता भवपार है।।
तप से होती कर्मों की निर्जरा, तप से मिलती है जीवन में नई ऊर्जा।
वर्षभर का तप वर्षीतप कहलाता है, मानव यह तप कर अपना जीवन महकाता है।।

क्षेत्र	तपस्विनियों के नाम
मेवाड़ अंचल :	
भीलवाड़ा	मोनिका जी सेठिया, किरण जी सेठिया, कुसुम जी नागौरी, चंद्रिका जी कटारिया, वर्षा जी दक, रंजना जी दक
भदेसर	विजयलक्ष्मी जी मोदी
चित्तौड़गढ़	ललिता जी नाहर, मंजू जी भड़कत्या, चंदा जी गांग
दाँता	कोयल जी पोखरना
उदयपुर	मीरा जी मेहता, मंजुलता जी मोगरा, रेखा जी भंडारी
निम्बाहेड़ा	मंजू जी सेठिया, कल्पना जी सिंघवी, कुसुम जी पोरवाल
आवरी माता	कमला बाई मट्ठा, स्नेहलता जी नवलखा
बड़ीसादड़ी	प्रमिला जी मोगरा, अलका जी मारू, संगीता जी मेहता
फतहनगर	प्रमिला जी मारू
बीकानेर-मारवाड़ अंचल :	
नागौर	विनोद देवी सेठिया
अलाय	शांति देवी सेठिया
गंगाशहर	सरिता देवी सुराना, चंद्रकला जी भूरा
नोखा	गुलाब देवी बुच्चा, सुमित्रा देवी पारख, लक्ष्मी देवी संचेती
जोधपुर	शांति बाई सिसोदिया
सरदारशहर	सरोज देवी तातेड़
बीकानेर	आशा देवी रांका, शांति बाई बेगानी, पुष्पा जी बाँठिया, कंचन जी बुच्चा, कस्तूरी जी गुलगुलिया, शशि देवी सांड (कोटा प्रवासी)
रावतसर	शकुंतला देवी गोलछा
जयपुर-ब्यावर अंचल :	
ब्यावर	चंद्रकांता जी बाबेल, मंजू जी मेहता, नवरत्न बाई रांका, मधु जी श्रीश्रीमाल
मध्य प्रदेश अंचल :	
जावद	निर्मला जी पोरवाल, इंदिरा जी चौधरी,
बदनावर	किरण जी भड़कत्या

क्षेत्र	तपस्विनियों के नाम
मूंदी	अनिता जी कोचर, सुशीला जी कोचर, छाया जी दस्सानी, भावना जी चौरड़िया, सरोज जी कर्नावट, संगीता जी बम्ब, आशा जी बम्ब
रावटी	ललिता जी कटारिया
नीमच	भावना जी वया, लता जी बोकड़िया
रतलाम	स्नेहा जी मुणोत, प्रवीणा जी मुणोत, सरोज जी बंबोरी, साधना जी कोठारी, मधु जी मुणोत, प्रभा जी कोठारी, मंजू जी गाँधी, सरोज जी मुणोत, कुसुम जी गाँधी, मधुबाला जी गोरेचा, स्नेहलता जी बाफना, चंदनबाला मुणोत, सुनीता जी कटारिया, आजाद देवी मेहता, त्रिशला जी मुणोत, वेणुबाला जी मुणोत, शांता देवी कटारिया, सुनीता जी कटारिया, राजकुमारी जी मुणोत, सीमा जी सिसोदिया, रेखा जी गाँधी, सुचिता जी श्रीमाल, इंदु जी नाहटा
मंदसौर	अरुणा जी भटेवरा, निर्मला जी पोरवाल, आभा जी पोरवाल, रचना जी चौधरी, कमलेश जी पोरवाल
खाचरौद	चंद्रा जी मांदेचा
बिरमावल	अनिता जी श्रीश्रीमाल
चारूआ	मैना जी चपलोत
पिपलिया मंडी	रीना जी भंडारी, विद्या जी भंडारी, मेघा जी पामेचा, सुनीता बंबोरिया, रिंकू जी पितलिया
बुरहानपुर	निर्मला जी झेलमी
जावरा	अर्चना जी कांठेड़, ममता जी सेठिया, अल्का जी सेठिया, शीतल जी सेठिया, बोस्की जी पोखरना, नेहल जी कोठारी, कल्पना जी धारीवाल, संगीता जी पोखरना, आशा जी भंडारी, निर्मला जी नवलखा, किरण जी चौरड़िया
इंदौर	निर्मला जी कास्टिया, रानी जी सुराणा, अंगूरबाला जी जैन, संगीता सुराणा, रंजना जी भलावत
छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल :	
दुर्ग	चंदा जी बोथरा, सुमन जी बोथरा, संध्या जी बोथरा, लीला जी पारख, सीमा जी पारख, उषा जी श्रीश्रीमाल, वीणा जी श्रीश्रीमाल, मीना जी सांखला, उर्मिला जी सांखला, संगीता जी सांखला, ज्योति जी सांखला, नीरू जी सांखला, राखी जी सांखला, टीपू बाई वोरा
रायपुर	बसंती देवी चौरड़िया, किरण जी चौपड़ा, रामी देवी संचेती, सुरभि जी चौरड़िया, मनु बाई बरड़िया
धमतरी	तारा बाई संकलेचा, कंचन जी बरड़िया, किरण जी नाहर, पुष्पा जी बुरड़
नगरी	इंदिरा जी नाहटा, आशा जी बंब, मधु जी नाहटा, किरण जी नाहटा
बालोद	कंचन जी श्रीश्रीमाल, बरखा जी सांखला, संध्या जी बाफना
राजनांदगाँव	सूरज बाई सुराणा, चंचल जी पारख
भाटापारा	लव्या जी ललवाणी
डौंडी	समता जी संचेती
बेरला	विमला देवी लोढ़ा
खैरागढ़	सरला जी सांखला, नेहा जी कोटड़िया
खरियार रोड	मीनल जी ढोलकिया
लखनपुरी	अनीता जी बाफना
कांकेर	ज्योति जी कोचर
महासमुंद	लक्ष्मी बाई लोढ़ा

क्षेत्र	तपस्विनियों के नाम
दल्लीराजहरा	मंजू जी टाटिया
संबलपुर (लोहारा)	पुष्पा जी संचेती
कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल :	
हैदराबाद	संगीता जी पितलिया, नीलम जी पितलिया, कंचन बाई पितलिया, शकुंतला जी गुगलिया, डिंपल जी पितलिया, वंदना जी खिंवसरा, शोभा जी नाहर, प्रेमा बाई पितलिया, सपना जी सिंघवी, लता जी सिंघवी, डिंपल जी चाणोदिया, चंचल जी चाणोदिया
बेंगलुरु	मंजू जी खींवसरा, मंजू जी कोठारी, चंद्रा जी नंदावत, कमला जी कोठारी, सीता जी चपलोत, अजित जी चपलोत, धन्ना बाई नागौरी
हुबली	शोभा देवी कटारिया
बेल्लारी	लता जी बोथरा
तमिलनाडु अंचल :	
चेन्नई	ममता जी बुरट, ऊषा जी झामड़, मंगला बाई गुगलिया, शांति बाई गुगलिया, मंजू जी सोनी, सरोज जी लोढ़ा
विल्लीपुरम	संगीता जी कातरेला, प्रभा जी दुगड़
मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल :	
सूरत	हुलासी देवी मेहता, वीना जी श्रीश्रीमाल, संपत जी श्रीश्रीमाल, कांता जी कोठारी, रिद्धी जी गांग, रेखा जी बंबकी, संगीता जी सेठिया, किरण जी बैद, संगीता जी चौपड़ा, नीता जी पोखरना, रेखा जी बाघमार, ऊमा जी कालिया, आशा जी जारोली, सुधा जी सिंघी, चेतना बेन देसरला
मुंबई	मधु जी ओस्तवाल, अनुपमा जी धाकड़, दीपिका जी जैन, नीलम जी रांका
अहमदाबाद	पिस्ता जी सांखला, सुनीता जी तलेसरा, लक्ष्मी जी संचेती, लक्ष्मी जी भटेवरा
सेलंबा	सरला जी पारलेचा, सूरज बाई चौरड़िया
नवसारी	प्रीति बेन रायसोनी
महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल :	
जलगाँव	ऊषा जी कोठारी, छाया जी मलारा, राज बाई पोरवाल, कंचन बाई सांड
औरंगाबाद	पुष्पा जी समदड़िया, शांता बाई कोठारी, सुशीला बाई बंब
नासिक	शिल्पा जी खिंवसरा, रेखा जी छाजेड़
नंदुरबार	उज्ज्वला जी कांकरिया
दोंडाईचा	शोभा जी चतुरमूथा
शिरपुर	सुशीला जी बाफना
नागपुर	शोभा जी आसानी
बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान अंचल :	
सिलीगुड़ी	सरोज देवी मिन्नी
पूर्वोत्तर अंचल :	
गुवाहाटी	सरोज जी सिपानी, कौशल्या जी भूरा
ग्वालपाड़ा	सायर देवी भूरा
कैलासर	चंदा देवी दफ्तरी
करीमगंज	ज्ञानी बाई भूरा
सिलापथार	अनीता जी संचेती
दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तर प्रदेश अंचल :	
पंचकुला	संतोष जी रामपुरिया, रजनी जी जैन
लुधियाना	निर्मला जी सेठिया
दिल्ली	कंचन जी आंचलिया

वर्षीतप आराधकों की सुख-साता पूछते हुए शुभेच्छा है कि आपकी तपस्या निर्बाध सातापूर्वक हो। हम आपके तपोबल की आत्मीय अनुमोदना करते हैं।

सामाजिक कार्य

क्षेत्र	विवरण
उदयपुर	समता बहू मंडल द्वारा अंध विद्यालय, उदयपुर में भोजन वितरण किया गया। '**खुशियों के पल विशेष योग्यजनों के संग**' के तहत 01 मार्च 2024 को प्रज्ञा चक्षु संस्थान, अंध विद्यालय, मल्ला तलाई में 90 से अधिक बच्चों को भोजन करवाया गया।
मुंबई	50 हजार रुपए का अनाज वितरण किया गया।
राजनांदगाँव	21 हजार रुपए का अनाज वितरण किया गया।
बेरला	सरकारी अस्पताल में फल वितरित किए गए। प्रत्येक रविवार को नवकार गौशाला में गायों को रोटी खिलाई जाती है।
खैरागढ़	सरकारी अस्पताल में मरीजों को फल व बिस्किट वितरित किए गए।
दुर्ग	₹ 1,100/- श्री कृष्ण गौशाला जीव रक्षा केंद्र में दिए गए। पुलगाँव वृद्धाश्रम में भोजन वितरण किया गया। नयनदीप अंध विद्यालय में नाश्ता व भोजन दिया गया।
डौंडीलोहारा	15 दिन का अनाज पैकेट 15 जरूरतमंद लोगों को दिया गया।
रायपुर	कर्मा कुष्ठ आश्रम में 90 लोगों को भोजन वितरण किया गया। प्रेरणा अंध विद्यालय में फल, बिस्किट व भोजन वितरण किया गया।
सिलचर	कछार कैंसर हॉस्पिटल में 9 यूनिट रक्तदान किया गया।

धार्मिक शिविर

देश के अनेक क्षेत्रों में चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में विविध विषयों पर आयोजित शिविरों का विवरण –

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
1.	खाली आए थे भरके जाएँ	भीलवाड़ा	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा.
2.	बिंदु से सिंधु तक	उदयपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा.
3.	आओ जिनशासन में रखें कदम	धुलिया	शासन दीपक श्री पदम मुनि जी म.सा.
4.	लेश्या ज्ञानावरणीय कर्म का स्वरूप	राजनांदगाँव	शासन दीपिका साध्वी श्री शृंगार श्री जी म.सा.
5.	लघुदंडक, गमक का थोकड़ा	दुर्ग	शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा.
6.	होली पर हम प्रभु के हो लें	रायपुर	शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा.
7.	मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है, धोवन पानी का प्रयोग	नवसारी	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमनप्रभा श्री जी म.सा.
8.	लघुदंडक व ज्ञान प्रत्यनिक का थोकड़ा	साजा	साध्वी श्री रजतमणि श्री जी म.सा.
9.	ज्ञान व ज्ञान लब्धि का थोकड़ा	भाटापारा	साध्वी श्री हर्षिता श्री जी म.सा.
10.	जीवन जीने की कला	डौंडी	होली चातुर्मास पर स्वाध्यायी संतोष जी जैन, शौर्य जी बैद, संस्कार जी बैद के सान्निध्य में
11.	ऐसी वाणी बोलिए	खैरागढ़	होली चातुर्मास पर स्वाध्यायी अशोक जी संचेती, संतोष जी कांकरिया के सान्निध्य में
12.	बच्चों को संस्कारी बनाएँ	बेरला	होली चातुर्मास पर स्वाध्यायी पुष्पा जी ओस्तवाल, विमला जी ओस्तवाल के सान्निध्य में
13.	प्रतिक्रमण का थोकड़ा, अंकों का फेर	गुंडरदेही	होली चातुर्मास पर स्वाध्यायी विजय जी टाटिया, धर्मेंद्र जी पारख के सान्निध्य में

बीकानेर-मारवाड़ अंचल प्रवास संपन्न

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में बीकानेर-मारवाड़ अंचल का पाँच दिवसीय प्रवास 27 से 31 मार्च 2024 को आयोजित किया गया, जिसमें राष्ट्रीय पदाधिकारियों के साथ आंचलिक प्रमुख, केसरिया कार्यशाला संयोजिका, परिवारांजलि संयोजिका एवं सह-संयोजिका आदि की विशेष उपस्थिति रही।

सभी प्रवास स्थलों पर आयोजित सभाओं में राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा समिति की प्रवृत्तियों एवं महत्तम महोत्सव सहित विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालते हुए साप्ताहिक, पाक्षिक मंडल लगाने आदि की प्रेरणा दी। गोलुवाला एवं सरदारशहर में नवीन मंडलों का गठन, रामा मंडी में प्रतिनिधि क्षेत्र का गठन, भिन्न-भिन्न स्थानों पर 7 नववधुओं का स्वागत, वीर परिवारों का अभिनंदन आदि समिति उत्थान के कार्यक्रमों के साथ अनेक स्थानों पर विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का लाभ सहज ही प्राप्त हुआ। सिरसा में सप्ताह में तीन दिन सामहिक मंडल का आयोजन होता है। अंचल के 10 क्षेत्रों में सामायिक दिवस मनाया गया और केसरिया कार्यशाला संपादित की जा रही है। शेष क्षेत्रों में संयोजिकाओं के माध्यम से गतिविधियों से जुड़ने की प्रेरणा दी गई। प्रवास के दौरान संपर्क में आने वाले प्रोफेशनल्स से साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम से जुड़ने, भ्रूणहत्या त्याग संकल्प-पत्र भरने, 11 अंजलिया में भूल-चूक होने पर आलोचना एवं प्रायश्चित्त करने की प्रभावना की गई।

सभी स्थानीय संयोजिकाओं को रिपोर्टिंग सिस्टम के अंतर्गत प्रत्येक 4 माह की रिपोर्ट अनिवार्य रूप से भरने, श्रमणोपासक पढ़ने आदि की प्रेरणा दी गई। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष द्वारा विदेशों में निवासरत साधुमार्गी परिवारों के सदस्यों की सूची प्रस्तुत की गई एवं प्रतिक्रमण कंठस्थ करने पर जोर दिया गया।

सभी प्रवासी सदस्यों ने महत्तम शिखर के प्रकल्पों, अभिमोक्षम् शिविर, जैन संस्कार पाठ्यक्रम सहित विभिन्न परीक्षाओं में भाग लेने हेतु विशेष प्रभावना की गई एवं अक्षय तृतीया पर वर्षीतप पारणा हेतु चित्तौड़गढ़ पधारने की विनती की गई।

प्रवासी दल को देशनोक में आचार्यश्री की जन्मस्थली के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्थानीय प्रतिनिधियों से क्षेत्र में हुए कार्यों की जानकारी दी। पडियाल में बच्चों ने अपनी-अपनी माता को प्रतिक्रमण कंठस्थ करवाने का संकल्प लिया।

अपूर्व उल्लास के साथ अंचल के नागौर, अलाय, पाँचू, घंटियाली, पडियाल, चाडी, नोखागाँव, जोरावरपुरा, नोखामंडी, देशनोक, लूणकरणसर, सूरतगढ़, पीलीबंगा, गोलुवाला, रावतसर, सांगरिया मंडी, रामा मंडी, सिरसा मंडी, सरदारशहर, उदासर, उदयरामसर, गंगाशहर, भीनासर एवं बीकानेर आदि 23 से अधिक क्षेत्रों का प्रवास संपन्न हुआ।

द्वितीय राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक संपन्न

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष की अध्यक्षता में महिला समिति की द्वितीय कार्यकारिणी बैठक 25 मार्च 2024 को मंगलवाड़ चौराहा में आयोजित की गई। बैठक का शुभारंभ परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचानाचार्य उपाध्याय प्रवर

श्री राजेश मुनि जी म.सा. एवं सभी चारित्रात्माओं के चरणों में वंदन सहित मंगलाचरण से हुआ। मंगलाचरण पश्चात् राष्ट्रीय अध्यक्ष जी द्वारा साधुमार्गी संकल्प सूत्र का वाचन करवाया गया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने गत कार्यकारिणी मीटिंग की रिपोर्ट सदन के पटल पर रखी, जिसे सर्वानुमति से पारित किया गया। तत्पश्चात् आपने अन्य गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए चित्तौड़गढ़ में होने वाले अभिमोक्षम् शिविर, अक्षय तृतीया पर 3100 एकासन के आह्वान की प्रभावना की। आपने बताया कि किंगमेकर कार्यक्रम चारित्रात्माओं के सान्निध्य में संपन्न हुआ, जिसमें युवक-युवतियों को स्वाध्यायी सेवा देने एवं ज्ञानार्जन के उद्देश्य से शिविर आयोजित किया गया एवं लीडरशिप एक्सीलेंस कार्यक्रम के अंतर्गत कुल 4 कार्यक्रमों आयोजित हुए हैं। क्षेत्रीय प्रवास के अंतर्गत 23 से 25 जनवरी को मध्य प्रदेश अंचल, 24-25 फरवरी को मुंबई-गुजरात अंचल, 26 से 28 फरवरी को मेवाड़ अंचल एवं 02 मार्च को छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल का सघन प्रवास किया गया, जिसके रिपोर्ट सदन के समक्ष प्रस्तुत की गई है। आपने समिति के अंतर्गत संचालित विभिन्न प्रवृत्तियों की त्रैमासिक रिपोर्ट भी प्रस्तुत की।

युवती शक्ति, केसरिया कार्यशाला, परिवारांजलि, संगठन, प्रतिक्रमण एवं युवती शक्ति की राष्ट्रीय/अंचल संयोजिकाओं द्वारा त्रैमासिक रिपोर्ट में विस्तृत विवरण सदन के ध्यानार्थ प्रस्तुत किया। समता छात्रवृत्ति के अंतर्गत साधुमार्गी परिवारों के प्रतिभावान बच्चों को प्रदान की गई छात्रवृत्ति का विवरण मुंबई-गुजरात अंचल की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-मंत्री त्रैमासिक रिपोर्ट प्रस्तुतिकरण में मेवाड़ अंचल, जयपुर-ब्यावर अंचल, मध्य प्रदेश अंचल, छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल, मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल, कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल, दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी अंचल की उपाध्यक्ष/मंत्री ने अपने-अपने अंचल में हुए विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों का विहंगावलोकन करवाया।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष जी ने विभिन्न प्रकल्पों के लिए आगामी सत्र 2024-25 के बजट विवरण से सभा को अवगत कराया, जिस पर संपूर्ण सदन ने स्वीकृति प्रदान की।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने महिला समिति के कार्यों व उत्साह पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए महत्तम शिखर के कार्य को अतिउत्साह के साथ अंगीकार करने की प्रेरणा दी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जिस प्रकार भगवान महावीर के समय धर्म-ध्यान एवं धर्म कार्यों में श्रावक से अधिक श्राविकाएँ रत थीं, उसी आधार पर महिला समिति के पास कार्य की जिम्मेदारी अधिक है। पूर्वाचार्यों सहित वर्तमान आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर, चारित्रात्माओं तथा पूर्व अध्यक्षों व सदस्यों के अथक प्रयासों से समिति निरंतर ऊँचाइयों को छू रही है। 10 से 26 मई तक आयोजित होने वाले अभिमोक्षम् शिविर की प्रभावना अधिकाधिक करते हुए बच्चों को प्रोत्साहित कर शिविर में भेजने का लक्ष्य रखें। सदन से अनुरोध किया कि यदि कोई शिविर में सेवा देने हेतु इच्छुक है तो 17 दिन के लिए चित्तौड़गढ़ पधारें। 10 मई को अक्षय तृतीया पर वर्षीतप पारणे चित्तौड़गढ़ में होंगे। इस अवसर हेतु 3100 एकासन का आह्वान हुआ है, जिसे पूर्ण करने का लक्ष्य रखें। आपने सामायिक दिवस, आगामी प्रवास, गणवेश एकरूपता, प्रतिक्रमण संबंधित कार्य, समता छात्रवृत्ति सहित अनेक विषयों पर प्रभावी मार्गदर्शन प्रदान करते हुए मंगलवाड़ चौराहा में उत्कृष्ट व्यवस्थाओं हेतु ओस्तवाल परिवार को धन्यवाद ज्ञापित किया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने जयंती बाई श्रमणोपासिका की विजेता प्रतिभागी के नाम की घोषणा हेतु पूर्व अध्यक्ष जी को आमंत्रित किया, जिन्होंने विजेता के रूप में मधु जी घोटा, रतलाम के नाम की घोषणा की। मधु जी को ट्रॉफी देकर व क्राउन पहनाकर सम्मानित किया गया।

लीडरशिप ट्रेनिंग प्रोग्राम के संबंध में श्वेता जी बच्छावत ने जानकारी दी एवं आध्यात्मिक लेवल पर मन को मजबूत बनाने के लाभ बताए। संघ संमर्पणा गीत के सामूहिक गान के साथ मीटिंग का समापन किया गया।

-राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

षष्ठम् कार्यसमिति सभा सत्र 2022-24

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की अध्यक्षता में सत्र 2022-24 की षष्ठम् कार्यसमिति सभा का आयोजन मंगलवाड़ चौराहा में 25 मार्च 2024 को किया गया।

मंगलाचरण समता युवा संघ, मंगलवाड़ चौराहा द्वारा किया गया। तत्पश्चात् विगत समय में देवलोक गमन करने वाली चारित्रात्माओं को श्रद्धांजलि स्वरूप 4-4 लोगस्स का ध्यान संपूर्ण सदन द्वारा किया गया। समता युवा संघ, मंगलवाड़ चौराहा के अध्यक्ष ने सभी पदाधिकारियों एवं कार्यसमिति सदस्यों का आत्मीय स्वागत किया।

ऊर्जावान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि हम सबको अनेक बार ऐसे अवसर मिलें होंगे जब हमने अपने आपको गौरवान्वित महसूस किया होगा। जब जिनशासन की सेवा करते हैं, संघ की सेवा करते हैं, हमें आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश की परिज्ञा में सेवा करने का अवसर मिलता है तो उस अवसर से हमें जो आत्मसंतुष्टि व उपलब्धि मिलती है उसमें एक विशेष अनुभूति होती है। महापुरुषों के आशीर्वाद एवं आप सबके सहयोग से श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ मजबूती और संगठनात्मक संघ रचना के साथ अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है। 18 फरवरी 2024 को '**महत्तम समता शाखा**' दिवस पर जबरदस्त उत्साह के साथ हम लगभग 20000 की सामूहिक संख्या तक पहुँचे। सामूहिक रूप से होने वाली यह सबसे बड़ी समता शाखा रही। इस उत्साह को बरकरार रखें। इसी क्रम में 21 फरवरी 2024 को प्रेरणात्मक ऊर्जा दिखाते हुए महत्तम महोत्सव के शिखर वर्ष का पूरे भारतवर्ष में बहुत ही भव्य रूप से आगाज हुआ। इसी भाँति हमारे मन में जो ऊर्जा जगी हुई है उस ऊर्जा से आने वाले समय में अपनी जिम्मेदारियों को अच्छे से निभाते हुए हमें और मजबूती के साथ आगे बढ़ना है।

यह कार्यकाल एवं सत्र 2022-24 साधारण सत्र नहीं है। इस सत्र में बहुत ही विशिष्ट उत्सव '**महत्तम महोत्सव**' हम लोगों के बीच है। हम सबको मिलकर इस '**महत्तम शिखर वर्ष**' को और अधिक महत्तम बनाना है।

राष्ट्रीय महामंत्री ने पंचम् कार्यसमिति सभा का विवरण सदन में प्रस्तुत किया, जिसे उपस्थित सभासदों ने सर्वानुमति से पारित किया। आपने समता युवा संघ का 01.01.2024 से 15.03.2024 तक का प्रगति प्रतिवेदन सदन भी में प्रस्तुत किया गया।

सदन में उपस्थित उपाध्यक्षों ने अपने-अपने अंचल का विगत तीन माह का प्रगति प्रतिवेदन सदन के समक्ष प्रस्तुत किया। सभा में आगामी कार्य योजनाओं पर विचार-विमर्श हुआ।

सभा में पधारे सभी सदस्यों एवं मंगलवाड़ चौराहा संघ द्वारा आतिथ्य सत्कार व सुंदर व्यवस्था के लिए राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया।

अंत में '**तेरे पावन चरणों में**' के सामूहिक गान व राम गुरु के जयकारों के साथ सभा विसर्जित हुई।

-राष्ट्रीय महामंत्री,
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ

अन्नदान

10 मार्च 2024। **'एक राष्ट्र-एक संघ-एक कार्य-एक स्वरूप'** के अनुरूप महत्तम महोत्सव के अंतर्गत सामाजिक सरोकारों की शृंखला में राष्ट्रीय स्तर पर अन्नदान का पावन कार्यक्रम संपन्न हुआ। इसमें जरूरतमंदों को अन्नदान दिया गया, जिससे 230 संघ/क्षेत्रों के 63092 लोग लाभान्वित हुए।

-राष्ट्रीय मंत्री, छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल

श्रुत भक्ति दिवस

12 मार्च 2024। परम पूज्य आचार्य श्री रामेश का 32वाँ युवाचार्य दिवस एवं श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. का 5वाँ उपाध्याय पदारोहण दिवस **'श्रुत भक्ति दिवस'** के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर अब तक प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार लगभग 695 उपवास एवं लगभग 916 रात्रि संवर संपन्न हुए। इसके अलावा अन्य प्रत्याख्यान व धर्माराधना भी संपन्न हुई।

क्र.	अंचल	अन्नदान		श्रुत भक्ति दिवस	
		क्षेत्र	लाभान्वित	उपवास	रात्रि संवर
1.	मेवाड़	40	3788	214	308
2.	बीकानेर-मारवाड़	19	3858	44	65
3.	जयपुर-ब्यावर	4	1260	30	81
4.	मध्य प्रदेश	44	10302	41	48
5.	छत्तीसगढ़-उड़ीसा	30	7656	130	159
6.	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश	9	8260	41	17
7.	तमिलनाडु	2	2150	15	0
8.	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.	10	9600	46	118
9.	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	25	2248	50	64
10.	बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक उड़ीसा	18	8266	44	41
11.	पूर्वोत्तर	26	3954	26	5
12.	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तर प्रदेश	3	1750	14	10
कुल		**230**	**63092**	**695**	**916**

"राग-द्वेष की ग्रंथियों को जीतने के लिए सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान एवं सम्यक् चारित्र की शुद्ध आराधना की आवश्यकता होती है तथा इसी आराधना से निर्ग्रंथ श्रमण संस्कृति की सुरक्षा की जा सकती है। जहाँ राग-द्वेष की ग्रंथियाँ रहें, वहाँ निर्ग्रंथ संस्कृति कैसे सुरक्षित रह सकती है और पनप सकती है? ग्रंथियाँ खुलेंगी, तभी तो निर्ग्रंथ अवस्था आ सकेंगी। ग्रंथियाँ खोलने और निर्ग्रंथ अवस्था को प्राप्त करने के लिए आत्मबल का विकास करना पड़ेगा और आत्मबल की सहायता से समाज में सैद्धांतिक, मानसिक, वाचिक और कायिक चारित्र की एकता स्थापित की जा सकेगी।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के नेश्रायरत सभी चारित्रात्माओं की विचरण सूची

दिनांक : 16-04-2024

1. मेवाड़ अंचल

क्र. स.	चारित्रात्माओं के नाम	ठाणा	विराजने का स्थान	सक्रिय व्यक्ति का नाम व नंबर	क्र. स.	चारित्रात्माओं के नाम	ठाणा	विराजने का स्थान	सक्रिय व्यक्ति का नाम व नंबर
1	**परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा.**	9	समता भवन, असावरा माता जी, आवरी माता, चित्तौड़गढ़ (राज.)	विनोद जी पटवा 9829924620 हीरालाल जी लोढ़ा 9414777424 महेश जी नाहटा 9406201351 7977370892	2	शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, भूपालसागर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	अमित जी बाफना 8440068485
3	शासन दीपक श्री हिमांशु मुनि जी म.सा.	6	नानेश-रामेश ध्यान केंद्र, गाँधी नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	बलवंत जी बाघमार 9414395990	4	शासन दीपक श्री गगन मुनि जी म.सा.	3	समता भवन, भदेसर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	कोमल जी रुंगलेचा 9414777428 अभय जी मोदी 9057533100
5	श्री निर्वाण मुनि जी म.सा.	2	रामलाल जी जाट का निवास, भीखावनिया, उदयपुर (राज.)	प्रकाश जी जारोली 9983932791	6	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (उदयपुर वाले)	5	अरिहंत कंस्ट्रक्शन (संजय जी डूंगरवाल), 395, आई-1 रोड, भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)	मुकेश जी पगारिया 9413286163 प्रकाश जी सुराणा 9414166014
7	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता श्री जी म.सा. (राजनांदगाँव वाले)	4	बाबुलाल जी कुमावत का निवास, जीतावल, चित्तौड़गढ़ (राज.)	बाबूलाल जी कुमावत 9799245525	8	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले)	3	समता साधना भवन, कानोड़, उदयपुर (राज.)	रमेश जी कुदाल 9414683309 तखतमल जी लसोड़ 9166663441
9	शासन दीपिका साध्वी श्री पुष्पलता श्री जी म.सा.	5	उदयसिंह जी भाटी का निवास, गंगागुढ़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	कोमल जी रुंगलेचा 9414777428 अभय जी मोदी 9057533100	10	शासन दीपिका साध्वी श्री निरंजना श्री जी म.सा.	14	नानेश-रामेश समता भवन, भदेसर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	कोमल जी रुंगलेचा 9414777428 अभय जी मोदी 9057533100
11	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा. (देशनोक वाले)	3	आदिनाथ भवन, कांचीपुरम्, भीलवाड़ा (राज.)	बलवंतसिंह जी रांका 9829178431 धनपत जी नाहर 9414262235 दीपक जी बेताला 9462595676	12	शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शना श्री जी म.सा.	4	महावीर भवन, रूंडेडा, उदयपुर (राज.)	राजमल जी जैन 9636590546
13	शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवर जी म.सा.	6	नवकार भवन, आवरी माता, असावरा माता जी, चित्तौड़गढ़ (राज.)	लोकेश जी लोढ़ा 7698526473	14	शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा.	3	नवकार भवन, आवरी माता, असावरा माता जी, चित्तौड़गढ़ (राज.)	लोकेश जी लोढ़ा 7698526473
15	शासन दीपिका साध्वी श्री मधुबाला श्री जी म.सा.	5	कोठारियों की हवेली, भड़भूजा घाटी, उदयपुर (राज.)	पारस जी डागा 9413300423 अर्जुन जी लोढ़ा 8949942495	16	शासन दीपिका साध्वी श्री अरूणा श्री जी म.सा.	3	समता भवन, कपासन, चित्तौड़गढ़ (राज.)	सुरेश जी दुग्गड़ 9413045379

17	शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा.	4	सत्यनारायण जी शर्मा का निवास, सांवलिया जी मंडफिया, चित्तौड़गढ़ (राज.)	सत्यनारायण जी शर्मा 9462777622	18	साध्वी श्री विरक्ता श्री जी म.सा.	3	नानेश–रामेश समता भवन, भदेसर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	कोमल जी रुंगलेचा 9414777428 अभय जी मोदी 9057533100
19	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा.	7	नवकार भवन, आवरी माता, असावरा माता जी चित्तौड़गढ़ (राज.)	लोकेश जी लोढ़ा 7698526473	20	शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा श्री जी म.सा.	3	महावीर भवन, सुरपुर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	हीरालाल जी जैन 8107442072
21	शासन दीपिका साध्वी श्री विकास श्री जी म.सा.	3	4, वृंदावन धाम, रोड नं. 2, न्यू भोपालपुरा, उदयपुर (राज.)	पारस जी डागा 9413300423 अर्जुन जी लोढ़ा 8949942495	22	शासन दीपिका साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा.	3	जैन स्थानक शांति भवन, राशमी, चित्तौड़गढ़ (राज.)	निर्मल कुमार जी जैन 9414397207
23	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा. (नगरी वाले)	3	समता भवन, कपासन, चित्तौड़गढ़ (राज.)	सुरेश जी दुग्गड़ 9413045379	24	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसौम्य श्री जी म.सा.	4	समता भवन, कंथारिया, चित्तौड़गढ़ (राज.)	रोशन जी जैन 9252091905
25	शासन दीपिका साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा.	4	पंचायत भवन, सियाखेड़ी, प्रतापगढ़ (राज.)	अक्षय जी दक 9587958595 धन सिंह जी 9950707858	26	शासन दीपिका साध्वी श्री पूर्वी श्री जी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, छापरी, भीलवाड़ा (राज.)	प्रवीण जी जैन 9252684335
27	साध्वी श्री चंद्रिका श्री जी म.सा.	18	सत्यनारायण जी इनाणी का निवास, गांधीनगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	बलवंत जी बाघमार 9414395990	28	शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा.	4	57, महेश जी बम्ब का निवास, पोलो ग्राउंड, उदयपुर (राज.)	महेश जी बम्ब 9785644273
29	साध्वी श्री काव्ययशा श्री जी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, रूपाहेली, भीलवाड़ा (राज.)	चंदनमल जी रांका 9413055671					
				2. बीकानेर–मारवाड़ अंचल					
1	शासन दीपक श्री रमेश मुनि जी म.सा.	4	बोथरा निवास, सुराणा मोहल्ला, करणी माता मंदिर के पास, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673	2	शासन दीपक श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा.	9	सेठिया कोटड़ी, मरोठी सेठिया मोहल्ला, ठंठेरा बाजार, बीकानेर (राज.)	राजेंद्र कुमार जी गोलछा 9571840310 मनोज जी पारख 9829131178
3	श्री चंद्रेश मुनि जी म.सा.	3	चौरड़िया समता साधना भवन, नागौर (राज.)	रामस्वरूप जी 9694398717	4	शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा.	3	जैन जवाहर भवन, जैन चौक, नोखा, बीकानेर (राज.)	मदनलाल जी लूणिया 9413968297 बाबूलाल जी कांकरिया 9460452789
5	शासन दीपक श्री चिन्मय मुनि जी म.सा.	2	घेवरराम जी चौधरी का निवास, संतों की ढाणी, नागौर (राज.)	राकेश जी जैन, मेड़ता सिटी 9414739671 जसराज जी बैद 9461361520	6	शासन दीपक श्री आदर्श मुनि जी म. सा.	2	पवन जी नारंग का निवास, महुआना बोदला, फाजिल्का (पंजाब)	पुनमचंद जी सुराणा 9351092281
7	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारस कँवर जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभा श्री जी म.सा.	12	समता साधना भवन, मालू कोटड़ी, रांगडी चौक, बीकानेर (राज.)	राजेन्द्र कुमार जी गोलछा 9571840310 मनोज जी पारख 9829131178	8	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा.	6	रामलाल जी बोथरा का निवास, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673

9	शासन दीपिका साध्वी श्री हर्षिला श्री जी म.सा.	3	समता भवन केंद्रीय कार्यालय, नोखा रोड गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673	10	शासन दीपिका साध्वी श्री मुक्तिप्रभा श्री जी म.सा.	5	जैन समाज भवन, चाबा, जोधपुर (राज.)	मूलचंद जी चौपड़ा 8742037804
11	शासन दीपिका साध्वी श्री वंदना श्री जी म.सा.	3	लाभचंद जी बोहरा का निवास, घरवाला झाब, पाली (राज.)	अशोक जी श्रीश्रीमाल 9414120829 ललित जी कूकड़ा 6375127390 9414610121	12	शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा.	4	पीरदान जी कांतिलाल जी पटवा का निवास, भीनासर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673
13	शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा श्री जी म.सा.	3	नथमल जी सकलेचा का निवास, गाँधी चौक, नोखा, बीकानेर (राज.)	सुनील जी सकलेचा 9214681297	14	शासन दीपिका साध्वी श्री वैभवप्रभा श्री जी म.सा.	4	पुखराज जी विश्नोई का निवास, मोतीसागर ढाणी, कापरड़ा, जोधपुर (राज.)	पुखराज जी विश्नोई 9849131564
15	शासन दीपिका साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा. (इंदौर वाले)	5	महिला भवन, मरोठी सेठिया मोहल्ला, बीकानेर (राज.)	राजेन्द्र कुमार जी गोलछा 9571840310 मनोज जी पारख 9829131178	16	शासन दीपिका साध्वी श्री पूजिता श्री जी म.सा.	4	तुलसीदास जी गांधी का निवास, खोबसर, बाड़मेर (राज.)	तुलसीदास जी गाँधी 9828924151
17	शासन दीपिका श्री प्रशांत श्री जी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, बुटाटी, नागौर (राज.)	मोहनलाल जी जैन 9785327373 बालचंद जी भंडारी 9928149820	18	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री प्रभात श्री जी म.सा.	4	चौरड़िया भवन, हनुवंत गार्डन के पास, पावटा, जोधपुर (राज.)	अरुण जी चौपड़ा 9828426000
19	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री मैनासुंदरी श्री जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री अभिप्सा श्री जी म.सा.	4	कोठारी भवन, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)	अरुण जी चौपड़ा 9828426000	20	शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा.	3	बोथरा कोटड़ी, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673
3. जयपुर-ब्यावर अंचल									
1	श्री नरेंद्र मुनि जी म.सा. पर्यायज्येष्ठ श्री अनंत मुनि जी म.सा. पर्यायज्येष्ठ श्री प्राणेश मुनि जी म.सा. शासन दीपक श्री छत्रांक मुनि जी म.सा.	6	समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नया बास, ब्यावर, अजमेर (राज.)	विनयचंद जी रांका 9414008974 उत्तमचंद जी लोढ़ा 9352772477	2	शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, पचाला, टोंक (राज.)	कैलाशचंद जी जैन 7689081806
3	शासन दीपक श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा.	3	प्राज्ञ भवन, बापूनगर, मोती डूंगरी, जनता स्टोर, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंद जी मूथा 9414054971 अभय जी नाहर 9829165897 मुकेश जी जारोली 9351149600	4	शासन दीपिका साध्वी श्री रोशनकँवर जी म.सा.	11	कांकरिया डेलान, नयाबास, ब्यावर, अजमेर (राज.)	विनयचंद जी रांका 9414008974 उत्तमचंद जी लोढ़ा 9352772477

5	शासन दीपिका साध्वी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म.सा.	6	रविंद्र कुमार जी भरत जी बैद का निवास, के–72, किरन विला, ग्रासफिल्ड क्लब, किसान मार्ग, श्यामनगर जयपुर (राज.)	ज्ञानचंद जी मूथा 9414054971 अभय जी नाहर 9829165897 मुकेश जी जारोली 9351149600	6	शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा.	4	राजेंद्र जी चौधरी का निवास, रघुनाथपुरा, कोटपुतली (राज.)	सोनू जी बंसल 9785600011 राजेंद्र जी चौधरी (जाट) 9462160001
7	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. (कानोड़ वाले)	3	साधना भवन, महावीर नगर, न्यू कृषि उपज मंडी रोड, सवाई माधोपुर (राज.)	पदम जी जैन 9667006756					
				4. मध्य प्रदेश अंचल					
1	शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा.	3	रामेश समता भवन, एल्कोलाइड कॉलोनी के सामने, नीमच (म.प्र.)	शौकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345	2	शासन दीपक श्री हेमंत मुनि जी म.सा.	2	समता भवन, गोपाल गौशाला कॉलोनी, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शन जी पिरोदिया 9425103697 दशरथ जी बाफना 9425103717
3	शासन दीपक श्री सुमित मुनि जी म.सा.	2	समता भवन, मंडी मार्ग, बदनावर, धार (म.प्र.)	अनिल जी लूणिया 9977477448	4	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री कस्तूर कँवर जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री चंदनबाला श्री जी म.सा. (पिपलियामंडी)	8	समता सदन, पुलिस कंट्रोल रूम के सामने, रोम टॉवर वाली गली नं. 2, नई आबादी, मंदसौर (म.प्र.)	बाबूलाल जी पितलिया 9425369562 नरेंद्र कुमार जी चौधरी 9425369547
5	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (महाराष्ट्र वाले)	3	166, शांतिलाल जी कांठेड का निवास, टीचर्स कॉलोनी, नीमच (म.प्र.)	शौकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345	6	शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा.	7	सागर नमकीन वालों का निवास, वेद व्यास कॉलोनी, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शन जी पिरोदिया 9425103697 दशरथ जी बाफना 9425103717
7	शासन दीपिका साध्वी श्री विमला कँवर जी म.सा.	17	आचार्य श्री हुक्मीचंद स्मृति भवन, जावद (म.प्र.)	अजीत जी चेलावत 9425106028 नरेंद्र जी गाँधी 9425108224	8	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रीकांता श्री जी म.सा.	15	समता भवन, यशवंत निवास रोड, इंदौर (म.प्र.)	तेजकुमार जी तातेड़ 9826033624 ललित जी दुग्गड़ 9827013200
9	शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा.	4	वर्धमान जैन स्थानक भवन, झार्डा, मंदसौर (म.प्र.)	नरेंद्र जी जैन 9174063177	10	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. (जावरा वाले)	3	अभिषेक जी कांठेड़ का निवास, जवाहर नगर, नीमच (म.प्र.)	शौकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345
11	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधा श्री जी म.सा.	4	समता सदन, घास बाजार, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शन जी पिरोदिया 9425103697 दशरथ जी बाफना 9425103717	12	शासन दीपिका साध्वी श्री वनिता श्री जी म.सा.	4	महेश जी सोनी का निवास, खलघाट, धार (म.प्र.)	राजेंद्र जी जैन 9893213405
13	शासन दीपिका साध्वी श्री साधना श्री जी म.सा.	4	अमृतलाल जी नलवाया का निवास, शिक्षक कॉलोनी, नीमच (म.प्र.)	शौकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345	14	शासन दीपिका साध्वी श्री सरोजबाला श्री जी म.सा.	5	समता भवन, गाँधी कॉलोनी, जावरा चौपाटी, रतलाम (म.प्र.)	अशोक जी छजलाणी 9424591173 मनीष जी पोखरना 9893482863

15	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. (छत्तीसगढ़ वाले)	3	राजमल जी पंवार का निवास, मंडी मार्ग, बदनावर, धार (म.प्र.)	अनिल जी लूणिया 9977477448	16	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमोद श्री जी म.सा.	4	महेंद्र जी ललवानी का निवास, साउथ तुकोगंज, सहज हॉस्पिटल के पास, इंदौर (म.प्र.)	रतनलाल जी खिंदावत 9425314469
17	शासन दीपिका साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा.	3	प्रदीप जी बोड़ावत का निवास, जवाहर नगर, नीमच (म.प्र.)	शौकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345	18	साध्वी श्री चारित्रप्रभा श्री जी म.सा.	3	समता भवन, नई आबादी, मंदसौर (म.प्र.)	मनीष जी पोरवाल 7000191781
19	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रुतशीला श्री जी म.सा.	3	रेस्ट हाऊस, गवासेन, बैतूल (म.प्र.)	राजकुमार जी बाफना 9425044366	20	शासन दीपिका साध्वी श्री समीक्षणा श्री जी म.सा.	3	सुधा वेयर हाउस, दोंदवाड़ा, खंडवा (म.प्र.)	भरत जी लाड़ 9826147764 सुमित जी जैन 9425939551
21	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धि श्री जी म.सा.	3	समता सदन, पुलिस कंट्रोल रूम के सामने, रोम टॉवर वाली गली नं. 2, नई आबादी, मंदसौर (म.प्र.)	बाबूलाल जी पितलिया 9425369562 नरेंद्र कुमार जी चौधरी 9425369547	22	शासन दीपिका साध्वी श्री सुऋद्धि श्री जी म.सा.	3	समता भवन, जवाहर नगर, नीमच (म.प्र.)	शौकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345
23	शासन दीपिका साध्वी श्री करिश्मा श्री जी म.सा.	3	डॉ. मनीष जी देवेंद्र जी का निवास, बोरगाँव बुजुर्ग, खंडवा (म.प्र.)	डॉ. मनीष जी देवेंद्र 9406813407	24	साध्वी श्री प्रियता श्री जी म.सा.	3	भगवतीलाल जी भटेवरा का निवास, महालक्ष्मी नगर, इंदौर (म.प्र.)	भगवतीलाल जी भटेवरा 9174247831
5. छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल									
1	शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा.	2	गुड्डू जी जैन का निवास, पंचपेड़ी, धमतरी (म.प्र.)	गुड्डू जी जैन 9685844067	2	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा.	2	जैन भवन, दल्लीराजहरा, बालोद (छ.ग.)	अंकित जी गुणधर 9755685556
3	शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा.	11	समता भवन, शिवपारा, दुर्ग (छ.ग.)	राजेंद्र जी श्रीश्रीमाल 9300330075 प्रदीप जी बोथरा 9424119340	4	शासन दीपिका साध्वी श्री रजतमणि श्री जी म.सा.	4	जैन भवन, परपोड़ी, बेमेतरा (छ.ग.)	आनंद जी जैन 9425565044
5	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री विवेकशीला श्री जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशप्रज्ञा श्री जी म.सा.	8	किशोर जी वैद का निवास, वर्धमान नगर, राजनांदगाँव (छ.ग.)	मदन जी पारख 9425240291 9770352550	6	शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा.	4	डॉ. नवीन जी बाफना का निवास, ऋषभ ग्रीन सिटी, दुर्ग (छ.ग.)	डॉ. नवीन जी बाफना 7389938944 9425240291
6. कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल									
1	शासन दीपक श्री विदेह मुनि जी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, मलकाजगिरी, हैदराबाद (तेलंगाना)	पारसमल जी गाँधी 9848272984	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रभा जी म.सा.	4	वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, हुबली (कर्ना.)	संजय जी कटारिया 9880538484 प्रकाश जी कटारिया 9448061288
3	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चना श्री जी म.सा.	4	जैन स्थानक भवन, चामराजपेठ, बेंगलुरु (कर्ना.)	शांतिलाल जी समदड़िया 9845297341	4	शासन दीपिका साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा.	4	मोनेश जी रूनवाल का निवास, अश्विन कॉलोनी, आदर्श नगर, जाहिराबाद, संगारेड्डी (तेलं.)	मोनेश जी रूनवाल 9397617007

7. तमिलनाडु अंचल									
1	शासन दीपिका साध्वी श्री दिव्यदेशना श्री जी म.सा.	3	एस.वी.एस. जैन भवन, No. 23 Cross Road, New Washarmenpet, Chennai (T.N.)	सज्जनराज जी छोरलिया 9941187154					
8. मुंबई-गुजरात अंचल									
1	शासन दीपक श्री निश्चल मुनि जी म.सा.	3	झालावाड़ जैन स्थानक भवन, चंदन नगर, नालासोपारा (ईस्ट), मुंबई (महा.)	दिनेश जी छाजेड़ 7738095237	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (मोड़ी वाले)	8	सोऽहं फ्लैट्स, महाराष्ट्र सोसायटी, अहमदाबाद (गुज.)	मोहन जी बोथरा 9825581229 विकास जी ललवानी 9327715892
3	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमनप्रभा श्री जी म.सा.	4	महावीर भवन, पलसाना, सूरत (गुज.)	भोपराज जी जारोली 9825130124					
9. महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल									
1	शासन दीपक श्री पद्म मुनि जी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, निफाड़, नासिक (महा.)	अशोक जी कर्नावट 9767924232	2	शासन दीपक श्री सुबाहु मुनि जी म.सा.	2	समता भवन, वाखरकर नगर, धुलिया (महा.)	रमेश जी सकलेचा 9822197130
3	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री सुबोधप्रभा श्री जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री साक्षी श्री जी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, शिंदखेड़ा, धुलिया (महा.)	कमलेश जी चौपड़ा 9981181008 मयूर जी ओस्तवाल 9422749966	4	साध्वी श्री भावना श्री जी म.सा.	4	वृद्धाश्रम परिसर, नलेवलगाँव फांटा, उस्मानाबाद (महा.)	पुनमचंद जी गुंदेचा 9890552179 अमोल जी तातेड़ 9420656104
5	शासन दीपिका साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा.	4	जैन धर्म स्थानक भवन, महावीर नगर, पारोला, जलगाँव (महा.)	सागरमल जी चौरड़िया 9423490397	6	शासन दीपिका साध्वी श्री संयति श्री जी म.सा.	3	राजू सेठ खंडेलवाल का निवास, कुर्हा, जलगाँव (महा.)	प्रसाद जी कुमट 9923058784
7	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमेरु श्री जी म.सा.	3	किशोर जी मलानी का निवास, कुरानखेड़ा, अकोला (महा.)	किशोर जी मालानी 9698289267					
10. बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक उड़ीसा अंचल									
1	शासन दीपिका साध्वी श्री समिया श्री जी म.सा.	4	समता भवन, विवेक विहार, हावड़ा (प.बं.)	विनोद जी डागा 9331018261	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीली श्री जी म.सा.	4	नवरत्नमल जी भूरा का निवास, कूचबिहार (प.बं.)	प्रवीण जी भूरा, कूचबिहार 7586067400
12. दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी अंचल									
1	शासन दीपिका साध्वी श्री समया श्री जी म.सा.	3	राजबहादुर सिंह जी का निवास, मालकपुर, बागपत (उ.प्र.)	सुरेंद्र जी गोयल 8446491551					

"यदि इस मन में तीन विशिष्ट गुणों का समावेश कर दिया जाए तो मन की गति स्वस्थ भी होगी और सदाशयपूर्ण भी बनेगी। अभय, अद्वेष एवं अखेद को जीवन की समस्त वृत्तियों तथा प्रवृत्तियों में बसा लो तो फिर यही मन संपूर्ण जीवन की सुख-शांति का महान् केंद्र बन जाएगा। समावेश इन तीनों गुणों का होना चाहिए। यदि एक भी गुण की कमी रहती है तो मन की व्यवस्थितता भी पूर्ण नहीं बन पाएगी और यदि केंद्र की दुर्दशा बनी रहेगी तो उस दुर्दशा से समूचा जीवन दुर्दशाग्रस्त ही बना रहेगा।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ

श्रमणोपासक के लिए कोरियर सुविधा प्रारंभ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक डाक द्वारा प्राप्त नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने की शिकायतें अनवरत प्राप्त हो रही हैं। इस समस्या के निवारण हेतु सभी सर्किल के पोस्ट मास्टर जनरल तक कार्यालय द्वारा शिकायतें दर्ज करवाई गईं, फिर भी डाक विभाग द्वारा उचित समाधान नहीं हो पा रहा है। इस असुविधा को ध्यान में रखते हुए संघ द्वारा पाठकों के हित में कोरियर सुविधा प्रारंभ कर दी गई है। जो भी सदस्य इस सुविधा का लाभ लेना चाहते हैं, वे **WhatsApp No. 9799061990** पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं अथवा QR Code स्कैन कर अपनी जानकारी Google Form द्वारा भरकर हमें भिजवाने का कष्ट करें।

-श्रमणोपासक टीम

सूचना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र '**श्रमणोपासक**' का प्रकाशन विगत 61 वर्षों से निरंतर हो रहा है। पाठकों के सहयोग व पूर्वाचार्यों के आशीर्वाद से हजारों की तादाद में प्रतियाँ पूरे भारतवर्ष में ज्ञानार्जन हेतु पाठकों के पास पहुँचाई जाती हैं। विभिन्न अवसरों पर दी जाने वाली भेंट श्रमणोपासक में कलर और ब्लैक एंड व्हाइट में प्रकाशित की जाती है। समय की आवश्यकता को देखते हुए भेंट दरों में कुछ वृद्धि की गई है, जिसकी जानकारी केंद्रीय कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं। 01 अप्रैल 2024 से प्रारंभ होने वाले आगामी वित्तीय वर्ष से नवीन दरें लागू होंगी। आप सभी पाठकों का सहयोग अपेक्षित है।

-श्रमणोपासक टीम

साधुमार्गी पब्लिकेशन से जुड़ें

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रवचन, चिंतन, कथा, कहानी एवं अन्य विविध विधाओं पर अब तक लगभग 340 से अधिक धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। इस धार्मिक साहित्य के अध्ययन, पठन एवं मनन से अवश्य ही आपका जीवन परिवर्तित होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। आप इन साहित्यों के लिए दिए गए QR Code, लिंक https://sadhumargi.com/sangh-activities/sahityikpravartiyan/ पर जाकर एवं मोबाइल नं. 8209090748 पर कॉल करके संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

-संयोजक, साधुमार्गी पब्लिकेशन

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

(महत्तम महोत्सव – मेरा महोत्सव)

भावों का शुद्धिकरण
आओ करें नित्य प्रतिक्रमण

1 प्रथम चरण
इच्छामि खमासमणो तक
10 अप्रैल से 15 मई

2 द्वितीय चरण
भाव वंदना तक
05 मई से 05 जून

3 तृतीय चरण
संपूर्ण प्रतिक्रमण
05 जून से 05 जुलाई

प्रतिक्रमण

प्रतियोगिता तीन चरण में रखी गई है।

हेल्पलाइन नंबर - 9752289969, 8149465041

|| जय महावीर ||

|| जय गुरु नाना || || जय गुरु राम ||

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

समता छात्रवृत्ति योजना

(कक्षा 1 से 12 तक)

आवेदन पत्र के लिए यहाँ स्कैन करें

– साधुमार्गी परिवार के विद्यार्थियों के लिए –

- जैन संस्कार पाठ्यक्रम के प्रमाण-पत्र की प्रति।
- साधुमार्गी ग्लोबल कार्ड बना हुआ होना अनिवार्य है।
- छात्रवृत्ति आवेदन के लिए गत कक्षा में विद्यार्थी ने कम से कम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों।
- छात्रवृत्ति की राशि विद्यार्थी के विद्यालय के खाते में प्रदान की जाएगी। इसलिए विद्यालय के बैंक खाते का विवरण अवश्य प्रदान करें।

संपर्क सूत्र : 6375633109

SCAN HERE

नोट : कृपया फॉर्म भरकर सिर्फ केंद्रीय कार्यालय के पते पर ही भेजें। किसी अन्य के हाथ में न दें।

पूर्ण विवरण, पात्रता की जानकारी एवं आवेदन पत्र श्रीसंघ व महिला समिति की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

// जय महावीर //

// जय गुरु नानक // // जय गुरु राम //

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

संगठन

सभी उपाध्यक्ष-मंत्री/स्थानीय अध्यक्ष-मंत्री से विनम्र निवेदन है कि **महिला समिति के सुदृढ़ीकरण की दिशा** में समय-समय पर मनोनयन प्रक्रिया अपनाई जानी आवश्यक है। अत: स्थानीय महिला मंडल में **नवीन अध्यक्ष-मंत्री की मनोनयन प्रक्रिया आमसभा** में शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण करवाकर **केंद्रीय कार्यालय (6375633109)** में सूचना भिजवाने का कष्ट करें।

नोट :-

1. **यदि पूर्व मनोनयन प्रक्रिया को 2 वर्ष से अधिक हो गए हैं तो नवीन मनोनयन की प्रक्रिया शीघ्रातिशीघ्र संपन्न करावें।**
2. **मनोनयन प्रक्रिया में नीचे दिए गए नियमों की पालना सुनिश्चित करावें।**
3. **45 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की महिलाएँ महिला मंडल में एवं जहाँ बहू मंडल गठित हो चुका है, वहाँ 45 वर्ष से कम आयु वर्ग की विवाहित महिलाएँ बहू मंडल में सम्मिलित होंगी।**

स्थानीय अध्यक्ष-मंत्री हेतु पात्रता

- आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त प्रत्येक आयाम को लक्षित परिणाम प्रदान करना।
- स्थानीय स्तर पर विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन का लक्ष्य रखें।
- व्यसनमुक्ति की शपथ अनिवार्य।
- संघ की रीति-नीति एवं धारणाओं पर सर्वतोभावेन समर्पित होना आवश्यक।
- उत्क्रांति फॉर्म भरा हुआ हो, उसकी एक फोटोकॉपी केंद्रीय कार्यालय को भिजवावें।
- संघ कार्य हेतु अपेक्षित समय देना।
- स्थानीय मंडल की प्रत्येक सदस्या पर वात्सल्य भाव रखना।
- स्थानीय संघ के सभी बड़े कार्यक्रमों में उपस्थिति का लक्ष्य रखना।
- कार्य को टीम के सहयोग से समय पर पूर्ण करने के लिए कटिबद्ध रहना।
- जहाँ 20 या उससे अधिक साधुमार्गी परिवार हों तो प्रतिक्रमण कंठस्थ करना अनिवार्य।
- संघ समर्पणा से ओत-प्रोत हमारे वचन सदैव समभावी एवं मृदु हों।

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत : श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

राम चमकते भानु समाना

अक्षय तृतीया

May 2024

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

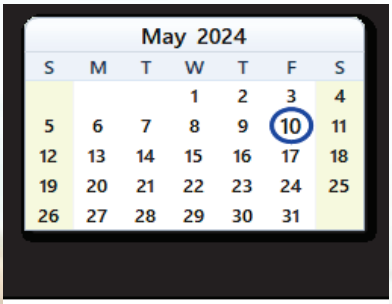

Friday, May 10th 2024

महत्तम महोत्सव मेरा महोत्सव

अक्षय तृतीया है पर्व महान्,
पारणा करते हैं तपस्वी धन्यवान।
3100 एकासन करें हम भी समर्पण,
भेंट यह गुरु चरणों में करें हम अर्पण।।

निवेदक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति
श्री अ. भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

साहित्य सदस्यों हेतु सूचना

सभी साहित्य सदस्यों को नवीन प्रकाशित साहित्य की 6 पुस्तकों (नो शॉर्टकट प्लीज!, श्रद्धा यस्य बलं तस्य, विदां वरः, वदतां वरः, आलाप, मीठे पदचाप) का सेट रजिस्टर्ड पोस्ट के माध्यम से बीकानेर कार्यालय द्वारा प्रेषित किया जा रहा है। यदि किसी सदस्य का पता परिवर्तित हुआ हो तो शीघ्र ही हमें अपना नया पता **WhatsApp No. 8209090748** पर भेजने का कष्ट करें।

-साधुमार्गी पब्लिकेशन

स्मृतिशेष सुश्राविका शांति देवी डागा

इस्लामपुर (प.बं.)। गंगाशहर निवासी इस्लामपुर प्रवासी सुश्राविका **शांति देवी डागा** धर्मसहायिका वरिष्ठ स्वाध्यायी सुरेंद्र कुमार जी डागा का 66 वर्ष की आयु में 16 अप्रैल 2024 को निधन हो गया। आपने संपूर्ण परिवार को संस्कारों की धरोहर से परिपूर्ण किया। स्वास्थ्य की अनुकूलता हो या प्रतिकूलता, आपने कभी भी अपने नियमों को भंग नहीं होने दिया। प्रात: एवं शाम दोनों समय सामायिक एवं त्याग-प्रत्याख्यान का क्रम अनवरत जारी रखा। संघ और चारित्रात्माओं की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहीं।

आपके सरल, सहज स्वभाव एवं उच्च धर्म भावना से संपूर्ण परिवार एक सूत्र में बँधा हुआ है। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति पूर्ण समर्पण भाव से धर्म-ध्यान में संलग्न रहती थीं। आप भीनासर निवासी सुश्रावक स्व. श्री रामलाल जी बुच्चा की सुपुत्री एवं स्व. श्री फूसराज जी बुच्चा की बहन थीं।

आपकी आत्मा शीघ्र ही अपने चरम लक्ष्य का वरण कर सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बने, यही प्रार्थना है। आप अपने पीछे तीन पुत्र-पुत्रवधुएँ, बेटी-दामाद, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्री आदि से भरा-पूरा शासन एवं गुरु समर्पित संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

श्रद्धावनत

शिखरचंद-पुष्पा देवी, विजयचंद-आशा देवी, वीरेंद्र कुमार-प्रभा देवी,
मनोज कुमार-सुनीता देवी (देवर-देवरानी), राजीव-सीमा, संजय-सुरभि,
संदीप-खुशबू (पुत्र-पुत्रवधू), सारिका-जितेंद्र जी बोथरा (पुत्री-दामाद), साक्षी, सारांश, पीयूष,
दृष्टि, दर्शिल (पौत्र-पौत्रियाँ), नित्या (दोहित्री) एवं समस्त डागा परिवार।

पीहर पक्ष : स्व. श्री रामलाल जी फूसराज जी बुच्चा
अतुल, आशीष, रोशन बुच्चा, भीनासर।

Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिश: वंदन

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI

सिपानी सेवा सदन - 1

सिपानी समूह ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा हस्ताक्षर अंकित किया है, जो सदियों तक स्मरण किया जाता रहेगा। समूह ने अपने प्रथम चरण में सिपानी सेवा सदन-1 - बंदापुरा विलेज मडिवाला ग्राम, मर्सुर पोस्ट, अनेकल तालूक, बेंगलूरु - 562106 में 12 वर्ष पूर्व जिस योजना को क्रियान्वित किया उसके अंतर्गत सदन की बहुमंजिला इमारत में 400 मरीजों एवं उनकी देखरेख करने वाले नर्स, कर्मचारी आदि की व्यवस्था रखी गई है।

सिपानी सेवा सदन - 2

सेवा के कदम आगे बढ़ाते हुए सिपानी समूह ने सिपानी सेवा सदन - 2 का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है। इस भवन में उपरोक्त के अतिरिक्त 500 मरीजों एवं उनके लिए आवश्यक डॉक्टर, नर्स कर्मचारी एवं एम्बुलेंस आदि की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

इसका उद्घाटन फरवरी 2025 से पहले होना संभावित है।

SIPANI

Sipani Seva Sadan-2
Address No. 149/1 & 150/1 Bandapura village, Madivala grama, Marsur post Anekal taluk, Bangalore 562106
Phone number +91 8431 888 000 & +91 9513 361 335

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) फोन : 0151-2270261

helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)
वाचनालय हेतु (केवल भारत में)	
वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 6375633109	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी। मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

@absjainsangh

www.facebook.com/HOSadhumargi

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं.: 0151-2270261